मैथिली आलेख सञ्चयन II

(2015-2022)

प्रा. रामावतार यादव



रामावतार यादवक 80अम जन्मदिनक शुभ अवसरपर प्रकाशित

मैथिली आलेख सञ्चयन II

(2015-2022)

प्रा. रामावतार यादव, पीएच.डी.

पूर्व उपकुलपति, पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय, नेपाल



अनुप्रास प्रकाशन

मधुबनी

अनुप्रास पेपरबैक्स
ISBN : 978-93-91371-17-3



मैथिली आलेख सञ्चयन II
(2015-2022)

पहिल संस्करण : 2022
मूल्य : ₹ 500/-

प्रकाशक : अनुप्रास प्रकाशन
कार्यालय : इन्द्र परिसर, लहेरियागंज,
मधुबनी, मिथिला (बिहार) 847 211
वेबसाइट : www.anuprasprakashan.com
ईमेल : info@anuprasprakashan.com
anuprasprakashan@gmail.com
मोबाइल : +91 8862977228

आवरण : अनुप्रास इंडिजाइन
थॉमसन प्रेस इंडिया लिमिटेड, नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित।

Ramawatar Yadav's
Collected Essays in Maithili
Published by : ANUPRAS PRAKASHAN,
First Edition : 2022
Price : ₹ 500/-

आमुख

मैथिली विकास कोष, जनकपुरधामद्वारा 2016 ई.मे प्रकाशित हमर पोथी *मैथिली आलेख सञ्चयन (1989-2015)*कैं मैथिलीक सुधी पाठकजन जाहि जिज्ञासा ओ उत्कण्ठासँ ग्रहण कएलैन्हि ताहिसँ हम अतीब प्रभावित भेलहुँ ओ हम भविष्यहुमे अपन अनुसन्धानात्मक अवदानसभ मैथिलीक माध्यमेँ लिखि प्रकाशित करबाक कार्यमे आओरो बेसी उत्साहित भेलहुँ, दृढ़प्रतिज्ञ भेलहुँ, उद्यत भेलहुँ। तकरहि परिणति अछि अनुप्रास प्रकाशन, मधुबनीसँ प्रकाशित हमर ई दोसर पोथी *मैथिली आलेख सञ्चयन II (2015-2022)*।

एहि कृतिमे प्रकाशित/अप्रकाशित कुल 9गोट आलेख संगृहीत अछि। ई आलेखसभ मैथिली भाषा-साहित्यक विविध महत्त्वपूर्ण पक्षक सूक्ष्म भाषावैज्ञानिक वर्णन-विश्लेषणसँ सम्बद्ध अछि। निस्सन्देह अधिकांश आलेख नेपाल राष्ट्रिय अभिलेखालय, काठमाण्डू ओ बृटिश लाइब्रेरी, लण्डनमे अनुरक्षित ओ अद्यतन अपठित, अशोधित, ओ अप्रकाशित हस्तलिखित अभिलेखसँ सम्बद्ध अछि। स्पष्टत: एहि अभिलेखीय सामग्रीसभद' आवश्यक अनुसन्धान-कार्य Alexander-von-Humboldt Foundation, Bonnक तत्वावधानमे सीनियर भिजिटिङ्ग रिसर्च फेलोरूपेँ जर्मनीक कील विश्वविद्यालयमे सम्पन्न कएल गेल अछि – ताहिलेल हम A-v-H Foundation, Bonnप्रति आभारी छी।

अनुप्रास प्रकाशन, मधुबनीक प्रबन्ध-निर्देशक श्री दीप नारायणजी धन्यवाद ओ बधाई दुहुक पात्र छथि। दीप नारायणजी जाहि लगन, उत्साह, ओ मनोयोगसँ एहि पोथीक टाइप-स्क्रिप्ट तैयार कएलैन्हि ओ कनेको आलस वा अबूह नहि मानि औनलाइन ग्याली प्रूफ रीडिङ्गकए पोथीकेँ यथाशक्य त्रुटिविहीन बनएबाक सुयत्न कएलैन्हि से वरेण्य अछि। हम हुनक प्रयत्नसँ तुष्ट छी।

रामावतार यादव
काठमाण्डू, नेपाल

अनुप्रासदिसिसँ

अनुप्रास प्रकाशन समूह अपन आरंभहिसँ पोथी प्रकाशनक क्षेत्रमे नव-नव आयाम जोड़बाकलेल प्रयत्नशील रहल अछि। पूर्वमे प्रकाशित एहि प्रकाशनक पोथीसभकेँ पाठक आ लेखकलोकनिक अपार सिनेह भेटल अछि।

एहि क्रममे प्रस्तुत अछि प्रसिद्ध भाषावैज्ञानिक **प्रा. रामावतार यादवक 80अम जन्मदिनक शुभ अवसरपर प्रकाशित *मैथिली आलेख सञ्चयन II*।** प्रस्तुत पोथीक प्रकाशन मैथिली भाषा-साहित्यक प्रतिष्ठामे एकटा नव अध्याय जोड़बाक मजगुत उद्यम सिद्ध होएत। अपन अनुसंधान कार्यद्वारा वैशिक स्तरपर मैथिलीकेँ प्रतिष्ठित कएनिहार डा. यादवक ई महत्त्वपूर्ण पोथी प्रकाशित करैत अनुप्रास प्रकाशन समूह गौरवक अनुभव क' रहल अछि।

अनुप्रासक उद्येश्य भाषा-साहित्यक श्रेष्ठताक वरण करब अछि। किछु महत्त्वपूर्ण साहित्यकेँ जनसुलभ करबामे अपनेलोकनिक सहयोग ओ परामर्शक अपेक्षा अछि। प्रस्तुत सञ्चयन अपनेलोकनिक हाथमे दैत अप्रतिम प्रसन्नताक अनुभूति भ' रहल अछि।

दीप नारायण

अनुक्रम

(*शिल्पी थिएटर*, बत्तीस पुतली, काठमाण्डूमे १४ दिसेम्बर २०१५क' आयोजित रमेश रञ्जनकृत *डोमकछ* नाटकक पुस्तक-विमोचन समारोहक अवसरपर प्रस्तुत अध्यक्षीय अभिभाषणपर आधारित)

नाट्य-विमर्श: रमेश रञ्जनकृत *डोमकछ* नाटकक सन्दर्भमे*

१. प्राक्कथन

रमेश रञ्जन एकगोट बहुप्रतिभाशाली एवम् बहुआयामिक व्यक्तित्व छथि: सशक्त कवि, माजल आख्यानकार, सफल नाट्यकर्मी/कलाकार, एवम् कुशल नाट्य-निर्देशक त' छथिए, सँगहि विद्यमानमे ओ एकगोट प्रखर एवम् उर्वर नाट्यकृतिकार भए नाट्य विधामे अपन अप्रतिम अवदानकहेतु प्रसिद्धि पर्यन्त पाबि चुकल छथि। ताहि हेतुएँ ओ साधुवाद ओ यशक अधिकारी छथि।

वर्तमानधरि, करीब दू-दू वर्षक अन्तरालमे, रमेश रञ्जनक कुल तीनिगोट नाट्यकृति प्रकाशमे आएल अछि: *मुर्दा* (२०१२ ई.), *डोमकछ* (२०१४ ई.), तथा *सखी* (२०१५ ई.)। एहि तीनहु नाटकक सफल प्रदर्शन/मञ्चन अनेकहु बेरि होएबाक खबरि सतत प्राप्त होइत आएल अछि। एहि मध्य *सखी* नाटकक काठमाण्डू-मञ्चन मात्र हमरा देखल अछि।

प्रस्तुत आलेखक प्रतिपाद्य विषय रमेश रञ्जनकृत *डोमकछ* नाट्यकृतिक समालोचनात्मक वर्णन-विश्लेषण कनेक बेकछाक' करब थिक।

२. नाटक आ हम

नाटक विधासँ हमर व्यक्तिगत सम्बन्ध पुरान अछि: बाल्यकालहिसँ नाटकक अभिनय-कार्यमे हमर घनीभूत संलग्नता छल। विद्यालयीय शिक्षा कालहिमे हिन्दी भाषाक जयशंकर

*अप्रकाशित

प्रसादसन प्रसिद्ध नाटककारक अति ग्रन्थिल संस्कृताम गद्यक वार्तालापीय सम्बाद पर्यन्त हमरालेल ततेक दुरूह नहि होइत छल। पछाति अङरेजी भाषा-साहित्यक अध्ययनक क्रमेँ नाट्यशास्त्रक विशेष अध्ययन कएल - ईशासँ तेसर/चारिम शताब्दी पूर्व रचित ग्रीक नाटककारसँलए विलियम शेक्सपियर, जौर्ज बर्नार्ड शौ होइत टी. एस. एलियट आदिसन विश्वविख्यात नाटककारलोकनि रचित प्रसिद्ध नाटकसभक विशद् अध्ययन-विश्लेषण कएल। ताबतधरि, तत्कालीन परिपाटी अनुरूप, हम प्रकाशित नाटकक पुस्तकक पाठ अध्ययनकक्षमे पढ़ल जाएवाला अन्य पुस्तकजकाँ पढ़ल, अर्थात् कहू जे "drama as a closet play" जकाँ पढ़ल। पछाति, विलायत ओ अमेरिका प्रवासकालमे उच्च अध्ययन-अनुसन्धानक क्रमेँ कार्डिफ, लण्डन ओ अन्य शहरस्थित प्रख्यात थिएटर हाउससभमे विलियम शेक्सपियर, जी. एम. सिन्ज, सिन ओ केसी, जौर्ज औजबर्न, ह्यारोल्ड पिण्टर, एडवर्ड औलबी, टोमस बेकेट आदि अनेकहु नाटककारक नाट्यकृतिक मञ्चन ओ सिनेमाकृत प्रदर्शनक अवलोकन पश्चात् ''थिएटर''क बहुल पक्षदिसि (अर्थात् निर्देशन, रंगमंच, दृश्य-परिवर्तन, ध्वनि ओ लाइट संयोजन, आदि) गम्भीर ध्यानाकर्षण भेल। एहना अवस्थिति रहितहुँ एहि खन *डोमकछ* नाटकक पाठगत वर्णन-विश्लेषण (textual analysis) प्रस्तुत कएल जाएत।

३. *डोमकछ* रचना प्रक्रिया

डोमकछ लोकनाट्यक रचना प्रक्रियामादे रमेश रञ्जन कुल १४ पृष्ठक 'प्रष्टिकरण' [sic] 'डोमकछ लेखन आ प्रदर्शन' शीर्षकक भूमिका (पृष्ठविहीन) अन्तर्गत करैत छथि। एहि कार्यमे ओ स्पष्टत: विलियम वड्र्सवर्थ, म्याथ्यु आरनोल्ड, जौर्ज बर्नार्ड शौ, टी. एस. एलियट प्रभृत्ति प्रसिद्ध कवि-नाटककार सदृश 'Preface', 'Essays' आदि शीर्षक अन्तर्गत बेस नम्हर भूमिकामे पाठकक सहयोगार्थ (?) अपन लेखकीय विचार ओ मान्यता प्रस्तुत करैत छथि। वस्तुत:, रमेश रञ्जनक सशक्त कथोपकथनमे प्रयुक्त अर्थगर्भित ओ औचित्यपूर्ण वाक्यांशहिक बलपर पाठकगण अपन धारणा दृढ़ कए सकैत छथि: ताहि हेतुएँ सुधी पाठकजनसँ हमर विनम्र आग्रह जे ओलोकनि हुनक भूमिकासँ कोनहुना कु/सुप्रभावित नहि होथि। आ तहिना, बहुलांश भाषिक/वर्तनी/प्रूफरीडिङगत त्रुटिसभ सेहो 'प्रकाशकीय' तथा 'डोमकछ लेखन आ प्रदर्शन' शीर्षकक भूमिकहिमे दृष्टिपथपर अबैत अछि (देखू ७)।

४. डोमकछ निरुक्त

एहि परिच्छेदमे मैथिली भाषाक लिखित भाषा-साहित्यमे 'डोम' शब्दक ओ ताहिसँ व्युत्पन्न 'डोमकछ' शब्दक पहिल प्रयोग आदिद' संक्षेपमे किछु चर्च होएत।

नवम-दशम शताब्दीदिसि सिद्ध कविलोकनि-विरचित अपभ्रंश कृति/मैथिली भाषाक प्राचीनतम तान्त्रिक गीतसङ्ग्रह *चर्यागीति*मे (जकरा बंगाली विद्वानलोकनि बंगाली भाषा कहि गीड़ि गेल) **गीत संख्या १० मे** (ओ अन्यत्रहु) **प्रथमत:** *डोम्बी* शब्द दृष्टिपथपर अबैत अछि: "ḍombi (female) ḍom (a low Hindu caste)" (Sen ed. 1977: 152; देखू Kvaerne 1977/2010 सेहो); तहिना अपभ्रंश वा मैथिली भाषाक चौदहम शताब्दीक प्रारम्भक प्राचीनतम उपलब्ध ओ प्रकाशित गौरवशाली गद्य-ग्रन्थ कविशेषराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुरकृत *वर्णरत्नाकर*क **फोलियो १० क** पृष्ठमे *डाँव* शब्द उपलब्ध अछि - जकरा ''मन्दजातीय'' जन कहि गणन कएल गेल अछि (Chatterji & Misra eds. 1940: 1)। डोम ओ डोमिन जातिसँ अति "मन्द" होइतहु दशम शताब्दीक प्राचीनतम उपलब्ध मैथिली साहित्यक तथाकथित 'शिष्ट' साहित्य अर्थात् रहस्यवादी *चर्यागीत*मे पर्यन्त एकर बहुल प्रयोग दृष्टिगत होइत अछि - ओना अपनेलोकनिकेँ ई जानि आश्चर्य होएत जे जातिसँ ब्राह्मण होइतहु सिमरौनगढ़क राजपण्डित कविशेषराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुरकृत *वर्णरत्नाकर*-सन प्राचीन गौरवशाली प्रकाशित ग्रन्थहुमे तथाकथित 'तीक्ष्ण जाति' अर्थात् ब्राह्मण जातिक उल्लेख सर्वथा अप्राप्य अछि।

तत्पश्चात् अठारहम शताब्दीक प्रसिद्ध कवि मनबोधकृत *हरिबंश* (जे पछाति *कृष्णजन्म* शीर्षक रूपेँ नव अवतार लेलक) अध्याय २मे *डोमकछ* शब्द हमरा **पहिलि बेरि** दृष्टिगत होइत अछि:

> क्यो घर अङ्गना केअओ दुआरि।
> कै ठाम डोमकछ नाच गोआरि। ४५ (Grierson (1882: 134)

आब ई देखी जे मैथिलीक प्रसिद्ध शब्दकोशकार ओ शब्द-सङ्ग्रहकर्तालोकनि *डोम* तथा *डोमकछ* शब्द कोना अर्थित/परिभाषित करैत छथि।

गोविन्द झा (१९९२: २१८) *मैथिली शब्दकोश*

डोम ''मनुष्यक एक जाति जे प्राचीन समयमे नर्तक होइत छल, सम्प्रति बाँसक वस्तु बनबैत अछि''

डोमकछ ''एक प्रकारक नाच''

मति नाथ मिश्र 'मतंग' (१९९८: २०२) *मैथिली शब्द कल्पद्रुम*

डोम-सं., ''सब सँ पैघ हरिजन। प्राचीन कालक निम्न जाति। चाण्डाल''

डोमकछ-सं., ''स्त्रीगणक परिहास पूर्वक खेलमय नृत्य विशेष''।

Govind Jha (ed. 1999: 270) *Kalyani Kosh: A Maithili-English Dictionary*

डोम ḍom [डोम्ब] **n** एक जाति जे पूर्वमे नाच-गानक व्यवसाय करैत छल।
a caste formerly living on dance and drama
***कछ n** एक नृत्य जे पूर्वमे डोम करैत छल। a folk dance

Grierson (1884: 7, Footnote 1)

डोमकछ, lit. 'a Dom's waist cloth' (काछ), hence 'after the manner of Doms.' In Bihar, on occasions of marriages, etc. it is customary to employ Doms and their women to dance, as a sign of joy. **काछ** is a particular way of tying up the waist-cloth so that movements may not be impeded. **डोमकछ** may be freely translated as 'tucking up their petticoats like Doms'.

स्पष्टत:, *डोमकछ* शब्दक आधुनिक अर्थमे प्रयोगक पूर्ण संकेत मति नाथ मिश्र 'मतंग' (१९९८) तथा ग्रिअर्सन (१८८४)मे संप्राप्त होइत अछि; ताहि हेतुएँ उपर प्रस्तुत उद्धरणसभक प्रस्तुति पश्चात् *डोमकछ* शब्दक अर्थक आओरो बेसी व्याख्या करबाक धृष्टता करब पिष्ठपेषणेटा सिद्ध होएत।

५. *डोमकछ* लोकनाट्य

एक वाक्यमे, समष्टिगत रूपैं, कहल जा सकैत अछि जे रमेश रञ्जनकृत *डोमकछ* वस्तुत: स्त्रीकलेल, स्त्रीद', एवम् स्त्रीद्वारा प्रस्तुत/मञ्चित लोकनाट्य अछि। जँ कतहु कोनहु परिवेश-विशेषमे पुरुष पात्रक प्रयोग भेलहु अछि तँ ओ गौण अछि। तात्त्विक रूपैं आ परम्परया स्त्री पात्रहि पुरुष पात्रक भूमिका निर्वाह करैत पाओल जाइत अछि।

डोमकछ लोकनाट्यक पात्रसभ पाश्चात्य नाट्यशास्त्रक परिभाषामे 'Flat' पात्र मात्र अछि: पात्रसभक व्यक्तित्वक क्रमिक विकास भए ओकरासभकैं 'Round' पात्र बनब आवश्यके नहि छैक एहि नाटकक कथावस्तुक परिवेशमे। प्रवीण ओ प्रयोगवादी नाटककार भेलाक कारणेँ रमेश रञ्जन पात्रसभकैं प्रयोजनपरक ओ कामचलाउ बनाकए पूर्वहिसँ विद्यमान एकगोट अति लोकप्रिय आ जनमनमे रहल-बसल लोकनृत्यकैं कायांतरण (Metamorphosis) कए एकगोट अकृत्रिम, सजीव, विशुद्ध मौलिक तथा मनोहारी लोकनाट्यक सृजन करबामे सक्षम सिद्ध होइत छथि। ई रमेश रञ्जनक विशिष्टता थिकैन्हि।

डोमकछ नाटक कुल एक दृश्यक अछि: एकरा एक-दृश्यीय वा एकाङ्की नाटक कहल जा सकैत अछि (ओना एहि नाटकमे 'अङ्क' शब्दक उल्लेख अप्राप्य अछि)।

डोमकछ प्रदर्शन-प्रधान नाटक अछि: विज्ञप्तत: कहल गेल अछि जे एहि नाटकक अनेकहु बेरक प्रदर्शन पश्चात् एकर लेख्य रूप स्थिर भेल बछि। तैं गम्भीर प्रश्न उठैत अछि: रमेश रञ्जनकृत *डोमकछ* नाट्यकृतिक वर्तमान लेख्य-रूप पुस्तकाकार रूपमे प्रकाशनमे अएबासँ पूर्व की बलैं/कोन विधिएँ ई नाटक प्रस्तुत कएल जाइत छल? की कथोपकथनक पाठक कोनहु पूर्व आजमाइशी वा अनंतिम हस्तलिखित पाण्डुलिपि वा टिपोट वा Prompter's Copy कोनहु निर्देशकलग (रमेश रञ्जनसहित) विद्यमान छल/अछि? जँ नहि, तँ पहिलि बेरि एहन सशक्त, सुलेख्य, ओ मनोहारी नाट्यकृतिक सुगठित पाठक संरचना करबाक अनुपम श्रेय रमेश रञ्जनकैं छैन्हि।

डोमकछ लोकनाट्यक सृजन कार्यसँ जुड़ल एकगोट आओरो प्रश्न मुह बाबि ठाढ़ भेल अछि - जकर प्रत्यक्ष सम्बन्ध एहि नाटकमे प्रयुक्त मनोरम गीतसभसँ अछि। स्पष्टत: एहि नाटकमे धिआपुता कालहिसँ सुनैत आएल पुरान गीतसभक सँगहि रमेश रञ्जनकृत किछु नव गीतक समावेश/समायोजन पर्यन्त भेल अछि। प्रश्न उठैत अछि: की रमेश रञ्जनकृत *डोमकछ* नाटक सुललित पुरान आ नव गीतमध्य मिलल-जुलल कथोपकथन घुसाड़ि एकगोट कृत्रिम, संकरित संस्करण त नहि? जवाब अछि: कथमपि नहि। वस्तुत: हमर ई दृढ़ धारणा अछि जे नाट्यकृतिकार रमेश रञ्जन नाटक विधाक पुरातन, पारम्परिक नाटकीय मान्यताकैं परित्यागि (ओना मध्यकालीन नेपालक नेवार नरेश-विरचित मध्य-मैथिली नाटकसभमे प्रयुक्त नाट्यशिल्पविधानद' देखू: Yadav ed. 2011), न्यूनतम मञ्च निर्देशसहित एकगोट एहन सफल एवम् नव कृतिक सृजन कएल अछि जाहि नाटकक उत्कर्षक मूल मन्त्र अछि ताहिमे प्रयुक्त कथोपकथनक भाषाक सरलता, सहजता, स्वाभाविकता, सशक्तता, एवम् सटीक संप्रेषणीयता।

अन्तत:, मूल प्रश्न अछि: एहन रेहल-खेहल, घसल-पीटल, आ तथाकथित ''निम्न/मन्द'' जातिसँ सम्बद्ध आख्यानवाला नाट्यकृतिमे एहन प्रखर नाटकीयता सम्पुटित करबामे रमेश रञ्जन कोना सफल होइत छथि? एकर दिग्दर्शन *डोमकछ* नाटकक प्रारम्भमे प्रयुक्त पहिल वाक्यमे निहित व्याकरणक साहाय्यसँ कएल जाएत - अति संक्षेपमे।

डोमकछ नाटकक आदि-वाक्य अछि:

मलिकाइन: आँइ यै, अहाँसभ निकलै जाइ छी किए ने ?

आब देखी जे उपर्युक्त एकहि वाक्यमे, विभिन्न भाँतिक अर्थ-निष्पत्तिहेतु, मैथिली व्याकरणक कतेकहु समाज-भाषावैज्ञानिक नियमसभक कुशल प्रयोग कोना ओ कोन फल विचारि भेल अछि: (१) प्रश्नवाचक चिह्न *किए* - जे सामान्यत: वाक्यांश/पदांशक आरम्भमे लगाओल जाइत अछि, मुदा एहि ठाम एकर पदक्रम भंग/परिवर्तन (Inversion) कए वाक्यान्तमे लगाओल गेल अछि; (२) ततबहि नहि, एहि प्रश्नवाचक चिह्नमे शीर्षकीकृत बलप्रदायक

Topicalizer वा Focus Marker -ने जोड़ि आओरो बेसी संबल (Force/Emphasis) प्रदान करबाक विधिक प्रयोग भेल अछि, (३) *आँइ* - जकर प्रयोग सामान्यत: आश्चर्य एवम् विस्मयादिबोधक भावक द्योतक अछि, (४) विस्मयबोधक *आँइ* निपात सम्बोधनसूचक निपात *-यै* संग मिलि विस्मय-मिश्रित शंका/उपशंका/अनहोनीसन अर्थ-भावक (Semantics) सफल एवम् सहज संप्रेषण करबामे समर्थ होइत अछि। अर्थात्, *आइँ यै* उच्चरित होइतहि ई अर्थित होइत अछि जे सम्भवत: केओ कोनो अधलाह काज कएने होथि, कोनहु अप्रिय दोषक भागी होथि, आदि आदि। जखनहि कोनहु स्त्री ककरहु *आँइ यै सुनैत छी जे ...* वाक्यांशसँ सम्बोधित करैत छथि तँ सुननिहारकैं तुरन्त बुझना जाइत छैन्हि जे जरूर बातमे कोनो गड़बड़ी अछि, खाहे ओ कोनहु प्रिय चौल पर्यन्त किएक ने होअए। पुरुष वा स्त्रीद्वारा स्त्रीकलेल तथा पुरुषद्वारा स्त्रीकलेल सम्बोधनार्थ प्रयुक्त *-यै* <*-अए/-अय*> निपातक विशद् भाषावैज्ञानिक वर्णन-विश्लेषणकहेतु देखू: (Yadav 1996: 278-280)। कथोपकथनक भाषाक एहन उत्कर्षतम स्वरूप परिलक्षित होइत अछि रमेश रञ्जनक डोमकछ नाटकक एहि आदि-वाक्यमे। तहिना अन्यत्रहु। शेष सुधी पाठकजन स्वयम् बुझि जएताह। एहि मादे आब एहिसँ बेसी कहब प्रयोजनीय नहि बुझना जाइत अछि।

६. मैथिली भाषा ओ मैथिल समाज: तादात्म्य

मैथिली भाषाक औपभाषिक ओ मानक स्वरूप एवम् मैथिली भाषिक-समुदायमे व्याप्त सामाजिक श्रृंखलामे विद्यमान तादात्म्यक विशद् वर्णन-विश्लेषणकहेतु देखू: (यादव १९९९)। *डोमकछ* नाटकक माध्यमैं रमेश रञ्जन मिथिलाक, विशेषत: मैथिल महिलाक, सर्वाङ्गीन चित्र प्रस्तुत करैत छथि।

डोमकछ नाटकक कथोपकथनसँ स्पष्ट रूपेण परिलक्षित होइत अछि जे, समग्र रूपैं, मैथिल महिला आओरोक/अन्चिन्हार लोकक सोझाँ प्रत्यक्षत: अति सङ्कोचशील एवम् स्मितभाषी प्रतीत होइतहु अन्तस्तरसँ एकान्तमे अर्थात् पुरुषक परोक्षमे, वा महिलासमाजमध्य अति साहसी ('Bold') एवम् यौनाङ्ग वा यौनक्रियाजन्य विषयवस्तु पर्यन्तकैं वर्जनीय (Taboo) नहि मानि बेहिचक खुल्लमखुल्ला ताहि मादे विचार-विनिमय करैत पाओल जाइत छथि। आधुनिक शब्दावलीमे कही त' ओलोकनि प्रशस्त रूपेण 'Liberated/Emancipated'-सन देखना जाइत छथि - ओना आइकाल्हि काठमाण्डूक थिएटर हौलसभमे Vagina Monologue-सन नाटकीय प्रदर्शन आम बात भ' चुकल अछि। एहि नाटकमे प्रयुक्त नितान्त निर्दोष वाक्यांश सेहो कामुकतासूचक भावक (Sexual Innuendos) उद्रेक करबामे सफल होइत अछि: किछु उदाहरण निचाँ देल गेल अछि:

१. ***साँझक कथीदन*** सेहो बड़ मीट्ठ होइ छै। पृ. २७
२. इह, आन बेरमे ***बड मोन लगलै*** ओ एखन सक्के नहि लगै छै कहाँदुन। पृ. ३४
३. कमाल के वैद छै, ***सौंसे जरोहके विमारी ठीक कु देतै। खाली घरमे जाए आब 'के बाट द' दही।*** पृ. ३
४. रे...रे... पाइ ढौवा कैला देबही वैद जीकैं। तौं सभ जखन घर आङनमे नइ रहबे तखन ***तोरासभक घर आङन घूमि-फिर अउथुन वैदजी,*** की नइ वैद जी ? पृ. ३९
५. ***तब की देबा से कह' न।*** पृ. ३९
६. ***थिराएल बकरी जिकाँ भगलै*** से नइँ कहै छिऐ। पृ. ५२
७. डोमिन: ***हमर मोन छ-पाँच नई होइ हए, अहींके होइ हए मलिकाइन।*** पृ. ५४
८. मलिकाइन: ***त' बलाउजक तरमे उधका कैला उठल छौ ?*** पृ. ५४
९. राजा: ***तू जे... जे... देबे... से... लेब।*** पृ. ५४

वस्तुत: सत्य तँ ई अछि जे वर्तमानधरि मैथिली भाषाक देब- आ *लेब-* क्रियाक Sexual Semantics/Pragmaticsक सर्वाङ्गीण भाषावैज्ञानिक वर्णन-विश्लेषण कोनहु मैथिली व्याकरण ग्रन्थमे अप्राप्य/अपूर्ण अछि।

एहि ठाम मैथिली भाषिक-समुदायमे व्याप्त अश्लील गारि पढ़ब, श्राप देब आदि चलनक बहुल ओ बेहिचक प्रयोग मादे Yadav (1996: 301)क विचार मननीय अछि:

> The sociology of calling names in the Maithil speech community needs to be investigated in greater depth.... At one end of the social spectrum, calling (abusive) names is practiced with unrivalled intensity, zeal, and violence as it were among the Brahmins, who are well-known to cross limits in the realm of verbal abuse. At the lowest end of the social spectrum, quarrelsome women of lower status indulge profusely in highly ingenious and intricate exchanges of obscene abuses at the slightest opportunity and do not hesitate to provide amazingly elaborate exposés of acts of copulation through their curses and abuses. Decency requires that passers-by simply close their ears with both hands and move hurriedly, or pretend not to have heard at all. The mission of the grammarian, however, is to describe the language as it is spoken, even if this entails a temporary suspension of the usual conventions of modesty.

तहिना, *डोमकछ* नाटकक कथावस्तुसँ मैथिली भाषिक-समुदायमे व्याप्त अत्यधिक मदिरा पान, तथाकथित उच्च वर्गद्वारा आर्थिक रूपसँ विपन्न महिलाक यौन शोषण आदि पक्षक प्रकटीकरण अति नाटकीय ढंगसँ कएल गेल अछि; एना लगैत अछि जेना उच्च वर्गक पुरुषद्वारा आर्थिक रूपसँ विपन्न महिलासँगे "to make a pass at them" वा कहु जे "to make out with them" ओकर नैसर्गिक अधिकार होइक। धन्य ओ सतवरती मैथिल डोमिन पात्र जे अति विषम परिस्थितिक बावजूदहु अपन पतिप्रतिक प्रेम तथा अपन पातिव्रतक (fidelity/loyalty) रक्षाकए समग्र मैथिल महिलाक मान उच्च रखने अछि।

७. वर्तनीगत/शैलीगत भाषिक त्रुटि

डोमकछ नाटकक मूल पाठसँ पूर्व प्रस्तुत 'प्रकाशकीय', '*डोमकछ* लेखन आ प्रकाशन', तथा 'प्रदर्शनमे सहभागी कलाकार' शीर्षक अन्तर्गत निम्न वर्तनीगत त्रुटिसभ देखना जाइत अछि:

> सम्वर्धन, प्रवर्धन, चूकल अछि
> प्रष्टिकरण, तँए, प्रदुर्भाव, उच्च जातीक, संख्याँ, सम्वन्धित, मालीक वर्गक, मीलन, आक्रमक,
> प्रतिविम्वन, नीजि, परिधी, प्रशन्नतापूर्वक, ध्वनी, प्रशिद्ध, शिद्ध
> चूकल छै, बहूतो, हरिवशुनी, आदि

आब *डोमकछ* नाटकक मूल पाठमध्य विद्यमान शैली/वर्तनीगत किछु त्रुटिसभदिसि सेहो ध्यान दी:

अछि: *मौन* पृ. २६	होएबाक चाहैत छल: *मोन*
अछि: *सहाँसभक* पृ. २८	होएबाक चाहैत छल: *अहाँसभक*
अछि: *अबि गेलै* पृ. ३१	होएबाक चाहैत छल: *आबि गेलै*
अछि: *आछि* पृ. ३१	होएबाक चाहैत छल: *अछि*
अछि: *बतिया* पृ. ३२	होएबाक चाहैत छल: *बगिया*, आदि आदि

डोमकछ नाटकक कथोपकथनक भाषा शैलीक एक सामान्य त्रुटि ई अछि जे गामघरक निम्नवर्गीय समाजक पात्रसभक मुहेँ पर्यन्त ब्राह्मण-भाषिकाक नासिक्ययुक्त अस्वाभाविक वाक्यांश बजाओल जाइत अछि - जे कनेक अनसोहाँत लगैत अछि; एहन उत्कृष्ट नाटकक 'Realism/Naturalism' पक्षकेँ कनेक क्षीण करैत प्रतीत होइत अछि। आस करी जे उपर्युक्त वर्तनी/शैली/प्रूफरीडिङ्गत सामान्य त्रुटिसभक निराकरण दोसर संस्करणमे कोनहु मैथिली-मर्मज्ञ ओ प्रवीण सम्पादकक साहाय्यमे भ' जाएत। ध्यातव्य जे उपर्युक्त वर्तनी/शैली/प्रूफरीडिङ्गत सामान्य त्रुटिसभक निराकरण होइतहि *डोमकछ* नाट्यकृति नेपाल आ भारतक विश्वविद्यालयीय स्नातक स्तरक पाठ्यपुस्तककेँ सर्वस्वीकार्य पर्यन्त भ' जएबामे समर्थ सिद्ध होएत। तहिना, सभसँ सशक्त मलिकाइन पात्रक आरेख कनेक धूमिल-सन बनैत अछि: *डोमकछ* नाटकक मञ्चन/प्रदर्शनक प्रचलित परिपाटीक परिदृश्यमे मलिकाइन पात्र यादव, साहु, मण्डल आदि कोनहु वर्गक होएबाक प्रशस्त सम्भावना रहितहु मलिकाइन पात्रक कथोपकथनक भाषा शैलीमेँ ई मात्र आभासित होइत अछि जेना ई पात्र ब्राह्मणी होथि। एहि मादे एतबहि।

८. उपसंहार

उपसंहारमे, *डोमकछ* नाटकक समग्र मूल्याङ्कन स्वरूप, निष्कर्षवत्, की कहल जा सकैत अछि: अपन अध्यक्षीय भाषणक समापनक क्रमेँ ताहि दिन हम जे कहल तकर सार तत्त्व निचाँ उद्धृत अछि:

> By witnessing innumerable performances of the *domakacha* folk-dance, Ramesh Ranjan tends to have absorbed the folk-dance, and given it a dramatic form and a rich verbal expression.

तहिना, हमर ई दृढ़ धारणा अछि जे *डोमकछ* नाट्यकृति डोमकछ लोकनृत्यक पुनरुज्जीवन 'Revival' आ पुनर्लेखन 'Reformation/Recreation' दुनू अछि - जे गौरवक वस्तु थिक।

रमेश रञ्जन अपन पहिल (Maiden) नाट्यकृति *मुर्दा* (२०१२)क एकगोट युवक पात्रक मुहेँ कहबबैत छथि:

> *रे लहि जेतौ तु एक्के फुके चानी* (पृ. ५३)।

रमेश रञ्जनकेँ अहू बेरि लहि गेलैन्हि: निस्सन्देह, रमेश रञ्जनकृत *डोमकछ* नाटक समकालीन मैथिली भाषाक उत्कृष्टतम नाटकक श्रेणीमे परिगणित होएबामे समर्थ भेल अछि।

अन्ततः, रमेश रञ्जनकृत *डोमकछ* नाट्यकृति न्यूनतम मञ्च निर्देशसहितक एकगोट एहन सुगठित, सुमञ्चनीय नाटक बनि आएल अछि जाहिमे No curtain rises; No curtain falls; मुदा निश्चिततः अछि ई 'Curtain Raiser'।

सन्दर्भ सूची

Chatterji, Suniti Kumar & Babua Misra (eds. 1940) *Varṇa-Ratnākara of Jyotirīśvara-Kaviśekharācārya Edited with English and Maithili Introductions and Index Verborum*, Bibliotheca Indica # 262, Calcutta: Royal Asiatic Society of Bengal.

Grierson, George Abraham 1882 "Man'bodh's Haribans," Part 1, Text, *Journal of Asiatic Society of Bengal 51:* 1, 120-150.

Grierson, George Abraham 1884 "Translation of Man'bodh's Haribans," *Journal of the Asiatic Society of Bengal:* 53: 1, 1-36.

Grierson, George Abraham 1884 "Index to Man'bodh's Haribans," *Journal of the Asiatic Society of Bengal:* 53: 1, 37-75.

Jha, Govind (ed. 1999) *Kalyani Kosh: A Maithili-English Dictionary*, Darbhanga: Maharajadhiraja Kameshwar Singh Kalyani Foundation, Kameshwar Singh Bihar Heritage Series -4.

Kvaerne, Per 1977/2010 *An Anthology of Buddhist Tantric Songs: A Study of the Caryāgīti*, Bangkok: Orchid Press. [Earlier published by Der Norske Videnskaps-Akademie in Oslo-Bergen-Tromsø in 1977]

Sen, Nilratan (ed, 1977) *Caryāgītikoṣa: Facsimile Edition*, Simla: Indian Institute of Advanced Study.

Yadav, Ramawatar 1996 *A Reference Grammar of Maithili* (Trends in Linguistics: Documentation 11), Berlin & New York: Mouton de Gruyter.

Yadav, Ramawatar (ed. 2011) *A Facsimile Edition of a Maithili Play: Bhūpatīndramalla's Parsurāmopākhyāna-nāṭaka*, Kathmandu: B P Koirala India-Nepal Foundation.

झा, गोविन्द १९९२ *मैथिली शब्दकोश-१*, पटना: मैथिली अकादमी।

मिश्र 'मतंग', मति नाथ १९९८ *मैथिली शब्द कल्पद्रुम*, जमुथरि-झंझारपुर-मधुबनी: मिश्र बन्धु।

रञ्जन, रमेश वि.सं. २०६९/२०१२ ई. *मुर्दा*, जनकपुरधाम: मैथिली विकास कोष।

रञ्जन, रमेश वि.सं. २०७१/२०१४ ई. *डोमकछ*, जनकपुरधाम: लोक सञ्चार।

रञ्जन, रमेश वि.सं. २०७२/२०१५ ई. *सखी*, मे: *आङन* (नेपाल राजकीय प्रज्ञा/प्रतिष्ठान मैथिली पत्रिका), ७: ७, ८६-१०५।

यादव, रामावतार (१९९९) ''मैथिलीक भाषिक वैविध्य: औपभाषिक ओ मानक स्वरूप,'' *जिज्ञासा* (राँटी-मधुबनी) ४: ६, ७३-८९। यादव (२०१६)मे सेहो।

यादव, रामावतार (२०१६) *मैथिली आलेख सञ्चयन (१९८९-२०१५)*, जनकपुरधाम: मैथिली विकास कोष।

[*मैथिली विकास कोषद्वारा जनकपुरधाममे आयोजित* **जनकपुर साहित्य-कला उत्सव-२०७३**मे अग्हन २६, २०७३ तदनुसार दिसम्बर ११, २०१६क' प्रस्तुत आमन्त्रित अतिथि व्याख्यानक परिवर्द्धित संस्करण]

नेपालक भाषा नीति आ मैथिली*

१. सम्बोधन

जनकपुर साहित्य-कला उत्सव-२०७३क आदरणीय दूरदर्शी आयोजकलोकनि, — विशेषत: *मैथिली विकास कोष*क अध्यक्ष एवम् कार्यकारी पदाधिकारीलोकनि, *नेपालक भाषा नीति आ मैथिली* शीर्षकक एहि सत्रक समादरणीय वक्तालोकनि, वरिष्ठ विद्धज्जन, आ महिला तथा सज्जनवृन्द !

२. प्राक्कथन

नेपालक, आ कहू जे आनहु देशक, भाषा नीति आ विशेषत: भाषा योजना निर्माण-कार्यमे शिक्षा मन्त्रालयक अहम् भूमिका स्वत:सिद्ध अछि; ताहि हेतुएँ एहि **जनकपुर साहित्य-कला उत्सव-समारोह**मे एकगोट पूर्व शिक्षा मन्त्रीक सहभागिता स्पष्टत: सार्थक, श्रेयस्कर, एवम् सराहनीय त' अछिए आ प्रेरणादायी सेहो। ओना अत्यन्त विस्मादक गप जे हालहि नेपालक राष्ट्रभाषा तथा सरकारी कामकाजक भाषा एवम् देशभरिक तमाम अनेपालीभाषी बालबालिकाकेँ पर्यन्त अनिवार्यत: शिक्षाक माध्यमरूपेँ पढ़ाएलजाएवाला तथा हमर-अहाँक विकास-क्रमक ऊर्ध्व गतिकेँ प्रभावित वा कहू जे कखनहुकाल कुप्रभावित करएवाला नेपाली भाषाक कोनहु अपन स्वतंत्र लिपि नहि भेलासन्ताँ एहि भाषाद्वारा प्रयुक्त/अङ्गीकृत एवम् उधार-पैंच लेल-गेल संस्कृत भाषाक देवनागरी लिपिक वर्णविन्यासकेँ एकटा "टिप्पणी" मात्र "सदर"कए अति विद्रूप बनएबाक श्रेय एकगोट पूर्व शिक्षा मन्त्रीकेँ सम्प्राप्त होएबाक खबरि अपनेलोकनिकेँ सर्वविदित अछिए। प्रसन्नताक गप जे माननीय मन्त्री महोदय चोट्टहि अपन दोष स्वीकारकए वा कहू जे खास प्रकारक

* *घर-बाहर* (पटना, भारत) 16: 60, 2017, पृ. 7-11मे प्रकाशित।

भाषामे "आत्मालोचना"कए एवम् यथोचित क्षमा याचनाकए अपन महानताक परिचय द' चुकल छथि। **आसा राखी जे नेपाली भाषाक काल्हुक निर्धारित स्वरूप ५५.४ प्रतिशत अनेपालीभाषी नेपाली नागरिकलोकनिकलेल पर्यन्त शिक्षण-मैत्री एवम् विकास-मैत्री होएत।**

वस्तुतः आजुक एहि सत्रक समीचीन शीर्षक होएबाक चाहैत छल: **नेपालक भाषा नीति तथा योजना आ मैथिली**। आङ्ग्ल भाषाक माध्यमेँ अन्तर्राष्ट्रिय जर्नलसभमे एहि विषय-वस्तुकेँ Language Policy and Planning (LPP) कहि एकर विशद् वर्णन-विश्लेषण भेल अछि — जे अपनेलोकनिकेँ सम्भवतः ज्ञात अछिए। एहिमादे हम आगाँ सविस्तार वर्णन करब।

भाषा-योजना विषयप्रति हमर रुचि नव नहि अछि। अर्थात् बारह वर्षधरि तत्कालीन नेपालक श्री ५क सरकारक शिक्षा मन्त्रालयक सह सचिव पदपर आसीन भए एवम् दूबेरि नेपाल राष्ट्रिय शिक्षा आयोगक सदस्य ओ सदस्य सचिव पर्यन्त भए देशक शिक्षा नीति तथा योजना, शैक्षिक व्यवस्थापन, पाठ्यक्रम निर्माण, पाठ्यपुस्तक लेखन, मूल्याङ्कन, शिक्षक तथा व्यवस्थापक तालीम आदि विविध विषय-वस्तु द' आधिकारिक निर्णय लेबासँ पूर्वहि हम भाषा-योजना विषयक वैज्ञानिक अध्ययन क' चुकल छलहुँ। सत्य तँ ई अछि जे विश्व-प्रसिद्ध फुलब्राइट छात्रवृत्ति अन्तर्गत १९७४-१९७९धरि संयुक्त राज्य अमेरिकाक क्यान्सस विश्वविद्यालयमे सैद्धान्तिक भाषाविज्ञानमे, विशेषतः ध्वनिशास्त्रमे, विद्यावारिधि उपाधिकलेल अध्ययनक क्रमेँ हम "Language Planning" नामक एकगोट उच्च-स्तरीय Seminar Courseक अध्ययन कए Linguistic Society of America Annual Summer Meeting, Honolulu, Hawaii, USA, June 1977 मे "Language, Linguistics and Politics: Some Implications for Language Policy in Nepal" शीर्षकक आलेखक वाचन कएल — जाहि आलेखक Abstract तँ Linguistic Society of America Annual Summer Meeting, Honolulu, Hawaii, USA, June 1977क वार्षिक पत्रिकामे प्रकाशित भेल मुदा नेपालक तत्कालीन राजनीतिक परिपेक्षमे विवेच्य विषयवस्तुक प्रकृति अति संवेदनशील होएबाक कारणेँ ओ आलेख अद्यावधि प्रकाशित नहि कएल गेल। विशेष कारण अपनेसभसन सुधीजन सहजहि बुझि सकैत छी।

३. नेपालक भाषा नीति एवम् योजना

जँ नेपाल देशक कोनहु भाषा नीति अछि तँ ओ ई जे एकर कोनहु भाषा नीति नहि अछि। तखन एहि मादे अनेकहु विज्ञप्ति/वक्तव्य यत्रतत्र — विशेषतः नेपालक इतिहासक विभिन्न कालखण्ड, नेपालक संविधान, शिक्षा मन्त्रालयक राष्ट्रिय शिक्षा आयोगक प्रतिवेदन, ओ सर्वोच्च अदालत एवम् संचार मन्त्रालयक निर्णय आदि — अवश्य उपलब्ध अछि ओ ताही विज्ञप्ति/वक्तव्यसभक परिपेक्षमे एहि देशक भाषा नीतिक आधारस्तम्भ स्थापित भेल अछि - जकर चर्चा निचाँ संक्षेपमे कएल जाएत।

राणा शासन काल (१८४६-१९५१ ई.)

नेपालक भाषा नीति एवम् योजना एहि देशक शिक्षा पद्धति तथा शिक्षा नीति, अर्थात् शिक्षामे-भाषा नीति तथा कार्यक्रमसँ असम्पृक्त रूपेँ जुटल अछि। राणा शासन कालमे (१८४६-१९५१ ई.) जंगबहादुरक विलायत यात्रा पश्चात् शासकवर्गक बालबच्चाकेँ प्राथमिक शिक्षा प्रदान करबाकहेतु नेपालक पहिल प्राथमिक विद्यालय दुइगोट विलायती आ किछु बंगाली शिक्षकसहित हुनक निजी आवासक्षेत्रमे १८५३ ई.मे खुजल; इएह विद्यालय पछाति आन-आन दरबारसभमे, अर्थात् थापाथली दरबार, चारबुर्जा दरबार, सेतो दरबार, एवम् नारायणहिटी दरबारमे स्थानान्तरभए दरबार स्कूलक नामेँ प्रसिद्धि पओलक। नेपालमे आधुनिक शिक्षाक प्रारम्भ एतहिसँ मानल जाइत अछि। ताहि कालक प्रसिद्ध शिक्षकलोकनि छलाह: १. वासुदेव भट्टराई २. पार्थ मणि आ. दि. ३. बोध विक्रम अधिकारी ४. रुद्र राज पाण्डेय ५. तीर्थ प्रसाद प्रधान ६. देवी प्रसाद रिमाल ७. तुलसी प्रसाद डुङ्गेल तथा ८. भैरव प्रसाद प्रधान। ई विद्यालय भारतक कलकत्ता विश्वविद्यालयसँ आवद्ध छल तथा एहि विद्यालयमे राणा आ दरबारियाक बच्चासभ मात्र प्रवेश पबैत छल। १९२९ ई.मे अपन स्वतंत्र परीक्षा केन्द्रक स्थापनाधरि एहि विद्यालयक विद्यार्थीलोकनि कलकत्तेमे परीक्षा दैत छलाह आ विद्यालयक **शिक्षाक एवम् परीक्षाक माध्यम अङरेजी छल, नेपाली नहि।** स्मरणीय जे १८७६ ई.मे ई विद्यालय उच्च वर्गीय सरकारी कर्मचारीक बालबच्चासभकेँ पहिलि बेरि प्रवेश देलक आ तहिना १८८५ ई.मे (कतहु-कतहु १९१०ई. सेहो कहल गेल अछि) मात्र ई विद्यालय आम नेपालीक बालबच्चाकलेल उपलब्ध भ' सकल। पछाति, चन्द्र शमशेरक १९०८ ई.मे विलायतक यात्राकालमे आ १९११ ई.मे दिल्लीमे विलायतक राजा जौर्ज पाँचमसँ भेँटबाकाल तराईक जङ्गलमे शिकारक आमन्त्रण देबाककालमे ओ पुनः हुनक नेपाल आगमनकालमे बारम्बार नेपालक शिक्षाक अवस्थाद' प्रश्न कएला पश्चात् बुझू जे आजीज भ'क' चन्द्र शमशेर १९१८ ई.मे कुल छओगोट विद्यार्थीसहित पहिल पोष्टसेकेण्डरी संस्था अर्थात् त्रिचन्द्र आर्टस कौलेजक स्थापना कएलैन्हि — जाहिमे तीनिगोट प्राचीन भाषा, दर्शनशास्त्र, गणित ओ इतिहासक अध्यापन प्रारम्भ भेल। ई संस्था सेहो कलकत्ते विश्वविद्यालयसँ आवद्ध छल ओ पठनपाठनक माध्यम अङरेजीए छल।

सारांशमे, राणा शासकसभ देशमे शिक्षाक व्यापक विस्तारदिसि अति उदासीन छलाह। English-onlyक हिमायती तथा पृष्ठपोषक होएबाक कारणेँ ओलोकनि Language-restrictionismक अनुयायी छलाह। एकगोट विदेशी शोधकर्ताक सम्मति जे नेपालक भाषा नीतिक पहिल उद्घोष १९०५ ई.मे घोषणा कएल गेल एकगोट विज्ञप्तिसँ प्रारम्भ होइत अछि जे कहैत अछि जे मात्र नेपाली भाषाक माध्यमेँ लिखल गेल दस्तावेज कचहरीमे कानूनी रूपेँ जायज होएत (Eagle 1909)। मुदा एकगोट आन विदेशी शोधकर्ताक सम्मति जे एहन कोनहु प्रकाशित दस्तावेज अद्यावधि उपलब्ध नहि अछि (Hutt 1988)। अन्ततः एहि कालावधिद' १९५८ ई.मे लिखल प्रोफेसर ह्यू बी वुड महोदयक निम्न निष्कर्ष अत्यन्त मननीय अछि:

Prior to 1951, education in Nepal was practically nonexistent. There were six high schools, four of which were in the central Kathmandu valley. There was one small college in the capital. It is estimated that there may have been about 100 primary schools, but many of these were little more than tutoring classes. Education was discouraged, even prohibited except for sons of the government officials. (Hugh B. Wood 1958: 429)

पञ्चायती व्यवस्था (१९५०-१९९० ई.)

ई बात आब सर्वविदित अछि जे एहि कालावधिमे सांस्कृतिक एकीकरणक मूल मन्त्र छल: *एक भाषा, एक भेष, एक धर्म, एक देश* — जे आब अति विवादास्पद सिद्ध भ' चुकल अछि। वस्तुत: एहि कालावधिक शिक्षा नीति ओ शैक्षिक व्यवस्थापन सरदार रुद्र राज पाण्डेय, केशर बहादुर केसी, तथा डा. ह्यू बी वुडद्वारा सम्पादित ओ १९५६ ई.मे तत्कालीन नेपाल सरकारकेँ प्रस्तुत *Education in Nepal: Report on the Nepal National Education Planning Commission* (NNEPC) पर पूर्णरूपेण आधारित अछि। अत्यन्त आश्चर्य ओ विस्मादक गप जे नेपाली शोधकर्तालोकनि पाण्डेय, केसी प्रभृति कुल ४७ व्यक्तिकेँ पूर्ण रूपेण माफीदए मात्र ह्यू बी वुडकेँ — जे सरकारक शिक्षा सल्लाहकार सेहो छलाह — समस्त दोषक भागी बनबैत छथि। आब Nepali-only द' आ कहु जे तमाम नेपालीकेँ एकभाषी बनएबाकहेतु एहि प्रतिवेदनक किछ मुख्य सिफारिशसभदिसि ध्यान दी:

> The medium of instruction should be the national language in primary, middle, and higher educational institutions, because any language which cannot be made lingua franca and which does not serve legal proceedings in court should not find a place. (NNEPC, p. 53)

> Local dialects and tongues, other than standard Nepali, should be vanished from the school and playground as early as possible in the life of the child. (NNEPC, p. 92)

> If the younger generation is taught to use Nepali as the basic language, then other languages will gradually disappear, and greater national strength and unity will result. (NNEPC, p. 93)

कतेकहु नेपाली अनुसन्धातासभ (देखू Awasthi 2011) ह्यू बी वुडक प्रतिवेदनकेँ East India Companyक शिक्षा सल्लाहकार Lord Thomas Babington Macaulay's Minute of 1835 सँ प्रभावित भेल बतौलन्हि अछि, अर्थात् जहिना मकौले महोदय लाखहु शिक्षित भारतीयकेँ "a class of persons Indian in blood and colour but English in taste, in opinions, in morals and in intellect" बनबए चाहैत छलाह ताही भाँतिएँ वुड महोदय सेहो तमाम अनेपालीभाषीकेँ पर्यन्त मात्र नेपालीभाषी बनबए चाहैत छलाह। ओना ध्यातव्य जे वुड महोदय ताहि प्रतिवेदनमे अमेरिकी शिक्षा पद्धतिमे English-only अति सफल होएबाक कारणेँ एहन सिफारिश कएलैन्हि तकर स्पष्ट उल्लेख कएल अछि। ओना निरपेक्ष भावेँ कही त' NNEPC प्रतिवेदनक Nepali-only सिद्धान्तकेँ सांस्कृतिक एकीकरणोन्मुख बहुमतवादी विचारक दस्तावेज कहि सकैत छी। **ई प्रतिवेदन नेपाली-इतर भाषासभकेँ नेपाल राष्ट्रक अमूल्य धरोहर** (Language-as-Resource) **नहि मानि एकगोट समस्या अर्थात्** (Language-as-Problem) **बूझि अल्पमतक भाषिक अधिकारकेँ** (Language-as-Right) **न्यून प्राक्कलन करबाक दोषक भागी अछि।**

१९९० ई. पछातिक शिक्षा नीति

पञ्चायती व्यवस्थाक अवसान पश्चात् आएल *नेपालको संविधान २०४७/१९९०* मे संवैधानिक स्तरपर एकगोट नव भाषा नीतिक उद्घोष भेल जाहिमे पहिलि बेरि नेपाली भाषाक अतिरिक्त आनहु भाषासभकेँ एहि देशक आधिकारिक अङ्ग मानल गेल:

> (1) The Nepali language in the Devanagari script is the language of the nation of Nepal. The Nepali language shall be the official language.
> (2) All the languages spoken as the mother tongue in the various parts of Nepal are the national languages of Nepal. (His Majesty's Government of Nepal, 1990)

ततबहि नहि, नागरिकक सांस्कृतिक एवम् शैक्षिक अधिकार अन्तर्गत धारा १८.१ ओ १८.२ मे कहल गेल जे:

> (18. 1) Each community residing in the Kingdom of Nepal shall have the right to preserve and promote its language, script, and culture.
> (18. 2) Each community shall have the right to operate schools up to the primary level in its own mother tongue for imparting education to its children. (His Majesty's Government of Nepal, 1990)

स्पष्टतः *नेपालको संविधान २०४७/१९९०*मे पहिलि बेरि शिक्षामे-भाषा नीतिक उद्घोष भेल। इएह कारण थिक जे नेपाल सरकारक शिक्षा मन्त्रालयक पाठ्यक्रम विकास केन्द्रद्वारा नेपाली-इतर मैथिली लगायत अन्य कतेकहु भाषामे पाठ्यपुस्तकक निर्माण कार्यक श्रीगणेश भए तकर सफल कार्यान्वयण समेत भेल। स्मरणीय जे तत्कालीन श्री ५को सरकारक शिक्षा मन्त्रालयक पाठ्यक्रम विकास केन्द्रक महानिर्देशक होएबाक काल हमरहि निर्णय-आदेशसँ धीरेन्द्र प्रेमर्षिसन सुयोग्य व्यक्तिक सत्प्रयासँ मैथिली भाषाक १ सँ ५ कक्षाधरिक स्तरीय पाठ्यपुस्तकक लेखन-प्रकाशन कार्य सुसम्पन्न भेल। मुदा इहो कार्यक्रम सन्तोषप्रद रूपैं नहि चलि सकल।

सत्रह वर्ष पश्चात् आएल *नेपालको अन्तरिम संविधान २०६४/२००७*मे देशक भाषा नीतिद' कोनहु उल्लेख्य परिवर्तन नहि भेल।

राष्ट्रिय भाषा नीति सुझाव आयोग २०५०/१९९४

तिल बिकम नेम्बाङ्गक संयोजकत्वमे गठित ई आयोग नेपालक भाषिक सर्वेक्षण, संकटापन्न भाषासभक संरक्षण आदि विभिन्न महत्वपूर्ण सुझावमध्य शिक्षाक माध्यममादे एकगोट निम्न उल्लिखित सुझाव सेहो देलक:

> 25. It would be appropriate to categorize the schools into three types at the primary level in terms of the medium of instruction.
> (a) Mother tongue primary school,
> (b) Bilingual primary school,
> (c) National language primary school (p. 38)

नेपालक संविधान २०७२/२०१५

नेपालको संविधान २०७२/२०१५मे भाषा एवम् संस्कृतिगत विषयकँ कुल सातगोट धारामे सुनबामे अति कर्णप्रियरूपैं समाविष्ट कएल गेल अछि जे निचाँ उद्धृत अछि:

६. राष्ट्रभाषा: नेपालमा बोलिने सबै मातृभाषाहरू राष्ट्रभाषा हुन्।

७. सरकारी कामकाजको भाषा: (१) देवनागरी लिपिमा लेखिने नेपाली भाषा नेपालको सरकारी कामकाजको भाषा हुनेछ।

(२) नेपाली भाषाका अतिरिक्त प्रदेशले आफ्नो प्रदेशभित्र बहुसंख्यक जनताले बोल्ने एक वा एकभन्दा बढी अन्य राष्ट्रभाषालाई प्रदेश कानून बमोजिम प्रदेशको सरकारी कामकाजको भाषा निर्धारण गर्न सक्नेछ।

(३) भाषा सम्बन्धी अन्य कुरा भाषा आयोगको सिफारिसमा नेपाल सरकारले निर्णय गरे बमोजिम हुनेछ।

१८. (३) राज्यले नागरिकहरूका बिच उत्पत्ति, धर्म, वर्ण, जात, जाति, लिंग, आर्थिक अवस्था, भाषा, क्षेत्र, वैचारिक आस्था वा यस्तै अन्य कुनै आधारमा भेदभाव गर्ने छैन।

३१. (५) नेपालमा बसोबास गर्ने प्रत्येक नेपाली समुदायलाई कानून बमोजिम आफ्नो मातृभाषामा शिक्षा पाउने र त्यसका लागि विद्यालय तथा शैक्षिक संस्था खोल्ने र सञ्चालन गर्ने हक हुनेछ।

३२. भाषा तथा संस्कृतिको हक: (१) प्रत्येक व्यक्ति र समुदायलाई आफ्नो भाषा प्रयोग गर्ने हक हुनेछ।

(२) प्रत्येक व्यक्ति र समुदायलाई आफ्नो समुदायको सांस्कृतिक जीवनमा सहभागी हुन पाउने हक हुनेछ।

(३) नेपालमा बसोबास गर्ने प्रत्येक नेपाली समुदायलाई आफ्नो भाषा, लिपि, संस्कृति, सांस्कृतिक सभ्यता र समुदायको संवर्द्धन र संरक्षणगर्ने हक हुनेछ।

५१. राज्यका नीतिहरू

(ग) सामाजिक र सांस्कृतिक रूपान्तरण सम्बन्धी नीति

(६) देशको सांस्कृतिक विविधता कायम राख्दै समानता एवं सहअस्तित्वका आधारमा विभिन्न जातजाति र समुदायको भाषा, लिपि, संस्कृति, साहित्य, कला, चलचित्र र सम्पदाको संरक्षण र विकास गर्ने,

(७) बहुभाषिक नीति अवलम्बन गर्ने।

२८७ भाषा आयोग

(६) भाषा आयोगको काम, कर्तव्य र अधिकार देहाय बमोजिम हुनेछ:

(क) सरकारी कामकाजको भाषाका रूपमा मान्यता पाउन पूरा गर्नुपर्ने आधारहरूको निर्धारण गरी नेपाल सरकार समक्ष सिफारिस गर्ने,

(ख) भाषाहरूको संरक्षण, संवर्धन र विकासका लागि अवलम्बन गर्नुपर्ने उपायहरूको नेपाल सरकार समक्ष सिफारिस गर्ने,

(ग) मातृभाषाहरूको विकासको स्तर मापन गरी शिक्षामा प्रयोगको सम्भाव्यताका बारेमा नेपाल सरकार समक्ष सुझाव पेश गर्ने,

(घ) भाषाहरूको अध्ययन, अनुसन्धान र अनुगमन गर्ने।

ध्यातव्य जे जहिना एकगोट अकुशल गृहिणी घर बहार' कालमे गर्दाकेँ कार्पेटतरदिसि नुका दैत अछि तहिना नेपालक सरकार भाषागत समस्याकेँ भाषा आयोगदिसि फैंक देने अछि।

अन्ततः, वर्तमानमे शिक्षा मन्त्रालयक School Sector Reform Program अन्तर्गत जे मातृभाषामे बहुभाषिक शिक्षा (Multilingual Educatin, MLE) कार्यक्रम सञ्चालन भए रहल अछि ताहूमे बुझू जे गहनसन लागल अछि किएक तँ अधिकांश विद्यालय अङरेजी भाषाकेँ वरण कए ताही भाषाक माध्यमेँ पठनपाठन करेबाक ध्येय निर्धारण कए लेने अछि।

४. नेपालमे मैथिली

मैथिली नेपालक दोसर सर्वाधिक बाजएजाएवाला एकगोट समृद्धिशाली ओ प्राचीन भाषा अछि। ई भाषा नेपालमे प्राथमिकसँलए विश्वविद्यालय स्तरधरि पढ़ाओल जाइत अछि। नेपाल सरकारक सञ्चार माध्यममे एहि भाषामे समाचारवाचन सेहो होइत अछि। वस्तुत: सम्पूर्ण भारतीय आर्यभाषामध्य मराठीकेँ छाड़ि मैथिली सर्वाधिक पुरान भाषा अछि। बेसी नहि त' कम स' कम १२ सय वर्ष पूर्वहिसँ एहि भाषाक लिखित साहित्य एखनहु अक्षुण्ण अछि। आ, नवम शताब्दीसँलए अठारहम शताब्दीधरिक मैथिली भाषाक हस्तलिखित पाण्डुलिपिसभ अद्यतन नेपालक राष्ट्रिय अभिलेखालयमे संगृहीत एवम् अनुरक्षित अछि। ई सर्वविदित अछि जे एतहिसँ पाण्डुलिपिसभक छायाप्रति ल' जाएकए भारतीय, जर्मन, अङरेज, फ्रेन्च, तथा इटालियन विद्वानसभ विश्वप्रसिद्ध भेल छथि।

निकट भविष्यमे एहि २ नम्बर प्रदेशमे मैथिली भाषाकेँ (आ भोजपुरीकेँ सेहो — जकर चर्च अन्य अवसरपर होअओ) — जे गहनतम एवम् गरिमामय जिम्मेवारी आ उत्तरदायित्व वहन करबाक सुअवसर संप्राप्त होएबाक स्थितिक सृजन भेल अछि ताहि उत्तरदायित्वक सफल निर्वाह एवम् कार्यान्वयनकहेतु हमरा जनितेँ मैथिली विद्यमानमे पूर्णरूपेण असक्त अछि, असक्षम अछि। एहि मादे भविष्यक कर्णधार युवालोकनि, बुद्धिजीवी, राजनीतिज्ञ, प्रशासनविज्ञ, संस्कृतिकर्मी, ओ भाषाकर्मी तथा भाषाजीवी, विशेषत: मैथिली-भाषाजीवीलोकनिक ध्यान आकृष्ट होएब परमावश्यके नहि अपितु अपरिहार्य अछि। **शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, वन, मत्स्यपालन, विज्ञान, प्रविधि, वाणिज्य, कानून, प्रशासन, व्यवस्थापन, वातावरण, ऊर्जा, कम्प्यूटर, संचार आदि अनेकहु क्षेत्रमे विभिन्न स्तरक मैथिलीमे प्रवीण दक्ष जनशक्तिक आवश्यकता एकाएक मुह बाबिक' ठाढ़ भ' जाएत।** एहि कार्यक सफल सम्पादनकहेतु मैथिलीक लेख्य रूपक स्थिरीकरण, वैज्ञानिक एवम् व्यावसायिक शब्दावलीक निर्माण, तथा मैथिलीक विस्तार, सबलीकरण एवम् बौद्धिकीकरणकए एहि भाषाकेँ स्तरीय ओ मान्य बनाबए पड़त। ई काज हल्लुक नहि अछि एवम् एहना स्थितिमे उत्पन्न घोर सङ्क्रमणक समाधान तत्काल सम्भव नहि देखना जाइत अछि। ततबहि नहि, एहि प्रदेशमे एकहुगोट विश्वविद्यालयक — खाहे निजी वा सरकारी — विद्यमानता नहि भेलासँ ई काज आओरो बेसी दुरूह होएबाक अवस्था विद्यमान अछि। एहि ठाम उपस्थित मैथिली अनुरागीजनसँ हमर विनम्र आग्रह जे ओ एहि मादे गम्भीर चिन्तन-मनन करथि एवम् एहि पुनीत कार्यदिसि प्रवृत्त भए दत्तचित्तसँ आगाँ बढ़थि।

५. मैथिली भाषा नीति एवम् योजना

आब मैथिली भाषाकेँ प्रायोजित प्रयोजनवास्ते सबल, सक्षम ओ शक्तिशाली बनएबाकहेतु विश्वस्तरपर प्रयुक्त शास्त्रसम्मत विधिसभद' किछु विचार-विमर्श करी — अत्यन्त संक्षेपमे।

अपनेलोकनिकेँ बूझल अछिए जे भाषा नीति (Language Policy) कहलासँ अभिप्राय अछि "उद्देश्य/ध्येयक विज्ञप्ति" अर्थात् Statement of Intent ओ भाषा योजना (Language Planning) कहलासँ अभिप्राय अछि तकर "कार्यान्वयन" अर्थात् Implementation — जकर नहि होएबाक डर नेपालमे निरन्तर रहैत अछि।

भाषाविज्ञानक समाजभाषाशास्त्र ओ भाषा-योजनाशास्त्रमे एहि मादे सर्वप्रथम ओ सर्वस्वीकृत क्रियाकलाप अछि Status Planning। एकर अर्थ ई जे राज्य पहिने एहि भाषाकेँ राज्य सञ्चालनार्थ उचित रूपेँ योग्य निर्धारित कए एकर चयन अर्थात् Selection करथि। से नहि कएने सब निरर्थक। मैथिलीक आधिकारिक चयन पश्चात् प्रश्न उठत: सञ्चारक सुखद आ सफल सम्वाहन/संप्रषणहेतु केहन मैथिली वा ककर मैथिली। अही ठाम मानक ओ औपभाषिक स्वरूपक झंझटाह प्रश्नसभ मुह बाबिक' ठाढ़ होएत। की चयनित मैथिलीक स्वरूप ककरहुलेल अपनसन नहि लगतैन्हि, आदि आदि। एहि मादे देखू (यादव १९९९)।

दोसर महत्वपूर्ण आ अति कष्टसाध्य क्रियाकलाप अछि Corpus Planning। एहि अन्तर्गत अबैत अछि:

(i) Codification, अर्थात् लिपिवद्धीकरण जाहि मादे मैथिली भाषामे कोनहु समस्या नहि अछि किएक त' एकर अपन स्वतंत्र लिपिक सँगहि वर्तमानमे ई भाषा देवनागरी लिपिमे निर्विघ्न रूपेँ लिखल जाइत अछि;

(ii) Graphization, जाहिमे वर्तनीगत विषय तथा लेख्य रूपक स्थिरीकरण आदि अबैत अछि — जे करब परमावश्यक;

(iii) Grammaticalization, संतोषक गप जे मैथिली भाषाक आधिकारिक व्याकरण, ध्वनिशास्त्रक वर्णन-विश्लेषण, रूपिमगत वर्णन-विश्लेषण, आदि कार्य भेल अछि ओना एखनहु बहुतोराश काज बाँकी अछिए;

(iv) Lexication, मैथिलीक चारि-पाँचगोट शब्दकोशक निर्माणक बावजूदहु ई क्षेत्र अद्यावधि अवहेलित अछि, एखनहु अनुसन्धेय अछि; आ

(v) Elaboration, जाहि अन्तर्गत विज्ञान, प्रविधि, संचार, आदि अनेकहु क्षेत्रक ज्ञानकेँ मैथिली भाषाक माध्यमेँ सशक्त रूपेँ अभिव्यक्त क' सकबाक क्षमताक विकास करब थिक। एहिसँ एहि भाषाक बौद्धिकीकरण होबमे सेहो साहाय्य होएत। ई काज अत्यन्त दुरूह थिक तथा एहिदिसि तत्काल लागि जाएब समयक माँग अछि। ई नहि भेने कोनहु प्रकारक पाठ्यसामग्री निर्माण कार्य आगाँ नहि बढ़त।

तेसर क्रियाकलाप अछि Language-in-Education Planning — ई कएलासँ मैथिली क्षय होबसँ बाँचत, संकटापन्न होएबाक स्थितिसँ बचत। आन शब्दें कही त' एहि भाषाक Language Maintenance बढ़त ओ बेसी वक्ता एकर प्रयोग करताह, तहिना भाषा परित्याग करबाक प्रवृत्तिमे ह्रास आबि भाषा प्रसरण (Language Shift) सेहो नहि होएत।

चारिम क्रियाकलाप अछि Prestige/Image Planning— जाहिसँ मैथिली भाषाभाषी अपनाके गौरवशाली बूझि विश्व समुदायमे अपन स्वतंत्र छवि ओ पहचान बनाबमे कहिओ समर्थ होएताह।

ध्यातव्य जे ई क्रियाकलापसभक सफल कार्यान्वयनक पश्चात् मात्र एहि मैथिली भाषाक Power of Languageक असल अनुभूति होएत ओ तखनहि मैथिली भाषा एकगोट Language of Power भ' सकत।

६. उपसंहार

अन्तत:, हम नवतुरक जिज्ञासु मैथिली अनुरागी तथा अनुसन्धित्सु युवक-युवतीसँ विनम्र आग्रह कर' चाहब जे ओलोकनि मैथिली भाषा-साहित्यक गम्भीर अध्ययन-अनुसन्धानदिसि उन्मुख होथि, उत्प्रेरित होथि। हम स्पष्ट रूपेण देखि रहल छी जे मैथिली भाषा-साहित्यक विविध क्षेत्रमे अनुसन्धानक जे उच्च मानक स्तर अद्यावधि स्थापित भ' चुकल अछि तकर कुशल संवाहकभए ताहि स्तरीय कार्यकें निरन्तरता प्रदान करबाकहेतु नव पीढ़ीक लोग ने त' तत्पर छथि आ ने प्रवीण प्रतीत होइत छथि। सम्भवत: आजुक प्रतिस्पर्धापूर्ण वैश्विीकरणक युगमे हुनका ई काज निष्प्रयोजनीय बुझना जाइत छैन्हि। हमरा जनितें ई एकगोट चिन्ताक विषय थिक। आ, जनकपुर तथा लगपासक क्षेत्रमे मैथिलीक प्रयोक्ता वा कहू जे उपभोक्तालोकनि विभिन्न व्यापारिक प्रयोजनवशात् सञ्चार माध्यममे एहि भाषाक जाहि स्वरूपक प्रयोग वा कहु जे कुप्रयोग करैत छथि से त' गम्भीर चिन्ताक विषय अछिए।

सन्दर्भ सूची

Awasthi, Lav Deo 2011 "The making of Nepal's language policy: Importation of ideologies," In: Farell, Lesley *et al* (eds.) *English Language Education in South Asia: From policy to Pedagogy*, New Delhi: Cambridge University Press.

Awasthi, Lav Deo 2016 "Keynote: Language for power and pedagogy: Redefining Nepal's linguistic architecture," 37th Annual LSN Conference, Kathmandu, November 26, 2016.

Dixit, Narayan Mani 2008 "Class in the past," *The Kathmandu Post*, Sunday, 27 May 2018.

Eagle, S. 1999 "The language situation in Nepal, "*Journal of Multi lingual and Multicultural Development* 20: 4-5, 272-327.

Govt/N 2015 *Nepālako Saṁvidhāna 2072/2015*, Kathmandu: The Government of Nepal.

HMG/N 1956 *Education in Nepal: Report on the Nepal National Education Planning Commission*, Kathmandu: His Majesty's Government of Nepal.

HMG/N 1990 *Constitution of Nepal* 2047/1990, Kathmandu: His Majesty's Government of Nepal. English Translation

Hutt, Michael 1988 *Nepali: A National Language and its Literature*, London: School of Oriental and African Studies.

Sharma, Gopi Nath 1990 "The impact of education during the Rana period in Nepal,"*Himalaya, the Journal of the Association for Nepal and Himalayan Studies* 10: 2, 3-7.

The Report of National Language Policy Recommendation Commission, Kathmandu: Central Department of Linguistics, Tribhuvan University. English Translation, 2008

Weinberg, Miranda 2013 "Revisiting history in language policy: The case of medium of instruction in Nepal," *Working Papers in Educational Linguistics* 28: 1, 61-80.

Wood, Hugh B. 1958 "Development of Education in Nepal," Kathmandu: His Majesty's Government of Nepal.

Yadav, Ramawatar 1992 "The use of the mother tongue in primary education: The Nepalese context," *Contributions to Nepalese Studies* 19: 2, 177-190.

यादव, रामावतार १९९९ "मैथिलीक भाषिक वैविध्य: औपभाषिक ओ मानक स्वरूप," *जिज्ञासा* (राँटी) ४: ६, ७३-८९।

यादव, रामावतार २०६७/२०१० ई. ''समकालीन मैथिलीक वर्तनी: संक्षिप्त वर्ण-विश्लेषण,''*आँगन* (नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान मैथिली पत्रिका) २: ३, ६१-७१।

यादव, रामावतार २०७०/२०१३ ई. "की मैथिली मरि जाएत? भाषा मृत्युद' किछु विचार," *अप्पन मिथिला* (काठमाण्डौ) २: २, ३-६।

यादव, रामावतार २०१६ ई. *मैथिली आलेख सञ्चयन (१९८९-२०१५)*, जनकपुरधाम: मैथिली विकास कोष।

मैथिलीमे विलोम-सन्धि*

0. प्राक्कथन
महेन्द्र मलंगियाक विशेष अनुरोधपर हम गोविन्द झा (सं, १९९२) *मैथिली शब्दकोश, प्रथम खण्ड*क समीक्षा-आलेख लिखल — जे जनकपुरसँ *मिथिला वाणी* नामधारी एकगोट अति कृशकाय (आ संभवत: आब प्रकाशनातीत) मैथिली पत्रिकामे आइसँ २३ वर्ष पूर्वहि प्रकाशित भेल छल (यादव १९९४)। चोट्टहि, मैथिली भाषाविज्ञान ओ शब्दकोशशास्त्रक शिखर पुरुष पं गोविन्द झाक एकगोट हस्तलिखित पत्र (झा १९९४) हमरा हस्तगत भेल जाहिमे गोविन्द झा कहलैन्हि:

> *वैदुष्यपूर्ण समीक्षाक हेतु हार्दिक धन्यवाद। अहाँक लगभग सभ मन्तव्य हमरा समीचीन बुझाएल। तखन जे तुरन्त ई पत्र लिखैत छी से प्रतिवादार्थ नहि, केवल एहि हेतुएँ जे अहाँक लेख पढ़ला सन्ताँ एकदू बात अहाँकेँ जनाए देब आवश्यक बुझाएल।*

'एकदू बात' जे ओ जनौलैन्हि से अति पीड़ादायी। गोविन्द झा जनौलैन्हि: "मैथिली शब्दकोश (प्रथम खण्ड)क आरम्भसँ अठसठिम पृष्ठ धरिक सामग्री ने हमर लिखल थिक, ने हमर देखल।" आ आब ई कहिए दी जे हमर देखाओल अधिकांश त्रुटिसभ एही पृष्ठ संख्या भित्रक छल आ व्यर्थमे सभ अपजस गोविन्द झाकेँ भोगए पड़लैन्हि।

हमर समीक्षा-आलेखमे गोविन्द झाक एकगोट विशेष त्रुटिक उल्लेख सोदाहरण कएल गेल छल: "मैथिली शब्दक वर्तनीमे विद्यमान व्यापक वैविध्यक उल्लेख तँ भेल अछि, मुदा उच्चारण-वैशिष्ट्यक वैविध्यदिसि पूर्ण अनास्था देखाओल गेल अछि।" ताहि मादे गोविन्द झाक पत्रमे व्यक्त अति सूझपूर्ण अवधारणा निचाँ उद्धृत अछि:

*आँजुर २०: ७८, २०१७, पृ. ७-१४मे प्रकाशित।

> *हँ, उच्चारणक एक प्रवृत्तिक विषयमे अहाँ एकटा नव बात सुझाओल अछि। अन्त्य इ, उ जे उच्चारणमे पूर्ववर्ती अ/आ पर घुसुकि अबैत अछि, 'ह' व्यञ्जन तकर बाधक होइत अछि — पानि [पाइन], किन्तु काहि [काहि] न तु [*काइह]। How will you define the situation for this sound shifting?*

गोविन्द झाद्वारा अङरेजी भाषाक माध्यमेँ उठाओल गेल प्रश्नक सर्वाङ्गीन व्याख्या एवम् समीचीन उत्तर देब कठिन होइतहु प्रस्तुत आलेखक अभीष्ट मैथिली भाषामे विद्यमान एकगोट ध्वनितात्त्विक प्रक्रिया अर्थात् विलोम-सन्धि (metathesis)क भाषावैज्ञानिक वर्णन-विश्लेषण करब थिक।

ध्यातव्य जे विलोम-सन्धि ध्वनि परिवर्तन एकगोट एहन प्रक्रिया अछि जाहिसँ मैथिलीक शब्दान्तमे आएल व्यञ्जन-स्वर (CV) ध्वनियुग्म उच्चारण कालमे अपन स्थान आ क्रम बदलि लैत अछि, अर्थात् कहू जे ओ व्यञ्जन-स्वरक (CV) क्रमसँ स्वर-व्यञ्जन (VC) बनि जाइत अछि। तत्काल एकहि गोट उदाहरण प्रशस्त होएत: < र्‌अव्‌इ ~ रवि > [रइब]। ई कहब आवश्यक नहि जे मैथिलीक विलोम-सन्धि ध्वनि-परिवर्तनमादे अद्यावधि कोनहु अध्ययन-अनुसन्धान प्रकाशित नहि भेल अछि।

१. विलोम-सन्धिक प्रकृति

विलोम-सन्धि ध्वनितात्त्विक पद्धति एकगोट एहन प्रक्रिया अछि जाहिसँ शब्दमध्य आएल ध्वनियुग्म अपन स्थान विनिमय/एकान्तरण (local reversal)कए ध्वनि परिवर्तन होइत अछि। भाषाविज्ञानक अधिकांश प्रारम्भिक पोथीमे अङरेजीक शब्द /ask/ उच्चारणमे [aks] विलोम-सन्धिक एकगोट अति प्रख्यात उदाहरण रूपेँ अपन स्थान सुरक्षित रखने अछि; विलियम शेक्सपियरक प्रसिद्ध नाटक *The Tempest*क प्रमुख पात्र Caliban < Cannibal *n* > *l* विलोम-सन्धि ध्वनि-परिवर्तनक ज्वलन्त उदाहरण अछि; धरतीपर सभसँ धनवानमध्य एवम् ख्यातिप्राप्त टेलिभिजनकर्मी Oprah < Orpah *rp* > *pr* विलोम-सन्धि ध्वनि-परिवर्तनक साक्ष्य अछि; तहिना आधुनिक अङरेजीक शब्द horse < hros विलोम-सन्धि ध्वनि-परिवर्तनक अति प्रचलित साक्ष्य रूपेँ ग्राह्य अछि। निचाँ संसारक विभिन्न भाषासँ विलोम-सन्धि ध्वनि-परिवर्तनक कुछेक उदाहरण प्रस्तुत अछि:

Rotuman (an Oceanic language)
hula > **hual** 'moon'
pija > **piaj** 'rat'   (Antilla 1972: 63)

PGmc. *aisko > OE eascian/eaxian [**-sk/ks**]
NE **ask** / dial. **aks**
***fiskas** > OE fisc/fix [**-sk/ks**]

Lat. periculum > Span. **peligro** 'danger'
parabola > Span. **palabra** 'word'

Old English	Modern English	
bridd	bird	
frist	first	(Hock 1986: 110)

Salish language of Clallam
ckwu-t 'shoot [non-actual]' > **cukw**-t 'shooting [actual]'
(Anderson 1992: 66)

Azeri language of Azerbaijan, Iran
kibrit > **kirbit** 'match'
disc > diks 'disc'
toprak > torpac 'soil'
nusxæ > nuxsæ 'prescription' (Behnam & Rassekh-Alqol 2012: 58)

२. विलोम-सन्धि ध्वनि-परिवर्तनक ध्वनितात्त्विक प्रकृति (Phonotactics)

संसारक अनेकहु आन भाषा सदृश मैथिलीअहुमे विलोम-सन्धिजन्य ध्वनि-परिवर्तन सामान्यतया दूगोट व्यञ्जन ध्वनि *र, ल* एवम् दूगोट (ऐतिहासिक रूपेँ लघु स्वर) *इ, उ* मध्य होइत-सन देखना जाइत अछि, मुदा गम्भीर गवेषणा पश्चात् एहि ध्वनि-परिवर्तन प्रक्रियामे आनहु ध्वनिसभक सहभागिता स्पष्ट रूपेँ परिलक्षित होइत अछि — जे निचाँ प्रस्तुत उदाहरणसभसँ व्याख्यायित भ' जाएत।

(CVCVCVCV)CV, जाहिमे पूर्ववर्ती अक्षरमे विद्यमान स्वर schwa अर्थात् *अ* अछि एवम् विलोम-सन्धिजन्य परिवर्तित होमएवाला ध्वनियुग्म *r* (both flapped, and retroflexed, and aspirated) तथा *l* अछि जकरा पाछाँ मैथिलीक उच्च अग्र स्वर *इ* (high front vowel [i]) विद्यमान रहैत अछि :

<phar=**i** ge-la> bear fruit=LINK go-PST (3NH) [phə**ir** gel] 'bore fruit'
<mar=i ge-l-āha> die=LINK go-PST (3H) [mə**ir** gelah] '(He) passed away'

<har=**i** le-la> abduct=LINK take-PST (3NH) [hə**ir** lel] 'abducted'
<gaḍ=**i** ge-la> pierce-LINK go-PST (3NH) [gə**iṛ** gel] 'pierced in'
<paḍh=**i** le-la-**hũ**> read=LINK take-PST (1) [pə**iṛh** lelə**ũh**] 'read (already)'
<caḍh=i ge-l-āha> climb=LINK go-PST (3H) [cə**iṛh** gelah] 'climbed up'
<cal=**i** ā-u> walk=LINK come-IMP [cə**il** au] 'come back'
<khal=**i** le-la-ka> skin=LINK take-PST (3NH) [khə**il** lelək] 'skinned away'
<chal=**i** le-la-ka> cheat=LINK take-PST (3NH) [chə**il** lelək] '(He) cheated (me)'
<ṭahal=**i** jā-u> walk=LINK go-IMP [ṭəhə**il** jau] 'walk away'
<kasa**ri**> [kasə**ir**] 'pain'
<kesa**ri**> [kesə**ir**] 'mane'
<nakabesa**ri**> [nəkbesə**ir**] 'nose ring'

(CV)CV, जाहिमे पूर्ववर्ती स्वर अछि निम्न केन्द्रीय स्वर *आ* (low central vowel [a]) तथा एकान्तरण होमएवाला ध्वनियुग्म अछि *र, ल* (liquid consonants *r, l*) तथा उच्च अग्र स्वर *इ* (high front vowel [i]):

<gā**ri** >	[ga**ir**]	'verbal abuse'
<pā**ḍhi**>	[pa**iṛh**]	'border (of a Sari)'
<gā̃**ḍi**>	[gā̃**iṛ**]	'anus'
<cā**li**>	[ca**il**]	'conduct'
<bā**li**>	[ba**il**]	'ear (of a corn)'
<kā**lhi**>	[ka**ilh**]	'yesterday'

<mār=**i** de-la-ka> beat=LINK give-PST (3NH+1) [ma**ir** delək] '(He) beat (me) severely'
<hār=**i** ge-la> lose=LINK go-PST (3NH) [**hair** gel] '(He) lost (completely)'
<ṭāl=**i** de-la-**nhi**> ignore=LINK give-PST (3H+1)[ṭa**il** delə**inh**] '(He) ignored (me)'
<pāl=**i** le-la-**thi**> bring up=LINK take-PST (3H) [pa**il** lelə**ith**] '(He) brought up (well)'

(CV)CV, जाहिमे पूर्ववर्ती स्वर अछि निम्न केन्द्रीय स्वर *आ* (low central vowel [a]) तथा एकान्तरण होमएवाला ध्वनियुग्म अछि *र, ल* (liquid consonants *r, l*) तथा उच्च पश्च वर्तुल स्वर *उ* (high back rounded vowel [u]):

<bā**lu**>	[ba**ul**]	'sand'
<bhā**lu**>	[bha**ul**]	'bear'
<khā**ru**>	[kha**ur**]	'transplanted paddy plant'

(CVCVCV)CV, जहिमे एकान्तरण होमएवाला ध्वनियुग्म *र, ल*-इतर अछि:

<mā**su**> [ma**us**] 'meat'
<kabā**chu**> [kəba**uch**] 'an herbal irritant'
<ḍhelamā**su**> [ḍhelma**us**] 'sling'
<bhā**thi**> [bha**ith**] 'hand bellows'
<pachā**ti**> [pəcha**it**] 'later'
<phajjha**ti**> [phəjjhə**it**] 'insult'
<kā**ṭ=i** le-la-ka> sting=LINK take-PST (3NH) [ka**iṭ** lelək] '(something) stung (me)'

<dū**bhi** dhān> couch-grass paddy [du**ibh** dhan] 'couch-grass and paddy'
<bu**ḍi** cha-**thi**> stupid AUX-PRES (3H) [bu**iṛ** chə**ith**] '(He) is stupid'
<su**t=i** raha-l-āha sleep=LINK AUX-PST (3H) [su**it** rəhlah] '(He) fell asleep'
<u**ṭh=i** jā-u> arise=LINK go-IMP [u**iṭh** jau] '(please) arise'
<ḍu**b=i** ge-la> drown=LINK go-PST (3NH) [ḍu**ib** gel] 'drowned'
<ku**d=i** paḍa-l-āha> jump=LINK lie-PST (3H) [ku**id** pərlah] 'jumped (suddenly)'

<pā**ju** kara-ba> chew do-INF [pa**uj** kərəb] 'chewing the cud'

(CVCCV)CV, जाहिमे सेहो एकान्तरण होमएवाला ध्वनियुग्म *र, ल*-इतर अछि:

<hujja**ti**> [hujjə**it**] 'insult'
<ijja**ti**> [ijjə**it**] 'honor'
<jhanjha**ṭi**> [jhənjhə**iṭ**] 'worrisome entanglement'

(CVCV)CV, जाहिमे संयुक्त क्रियापद-स्थित निकटस्थ स्वर अछि उच्च अग्र स्वर इ (high front vowel [i]):

<u**ṭh=i** gel-āha> arise=LINK go-PST (3H) [u**iṭh** gelah] '(He) arose (with a jerk)'
<ru**s=i** raha-l-āha> displease=LINK be-PST (3H) [ru**is** rəhlah] '(He) felt displeased'
<ka**s=i**-ka bānh-u> tight=LINK-CONV tie-IMP [kəiskə banhu] 'tie it up tightly'
<una**ṭ=i** ge-l-āha> roll over=LINK go-PST (3H) [unə**iṭ** gelah] '(He) rolled over'
<sama**ṭ=i** le-la-**nhi**>gather=LINK take-PST (3H) [səmə**iṭ** lelə**inh**] '(He) gathered it up'

<ucha**ṭ=i** ge-la> slip=LINK go-PST (3NH) [uchə**iṭ** gel] 'slipped (out of hand)'
<kaca**k=i** ge-la> hurt=LINK go-PST (3NH) [kəcə**ik** gel] '(hurt (suddenly)'
<paro**s=i** di-a> serve=LINK give-IMP [pəro**is** diyə] 'May I serve you'

उपर देखाओल गेल जे मैथिली ध्वनितात्त्विक प्रकृति (phonotactics) ओ विलोम-सन्धि ध्वनि-परिवर्तन (the sound change termed metathesis) मध्य कोना एकटा आवर्तक सहसंबंध (recurrent correlation) विद्यमान अछि — जाहिसँ मैथिली शब्दमध्यक समीपस्थ ध्वनियुग्मक पुनर्सरूपण (reconfiguration) होइत अछि। आब हम पाठकक ध्यान मैथिली ध्वनिपद्धतिक एकगोट विशिष्ट परिलक्षणदिसि आकृष्ट करए चाहब — ओ ई जे मैथिलीक सार्वत्रिक ध्वनि *ह* विलोम-सन्धि ध्वनि-परिवर्तन नियमक बाधक अछि — यद्यपि *ह* व्यञ्जन ध्वनिक ध्वनितत्त्वमे एहन कोनहु विशिष्टता विद्यमान नहि अछि जाहिसँ ई ध्वनि एहि नियममे सहभागी नहि होअए। तखन देखना सएह जाइत अछि।

निचाँक किछु उदाहरणसभदिसि दृष्टिगत करू जाहिमे *ह* ध्वनिक पूर्ववर्ती अक्षरमे *अ* स्वर अवस्थित अछि आ विलोम-सन्धि ध्वनि-परिवर्तन नहि होइत अछि:

<ra**h=i** jā-u> stay=LINK go-IMP [*rə**ih** jau] 'stay'
<la**h=i** ge-la> prove lucky=LINK go-PST (2H) [*lə**ih** gel] 'proved lucky (to you)'
<sa**h=i** ge-l-āha> tolerate=LINK go-PST (3H) [*sə**ih** gelah] '(He) tolerated'
<ka**h=i** de-la-ka> say=LINK give-PST (3NH + 1)[*kə**ih** delək] '(He) told (me)'
<ma**h=i** l-i-a> churn=LINK take-IMP [*mə**ih** liyə] 'churn (the yoghurt)'
<ba**hī**> [*bə**īh**] 'verbal abuse'

ठीक एहने अवस्था निम्नाङ्कित उदाहरणसभक अछि जाहिमे *ह* ध्वनिक पूर्ववर्ती अक्षरमे पश्च वर्तुल स्वर *ओ* तथा *उ* (back rounded vowels [o, u])स्वर अवस्थित अछि आ विलोम-सन्धि ध्वनि-परिवर्तन नियम बाधित अछि:

<go**hi**> [*go**ih**] 'crocodile'
<bo**hi**> [*bo**ih**] 'heavy flow of flood water'
<to-**hi**> you-ACC/DAT [*to**ih**] 'to you'
<so**h=i** l=i-a> peel=LINK take-IMP [*so**ih** liyə] 'peel (the mango)'
<mo**h=i** le-la-ka>enchant=LINK take-PST(3NH+1) [*mo**ih** lelək] '(She) enchanted (me)'

<ṭoh=i-ka le-ba> check=LINK-CONV take-FUT (2H) [*ṭoihkə leb] 'touch, check and then buy'
<kuh=i de-la-ka> crush=LINK give-PST (3NH+1) [*kuih deləkl] '(He) crushed (me) hard'

निचाँ किछु आओर उदाहरणसभ प्रस्तुत अछि जाहिमे *ह* ध्वनिक पूर्ववर्ती अक्षरमे निम्न केन्द्रीय स्वर *आ* अवस्थित अछि एवम् ध्वन्यात्मक परिवेशमे विलोम-सन्धि ध्वनि-परिवर्तन नियम बाधित अछि:

<adhalā**h**-i>	[*ədhlai**h**]	'the ill-mannered (female)'
<ḍhelabā**hi**>	[*ḍhelbai**h**]	'the act of throwing clay lumps'
<trā**hi**>	[*trai**h**]	'to cry (bitterly) for help'
<bā̃**hi**>	[*bāĩ**h**]	'arm'

<kā**hi** kāṭaba> pain cut-INF [***kaih** kaṭəb] 'to groan in pain'
<uchā**h**=i d-i-a> replace=LINK give-IMP [*uchai**h** diyə] 'replace the old thatched roof with a new one'
<ḍhā**h**=i de-la-ka> crumble=LINK give-PST (3NH) [*ḍhai**h** deləkl] '(He) crumbled (the wall)'

एहना स्थिति होइतहु विचित्र बात ई जे *ह* आ *उँ/उ* मिलाकए बनल *-हुँ* तथा *-हु* — जे पुरुष विभक्ति रूपेँ क्रियापदमे अन्वित अछि एवम् जकर पूर्ववर्ती अक्षरमे *अ* स्वर अवस्थित अछि — विलोम-सन्धि ध्वनि-परिवर्तन नियममे सहर्ष सहभागी होइत अछि, यथा:

<le-la-**hũ**> take-PST (1) [lelə**ũh**] 'I took (it)
<kaha-ba-**hu**> say-FUT (1+ 2NH) [kəhbə**uh**] 'I will tell you'

तहिना, मैथिलीक अवधारणात्मक पूर्वाश्रयी (emphatic clitic) *-हु, -हि* सेहो विलोम-सन्धिजन्य ध्वनि-परिवर्तन नियममे सहर्ष सहभागी होइत अछि, यथा:

<aneka-**hu**>	many-CLIT	[ənekə**uh**]	'many'
<hama-**hu**>	I-CLIT	[həmə**uh**]	'I too'
<hama-**hi**>	I-CLIT	[həmə**ih**]	'Only I'
<rāma-**hi**>	Ram-CLIT	[ramə**ih**]	'Only Ram'
<rāma-**hu**>	Ram-CLIT	[ramə**uh**]	'Ram too'

मैथिली भाषाक *-ह* व्यञ्जन ध्वनि कतिपय स्वरसभसँगे विन्यस्त भए जाहि प्रकारक सार्वत्रिक, अक्खड़, ओ अवज्ञापूर्ण ध्वनितात्त्विक प्रकृतिक प्रदर्शन करैत अछि

तकर सर्वाङ्गीण वर्णन-विश्लेषणक दायित्व हम परवर्ती "अपवाद-ध्वनिशास्त्र"क व्याख्याताकेँ सौँपि रहल छी — ओना हमरा ई बात नीकजकाँ ज्ञात अछि जे भाषाविज्ञानक समाजभाषावैज्ञानिक वर्णनात्मक चिन्तन धारामे तथाकथित "अपवाद"क कोनहु स्वतंत्र स्वत्व नहि अछि।

३. विलोम-सन्धि ओ अपिनिहिति

मैथिली भाषाक पारम्परिक भाषावैज्ञानिक वर्णनात्मक अध्ययन-विश्लेषणमे मैथिली शब्दमध्य विद्यमान निकटस्थ CV ध्वनियुग्म जे अपन स्थान एकान्तरण (local reversal) एवम् पुनर्सरूपण (reconfiguration) कए ध्वनि परिवर्तनक कारक होइत अछि — एवम् जाहि ध्वन्यात्मक प्रक्रियाकेँ वर्तमान विवेचनमे "विलोम-सन्धि" (metathesis) कहि वर्णन कएल जा रहल अछि — ताहि ध्वनि-परिवर्तन प्रक्रियाकेँ "अपिनिहिति" कहि तकर अङरेजी अनुवाद "epenthesis" कएल गेल अछि। तदनुसार, गोविन्द झा (१९७४: ६९-७०) अपन गौरवशाली ग्रन्थमे एहन CV ध्वनियुग्मक स्थान एकान्तरण एवम् पुनर्सरूपणकेँ "अपिनिहिति" अर्थात् "epenthesis"क दृष्टान्त मानि निम्न शब्दसभ उदाहरणार्थ प्रस्तुत करैत छथि:

उच्चारण	*शुद्ध रूप*	
रइब	रवि	(रविवार)
दाइल	दालि	(दाल)
पाइन	पानि	(पानी)
अइछ	अछि	(है)

पाश्चात्य ध्वनिशास्त्रीय वर्णनात्मक पद्धति अनुरूप ऐतिहासिक एवम् तुलनात्मक भाषाविज्ञानमे प्रयुक्त विदेशज शब्द "epenthesis"क अङरेजी पर्याय आ कहू जे एकर coterminous शब्द "insertion" (संस्कृतमे *आगम*) मानल जाइत अछि, न तु "विलोम-सन्धि" "metathesis"। निचाँ प्रस्तुत दूगोट उदाहरण *आगम* अर्थात् "insertion" सँ भेल ध्वनि परिवर्तनकेँ आओरो स्पष्ट करत:

अङरेजी paprika	जापानी papurika
संस्कृत स्नान	मैथिली असनान [əsnan]

उपर प्रस्तुत उदाहरणद्वय स्पष्टरूपेण परिलक्षित करैत अछि जे व्यञ्जनगुच्छकेँ तोड़ि दुहुकेँ विलग करबाक प्रयोजनसँ जापानीमे u स्वरक आ मैथिलीमे ə अर्थात् *अ* स्वरक "आगम" होइत अछि, "अपिनिहिति" नहि। मैथिली भाषाक एहि आगम नियमकेँ रामावतार यादवक

(Yadav 1984: 48) अनुसरण कए Generative Phonology Theory अन्तर्गत Distinctive Features Analysis माध्यमेँ निम्नरूपेण लिखि देखाओल जा सकैत अछि.

Rule of Insertion
ø → [V] / # --- C C
+ sonorant
- low
+ back

४. विलोम-सन्धि ओ भाषिक वैविध्य (Metathesis and Variation)

एहि ठाम मैथिली ध्वनितात्त्विक एकगोट विशिष्ट पक्षक रहस्योद्घाटन होएब परमावश्यक। स्पष्ट रूपेण देखना जाएत जे मैथिलीक विलोम-सन्धिजन्य ध्वनि-परिवर्तन नियम अनायास मैथिलीभाषी जनसमुदायमे विविध रूपान्तरित उच्चारण प्रयोग करबाक प्रवृत्तिक अभिवृद्धि कए मैथिली भाषामे प्रशस्त भाषिक वैविध्य एवम् रूपान्तरित शब्दवाहुल्य सृजनक एकगोट सबल कारक तत्त्व सिद्ध होइत अछि। ओनहुना भाषावैज्ञानिक अध्ययनार्थी एवम् रूपान्तरण ओ भाषिक-वैविध्य-अनुरागीलोकनिकलेल त' मैथिली भाषा उत्तम सामग्री-प्रदायक अछि से बात आब गुप्त नहि रहि गेल अछि (देखू: यादव १९९९)। दुर्भाग्यक गप जे अद्यतन मैथिली भाषाक वैविध्यक कोनहु विश्वसनीय समाजभाषावैज्ञानिक अध्ययन-अनुशीलन नहि भ' पाओल अछि। ओना एकटा युवा शोधार्थी एहि विषयद' विद्यावारिधि डिग्रीकलेल नामाङ्कनधरि करओने छथि, मुदा अनुसन्धान कार्यमे गहनसन लागल अछि।

आजुकाल्हुक भाषिक-वैविध्य-अनुरागीलोकनि भलहि कोनहु भाषामे विशेष अर्थतत्व तथा अर्थछटाक संप्रेषण हेतु प्रशस्त विविध एवम् रूपान्तरित रूपक उपलब्धता देखि प्रसन्न होथि, मुदा ग्रिअर्सनक ई गम्भीर त्रुटि रहैन्हि जे ओ मैथिली भाषामे विविध रूपान्तरित शब्द-बाहुल्यक समुपस्थितिकेँ "partially cultivated" (Grierson 1881: 50) कहि ताहिकेँ एकगोट अल्प विकसित भाषाक परिलक्षण रूपेँ परिभाषित कएल। ग्रिअर्सनक एहि गम्भीर त्रुटिकेँ इंगित करैत अनेकहु विद्वानलोकनि, विशेषत: दीनबन्धु झा (१९४६, १९४९-५०), गोविन्द झा (१९५८) एवम् रामावतार यादव (१९९६, १९९९, २००३, २०१६) एकर खण्डन करैत मैथिली भाषामे उपलब्ध विविध रूपान्तरित शब्ल-बाहुल्यक समाजभाषावैज्ञानिक महत्ता ओ सार्थकता सिद्ध करबाक भगीरथ प्रयत्न करैत रहलाह अछि। वस्तुत: एहि भाषामे उपलब्ध विविध रूपक अपन निजत्व अछि आ ओ विशेष समाजभाषावैज्ञानिक अर्थतत्त्वक (sociolinguistic semantics) द्योतक पर्यन्त अछि।

५. मैथिली-विलोम-सन्धि आ सन्ध्यक्षरी (Metathesis and Diphthongization)

आब ईहो सिद्ध भ' गेल अछि जे मैथिलीक विलोम-सन्धिजन्य ध्वनि-परिवर्तन नियम मैथिली भाषिक समुदायक उच्चारणमे अनायास प्रशस्त सन्ध्यक्षरक (diphthongs) प्रयोगक अवस्थितिक सृजन करैत अछि। मैथिलीक एहन सन्ध्यक्षरीकृत उच्चारणक किछु उदाहरण निचाँ प्रस्तुत अछि:

<**māsu**>	[maŭs]	'meat'
<ij**jati**>	[ijjəĭt]	'honor'
<kabā**chu**>	[kəbaŭ**ch**]	'an herbal irritant'
<bhā**lu**>	[bhaŭl]	'bear'
<gā**ri** >	[gaĭr]	'verbal abuse'
<kasa**ri**>	[kəsəĭr]	'pain'
<kesa**ri**>	[kesəĭr]	'mane'
<du**bhi**>	[duĭ**bh**]	'couch grass'
<pachā**ti**>	[pəchaĭ**t**]	'later'

मैथिली भाषामे सन्ध्यक्षर ओ सन्ध्यक्षरीकरण विधिक विशद ध्वनितात्त्विक वर्णन हेतु देखू: Yadav (1996: 18-19; 2014)।

६. मैथिली-विलोम-सन्धिक समाजभाषाविज्ञान

उपर कहि चुकल छी जे अद्यतन मैथिली-विलोम-सन्धि ध्वनि परिवर्तन प्रक्रियाक कोनहु वर्णनात्मक ओ समाजभाषावैज्ञानिक गवेषणात्मक अध्ययन-अनुशीलन अप्राप्त अछि। एहना अवस्थिति होइतहु, ई बात आब सर्वविदित अछि जे मैथिली भाषिक समुदायमे, विशेषत: तथाकथित उच्च कक्षक वक्तालोकनिक प्रयोगमे, विलोम-सन्धिजन्य ओ सन्ध्यक्षरीकृत उच्चारण एक ढंगसँ निषेधित-सन अछि, अङरेजीमे कही त' एक प्रकारक taboo वा stigma जकाँ अछि। मैथिली बजनिहारलोकनि सामाजिक स्तर, क्षेत्र, शिक्षा, जाति, धर्म, आर्थिक समृद्धि, जीवन शैली आदि भाषिक भेदकसभक (linguistic variables) आधारपर एहन विलोम-सन्धिजन्य ओ सन्ध्यक्षरीकृत उच्चारण प्रभेदकेँ अशुद्ध, अवस्तरीय, ठेँठ, गवाँर, आदि पक्षपातपूर्ण विशेषणसँ बेहिचक विभूषित करैत पाओल जाइत छथि। हिन्दी भाषाक माध्यमेँ लिखल गेल एक गौरवशाली ग्रन्थमे गोविन्द झा (१९७४: ६९) मैथिलीक विलोम-सन्धिजन्य प्रभेदकेँ "विकृति" कहि निम्नानुसार लिखलैन्हि:

> ...लेकिन अभी तक लिखित भाषा में और शिष्ट व्यवहार या टकसाली उच्चारण में ***अपिनिहिति*** (पढ़ु ***विलोम-सन्धि***) एक विकृति मानी जाती है और उससे बचने की पूरी कोशिश रहती है।

जे जेना होअओ, सत्य तथ्य तँ ई अछि जे आधुनिक मैथिलीक कथ्य रूप विलोम-सन्धिजन्य ओ सन्ध्यक्षरीकृत उच्चारण प्रभेदसँ भरल-पड़ल अछि एवम् इएह ध्वनितात्त्विक विशिष्टतासभ समकालीन मैथिली भाषाकँ समृद्धि प्रदान कए जनजुड़ाव पर्यन्त स्थापित करबैत आजुक एकगोट गतिशील एवम् जीवन्त भाषा रूपैं सथापित होएबामे प्रशस्त संबल प्रदान करैत अछि।

७. निष्कर्ष

उपर मैथिली भाषाक विलोम-सन्धिजन्य ध्वनि परिवर्तन प्रक्रियाक भाषावैज्ञानिक वर्णन-विशलेषण प्रस्तुत कएं देखाओल गेल जे कोना मैथिली शब्दमध्य विद्यमान निकटस्थ CV ध्वनियुग्म अपन स्थान एकान्तरण (local reversal) एवम् पुनर्संरूपण (reconfiguration) करैत अछि। सँगहि इहो देखाओल गेल जे मैथिली भाषाक ध्वनितात्त्विक पद्धति (phonotactics) ओ विलोम-सन्धि ध्वनि परिवर्तन (sound change termed metathesis) मध्य कोना एकटा आवर्तक सहसंबंध (recurrent correlation) विद्यमान अछि — जाहिसँ मैथिली शब्दमध्यक समीपस्थ ध्वनियुग्मक पुनर्संरूपण (reconfiguration) होइत अछि। ततबहि नहि, ईहो प्रदर्शित कएल गेल जे आधुनिक मैथिलीक विलोम-सन्धिजन्य ध्वनि-परिवर्तन नियम अनायास मैथिलीभाषी जनसमुदायमे विविध रूपान्तरित उच्चारण प्रयोग करबाक प्रवृत्तिक अभिवृद्धि कए मैथिली भाषामे प्रशस्त विविध तथा रूपान्तरित एवम् सन्ध्यक्षरीकृत शब्द-बाहुल्य सृजनक एकगोट शक्तिशाली कारक तत्त्व सिद्ध होइत अछि। आश्चर्यक गप जे बिना कोनहु ध्वनितात्त्विक विशिष्टता रहितहु एकाध अवस्थाकँ छाड़ि मैथिलीक *ह* व्यञ्जन ध्वनि अकारण विलोम-सन्धि ध्वनि-परिवर्तन नियममे सहभागी नहि भ' पबैत अछि। अन्ततः, मैथिली भाषिक समुदायमे, विशेषतः तथाकथित उच्च कक्षक वक्तालोकनिक प्रयोगमे, विलोम-सन्धिजन्य ओ सन्ध्यक्षरीकृत उच्चारण एक ढ़ंगसँ निषेधित-सन होइतहु इएह ध्वनितात्त्विक विशिष्टतासभ समकालीन मैथिली भाषाकँ समृद्धि प्रदान कए जनजुड़ाव पर्यन्त स्थापित करबैत आजुक एकगोट गतिशील एवम् जीवन्त भाषा रूपैं स्थापित होएबामे प्रशस्त संबल प्रदान करैत अछि।

सन्दर्भ सूची

झा, गोविन्द (१९७४) *मैथिली भाषा का विकास,* पटना: बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी।

झा, गोविन्द (१९९२) *मैथिली शब्दकोश, भाग १,* पटना: मैथिली अकादमी।

झा, गोविन्द (वि.सं २०५१/१९९४ ई.) ''रामावतार यादवकँ लिखल पत्र,'' *मिथिला वाणी* १: ४, १४-१६।

झा, दीनबन्धु (१३५३ साल/१९४६ ई.) *मिथिला-भाषा विद्योतन,* दरभंगा: मैथिली साहित्य परिषद।

झा, दीनबन्धु (१९४९-५०) *धातुपाठ,* दरभंगा: मैथिली साहित्य परिषद।

यादव, रामावतार (१९९४) "*गोविन्द झाक मैथिली शब्दकोश पढ़ला सन्ताँ,*" *मिथिला वाणी* १: ३, ९-१४।

यादव, रामावतार (१९९९) ''मैथिलीक भाषिक वैविध्य: औपभाषिक ओ मानक स्वरूप,'' *जिज्ञासा* (राँटी-मधुबनी, भारत) ४: ६, ७३-८९।

Anderson, Stephen R. 1992. *A-Morphous Morphology*, Cambridge: Cambridge University Press.

Antilla, Raimo 1972. *An Introduction to Historical and Comparative Linguistics*. New York: The Macmillan Company.

Behnam, Biook & Behzad Rassekh-Alqol 2012 "A sociolinguistic analysis of metathesis in Azeri language," *International Journal of Applied Linguistics & English Literature,* Vol. 1, No. 2, pp. 56-64.

Grierson, George Abraham 1881 *An Introduction to the Maithilī Language of North Bihār, Part 1, Grammar.* Calcutta: Asiatic Society of Bengal.

Hock, Hans Henrich 1986 *Principles of Historical Linguistics*, Berlin & New York, Amsterdam: Mouton de Gruyter.

Jha, Govind 1958 "Verb conjugation in Maithili," *Journal of the Bihar Research Society*, Vol. 44, No. 3-4, pp. 169-176.

Yadav, Ramawatar 1984 *Maithili Phonetics and Phonology*, Mainz (Germany): Selden und Tamm.

Yadav, Ramawatar 1996 *A Reference Grammar of Maithili*, Berlin and New York: Mouton de Gruyter.

Yadav, Ramawatar 2003 "Maithili," In George Cardona & Dhanesh Jain (eds.), *The Indo-Aryan Languages*, London and New York: Routledge, pp. 477-497.

Yadav, Ramawatar 2014 "Maithili phonology revisited: Vowel hiatus, glide insertion, and diphthongization," *Nepalese Linguistics*, 29, pp. 42-51.

समीक्षा-आलेख*

***प्रज्ञा मैथिली-नेपाली-अङ्ग्रेजी शब्दकोश*, नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान, काठमाण्डु, वि. सं. २०७३/२०१७ ई., पृष्ठ liv + ८६७ (हीरक वर्ष प्रकाशन)**

It is the fate of those who toil at the lower employments of life to be exposed to censure without hope of praise. Among those unhappy mortals is the writer of dictionaries. *Every other author may aspire to praise; the lexicographer can only hope to escape reproach, and even this negative recompense has been yet granted to very few.* (Italics added)

Samuel Johnson, *Dictionary of the English Language*, 1755

१. उपोद्घात

मैथिलीक अनुसंधित्सु अध्येतालोकनि भलहि आश्चर्यचकित होथि, मुदा ई एकगोट विचित्र ऐतिहासिक तथ्य अछि जे मैथिली भाषाक पहिल व्याकरण, पहिल शब्दसूची (Vocabulary) तथा पहिल शब्दानुक्रमणी (Word Index), ओ पहिल शब्दकोशक निर्माता फिरिङ्गी विद्वानलोकनि छथि न तु कोनहु स्वदेशी मैथिली-भाषी विद्वानसभ। आ, जेना कि अपनेलोकनिकैं ज्ञात अछिए, मैथिली भाषाक पहिल व्याकरणक निर्माता छथि जौर्ज एब्राहम ग्रिअर्सन (१८८१), पहिल शब्दसूची ओ पहिल शब्दानुक्रमणीक निर्माता सेहो छथि जौर्ज एब्राहम ग्रिअर्सन (१८८२, १८८४, १८८५), आ तहिना पहिल शब्दकोशकारद्वय सेहो छथि ए. एफ. आर. ह्योर्नले तथा जौर्ज एब्राहम ग्रिअर्सन (१८८५, १८८९)। पछाति जाक', बीसम शताब्दीमे मात्र, मैथिली-भाषी भारतीय विद्वानद्वय, भवनाथ मिश्रक पहिल अपूर्ण त्रैभाषिक मैथिली-हिन्दी-संस्कृत पर्यायवाची शब्दकोश *मिथिला शब्द प्रकाश:* (साल १३२२/१९१४-१५ ई.), ओ दीनबन्धु झाक पहिल एकभाषी पूर्ण मैथिली-मैथिली शब्दकोश, *मिथिलाभाषाकोष* (शाके १८७२/१९५० ई.), प्रकाशित भेल अछि। अत्यन्त हर्षक विषय थिक जे भवनाथ मिश्रकृत *मिथिला शब्द प्रकाश*क अद्यावधि हेराएल/अप्राप्त शेष छओ खण्डक पाण्डुलिपि उपलब्ध भए प्रकाशनाधीन पर्यन्त होएबाक सूचना हमरा *पहिल शब्दकोशकार पण्डित भवनाथ मिश्र साहित्य शिखर सम्मान-२०१७*सँ विभूषित करबाकहेतु ***साहित्याङ्गन***द्वारा झंझारपुर, बिहार, भारतमे प्रायोजित समारोहमे हालहि नभेम्बर २२, २०१७क' संप्राप्त भेल अछि; शेष छओ खण्डक पाण्डुलिपिक प्रकाशन पश्चात् भवनाथ मिश्र निस्सन्देह विधिवत् मैथिली भाषाक पहिल आधिकारिक मैथिली-भाषी शब्दकोशकार सिद्ध भ' जएताह।

एहना अवस्थितिमे अत्यन्त हर्षक विषय जे एकैसम शताब्दीक पहिल दशकक उत्तरार्द्धमे नेपालहुसँ नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान, काठमाण्डुक तत्वावधानमे वि. सं. २०७३/२०१७ ई.मे *प्रज्ञा मैथिली-नेपाली-अङ्ग्रेजी शब्दकोश (आगाँ प्रमैनेअश)* शीर्षक-सन गरिमामय त्रैभाषिक शब्दकोश-ग्रन्थक प्रकाशन भेल अछि। ध्यातव्य जे पूर्वहुमे तत्कालीन नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठानक तत्वावधानमे वि. सं. २०५३मे *मैथिली गद्य-सङ्ग्रह* ओ वि. सं. २०५६मे *मैथिली गद्य-सङ्ग्रह* प्रकाशित भेल छल। आस करी जे ई शब्दकोश-ग्रन्थ-रत्नाकर प्रज्ञा-प्रतिष्ठानसँ प्रकाशित मैथिलीक पूर्व दुहु कृतिक सदृश दोष-ग्रस्त ओ त्रुटियुक्त नहि होएत। ओना *मैथिली गद्य-सङ्ग्रह*क संक्षिप्त समीक्षाकहेतु पाठकगण देखथि हमर आलेख (यादव २००२)।

पूर्वमे हम गोविन्द झाद्वारा संगृहीत *मैथिली शब्दकोश* (१९९२), जयकान्त मिश्रद्वारा संकलित *बृहत् मैथिली शब्दकोश* १-२ (१९७३, १९९५), एवम् मतिनाथ मिश्र विरचित *मैथिली शब्द कल्पद्रुम* (१९९८)-सन गौरवशाली शब्दकोश-ग्रन्थरत्नक समीक्षा लीखि चुकल छी (देखू यादव १९९४, १९९९, २०००)। ताहि आलेखसभमे प्रसङ्गवशात् भवनाथ मिश्र (१३२२ साल/१९१४-१५ ई.), दीनबन्धु झा (शाके १८७२/१९५० ई.), ग्रिअर्सन (१८८२, १८८४, १८८५), ह्योर्नले तथा ग्रिअर्सन (१८८५, १८८९), ट्रेल (१९७३), नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान (वि. सं. २०३०/१९७३-७४ ई.), एवम् डेभिस (१९८४)क अतिरिक्त अनेकहु शब्द-सङ्ग्रहकर्तालोकनिक (यथा: सुभद्र झा १९३९-४०, सुकुमार सेन १९४०-४४/१९६५, योगानन्द झा १९८८, प्रभृति) मैथिली शब्दकोशशास्त्रमे प्रदत्त वहुमूल्य ओ अप्रतिम अवदानक समुचित मूल्याङ्कन करैत सन्दर्भ सहित समीक्षात्मक टिप्पणी पर्यन्त प्रस्तुत कएल गेल छल। आ, जैं कि गोविन्द झाद्वारा सम्पादित ओ ई. १९९९मे प्रकाशित मैथिली-अङरेजी द्वैभाषिक *कल्याणी कोश (मैथिली-अंग्रेजी शब्द कोश)* नभेम्बर २८, १९९९क' महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह कल्याणी फाउण्डेशन, दरभंगाक परिसरमे हमरहि हाथेँ लोकार्पित भेल छल तैं हम एहि शब्दकोशक समीक्षा अद्यावधि नहि लिखल। ओना एहि मध्य मैथिलीक किछु आओरो

*आँजुर २३: ८१, २०१८, पृ. ३-११मे प्रकाशित।

अति उपयोगी शब्द-सङ्ग्रहसभ प्रकाशित भेल अछि, यथा: योगानन्द झाक '*बैंसक... सम्बन्धी शब्दावली*' (२००७) तथा *मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दा...* (२००९), एवम् रामदेव झाद्वारा पुर्नप्रकाशित *मैथिली शब्द-सञ्चय* (२०१४) — जे पूर्व... विज्ञप्ततः गोविन्द झा (१९९९)क *कल्याणी कोशक* आलोचना रूपैं ललित नारायण मिथि... विश्वविद्यालय, दरभंगाक *मैथिली* (विश्वविद्यालय मैथिली विभाग शोध-पत्रिका): ८, पृ... १३३-२४२मे प्रकाशित भेल छल (रामदेव झा २०१३)। एकगोट आओरो जानकारी ... डा. सैमुअल जौन्सनक १७५५ ई.क अङरेजी भाषाक प्रथम आधिकारिक शब्दकोश... प्रकाशनक मात्र ५२ वर्ष पश्चात् तत्कालीन ईष्ट इण्डिया कम्पनीक सर्जन-नौकरशाह ... स्कौटलैण्डक ग्लास्गोमे जन्मल Francis Buchanan द्वारा c.1807/08मे विरचि... ओ लण्डन शहरक सुविख्यात पुस्तकालयमे संगृहीत-सुरक्षित एकगोट दुष्प्राप्य, अद्वितीय, तथा ऐतिहासिक शब्द-सङ्ग्रहक हस्त-लिखित पाण्डुलिपिक छायाप्रति ओ digital disc सौभाग्यवश हमरा हालहि हस्तगत भेल अछि — जाहिमे अङरेजी भाषाक सङ्गहि *मिथिला* (अर्थात् मैथिली) ओ नेपाल तथा भारतक आन सातगोट भाषासभक पर्यायवाची शब्दसभ सन्निहित अछि। ध्यातव्य जे फ्रान्सिस ब्युकाननक तुलनात्मक शब्दसूचीक एहि ऐतिहासिक हस्त-लिखित पाण्डुलिपिमादे २०१८ ई.क गृष्म ऋतुमे उच्च-स्तरीय अध्ययन-अनुसन्धान कार्य करबाकहेतु Alexander-von-Humboldt Foundation, Bonn, Germanyसँ हमरा (पाँचम बेरि) Senior Visiting Research Fellowship प्रदान कएल जएबाक सूचना २०१७ ई.क औक्टोबर मासहिमध्य सम्प्राप्त भ' गेल अछि — जे हमरालेल अत्यन्त गौरवक विषय थिक। एहि अध्ययन-अनुसन्धान कार्य पश्चात् ई सिद्ध भ' जाएत जे वस्तुत: मैथिली भाषाक पहिल शब्द-सङ्ग्रहकर्त्ता S. W. Fallon — जनिक *A New Hindustani-English Dictionary* (1879)मे भारतक पंजाबसँ बिहारधरिक कुल आठ भाषाक सङ्गहि *तिरहुती* (अर्थात् मैथिली)क शब्दसभ सम्भवत: पहिलि बेरि समाहित भेल अछि — वा George Abraham Grierson - जनिक *An Introduction to the Maithilī Language of North Bihār, Part II, Chrestomathy and Vocabulary (1882)*मे *विद्यापतिक पदावली*मे प्रयुक्त सभ शब्द सङ्कलित अछि, — वा George Abraham Grierson (1884) - जनिक "Index to Manbodh's Haribans" शीर्षकक आलेखमे प्रसिद्ध कवि मनबोधक *हरिवंश काव्य*मे - जे पछाति *कृष्णजन्म* शीर्षककसँ प्रसिद्धि पओने अछि — प्रयुक्त सभ शब्द सङ्कलित अछि — नहि, अपितु स्कौटल्याण्डक ग्लास्गोमे जन्मल आ ईष्ट इण्डिया कम्पनीमे सर्जनसँ सर्भेयर भेल Francis Buchanan (c. 1807/08) छथि।

प्रस्तुत आलेखक प्रतिपाद्य विषय नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान, काठमाण्डूसँ वि. सं. २०७३/२०१७ ई.मे प्रकाशित *प्रमैनेअशक* संक्षिप्त समीक्षात्मक विवरण प्रस्तुत करब थिक।

२. कृति परिचय

की सभ अछि त' नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानक प्राज्ञ-परिषदसँ स्वीकृत, भाषिक-परियोजना अनुरूप अनुमोदित, एवम् नेपाल सरकारक राजस्व तथा आम करदाताक द्रव्यसँ परिनिर्मित एहि *प्रमैनेअश*मे? आ तहिना, मैथिली भाषाक शब्द-सङ्ग्रह/शब्दकोश-निर्माणक २१० वर्षक सुदीर्घ पाश्चात्य ओ पौरस्त्य परम्परामे एहि शब्दकोशक अपन स्थान, निजत्व ओ वैशिष्ट्य की? कुल ५४ पृष्ठक पूर्व-कथनमे जे विषयवस्तुसभ समाविष्ट भेल पाओल गेल अछि तकर संक्षिप्त वर्णन-विश्लेषण-समीक्षा निचाँ प्रस्तुत अछि।

एक, प्रज्ञा-प्रतिष्ठानक कुलपति महोदयक कुल १ पृष्ठक *'मन्तव्य'* क्रमश: मैथिली, नेपाली, एवम् अङरेजी भाषामे (पृ. i-iii) प्रस्तुत भेल अछि — जाहिमे ई जानकारी देल गेल अछि जे *प्रमैनेअश* प्रज्ञा-प्रतिष्ठानक भाषिक योजना अन्तर्गत प्रा. डा. योगेन्द्र प्रसाद यादवद्वारा तैयार कएल गेल अछि। सङ्गहि हुनक असीम अनुकम्पापूर्ण उद्‌गार जे "ई शब्दकोश सम्बन्धित भाषिक एवं सांस्कृतिक समूहसँ अनुमोदित हएत से अपेक्षा करैत छी" (पृ. i) सेहो व्यक्त भेल अछि।

दुइ, प्रज्ञा-प्रतिष्ठानक उपकुलपतिजीक *'प्रकाशकीय'* सेहो क्रमश: मैथिली, नेपाली, एवम् अङरेजी भाषामे प्रस्तुत भेल अछि — जाहिमे पुन: ई सूचना प्रवाहित कएल गेल अछि जे "... प्रा. डा. योगेन्द्र प्रसाद यादव एकर निर्माण एवं सम्पादन कएने छथि" (पृ. iv)। सङ्गहि हुनक प्रबल उद्‌गार जे "... मातृभाषाक सुगन्धसँ नेपाली धर्ती मगमगाइत रहौ" (पृ. iv) सेहो व्यक्त भेल अछि।
प्रज्ञा-प्रतिष्ठानक कुलपति ओ उपकुलपतिसहितक स्पष्ट स्वीकारोक्ति एवम् एहि शब्दकोशमादे सभ दुरूह काज अति निपुणतापूर्वक सुसम्पन्न कएलहुसन्ताँ, शब्दकोशशास्त्र-प्रवीण प्रा. डा. योगेन्द्र प्रसाद यादव प्रमैनेअशक आधिकारिक "सङ्कलयिता" वा "सम्पादक" एहि दुहु विशेषणसँ अभिमण्डित होएबासँ वञ्चित कएल गेल छथि — जे अत्यन्त आश्चर्य ओ विस्मादक विषय थिक।

तीनि, मैथिली, नेपाली, ओ अङरेजी भाषामे प्रस्तुत *'कृतज्ञता-ज्ञापन*'मे प्रा. डा. योगेन्द्र प्रसाद यादव स्वभावत: पारम्परिक मर्यादाक निर्वाह करैत सहयोगीजनप्रति धन्यवाद तथा कृतज्ञता ज्ञापन करैत छथि। एहि ठाम मात्र एकहि बातदिसि ध्यानाकर्षण कराए चाहब जे गोविन्द झाद्वारा सम्पादित ओ १९९९मे प्रकाशित मैथिली-अङरेजी द्वैभाषिक *कल्याणी कोश* (*मैथिली-अंग्रेजी शब्द कोश*)क प्रकाशन-वर्षक सन्दर्भ-सूचना टाइपक अशुद्धिक कारणेँ तीनहु भाषामे भ्रमवशात् १९८८ ई. मुद्रित भेल अछि। तहिना, "अन्टोलोजीक आधार पर शब्द संकलन करबाक लेल..." (पृ. vii) वाक्यांशमे व्यवहृत अङरेजी

Marker रूपैँ छपल अछि। एतबहि नहि, आर्थी क्षेत्र अन्तर्गत पृ. xiiiमे **राजनितिक**, पृ. xviमे **राजनीतिक**, एवम् पृ. xviiiमे पुनः **राजनितिक** रूपैँ छपल अछि।

पृ. xiiमे इहो कहल गेल अछि जे मैथिली शब्द-प्रविष्टिक रोमन लिपिमे आलेखन "अन्तर्राष्ट्रिय मान्यता अनुसार" प्रस्तुत कएल गेल अछि, यथा: **क्रिया [kriyā]**। एहि मादे एखन एतबहि जे भाषाविज्ञानक पहिल कक्षाक छात्रहुकेँ ई बात ज्ञात छैन्हि जे कोनहु शब्दक उच्चारण बोध करएबाक प्रयोजनहेतु [ ] एवम् तकर रोमन ओ कोनहु आनहु लिपिमे लिप्यन्तरण/आलेखन बोध करएबाकहेतु < > चिह्नक प्रयोग अन्तर्राष्ट्रिय जगतमे मान्य अछि। ताहि हेतुएँ **क्रिया [kriya]** होएबाक चाहैत छल न तु **[kriyā]**। ओना कतेकहु नामवर शब्दकोश-निर्माता एहि झंझटसँ पूर्णतः विलग रहैत छथि, यथा: गोविन्द झा (१९९९: १३५ **क्रिया kriyā n...**)। हँ एहि शब्दक उच्चारण वास्ते [kri-ya] उचित, किन्तु दुर्भाग्यवश एहि शब्दकोशमे मैथिली शब्दक उच्चारण-ज्ञानक पूर्ण तिरस्कार कएल गेल अछि। वस्तुतः मैथिली शब्द-प्रविष्टिक परिचितिहेतु उपर सुझाओल गेल सिद्धान्तक कठोर पालन सम्पूर्ण *प्रमैनेअशक* यावत् प्रविष्टिकहेतु सर्वत्र निर्बाध रूपैँ होएबाक चाहैत छल। दुर्भाग्यवश से भेल नहि अछि।

आ एकगोट आओरो जानकारी दी: मैथिली ध्वनिशास्त्रमे (आ नेपालीमे सेहो) [ā] ध्वनिक वर्णन सर्वथा अनुपलब्ध अछि किएक त' एहि भाषामे [a] ओ [ā]मे ध्वनितात्त्विक तथा स्वनिमिक वैषम्यक (phonological contrast) विद्यमानता नहि अछि, तेँ [a] प्रशस्त, [*ā] अग्राह्य। हँ रोमन लिपिमे आलेखित करएकाल <a> ~ <ā> तथा देवनागरी लिपिमे लिखए काल <अ ~ आ < वैषम्यक परिचिति सर्वत्र प्राप्य ओ सर्वसम्मत रूपैँ मान्य अछि।

अन्ततः, एहि परिच्छेदमे प्रूफरीडिङ्गगत लापरवाहीक पराकाष्ठा तखन परिलक्षित होइत अछि जखन मैथिली भाषाक माध्यमैं लिखल अंशमे नेपाली भाषामे लिखल शीर्षक **तालिका ५: आर्थी क्षेत्रहरू** (पृ. xiii) (जे वस्तुतः **तालिका ४** होएबाक चाहैत छल) एवम् पुनः अङरेजी भाषाक माध्यमैं लिखल अंशमे पर्यन्त नेपाली भाषामे लिखल **सबै प्रविष्टिको अङ्ग्रेजी अर्थलाई यसको व्याकरणिक जानकारी पछि राखिएको छ...** (पृ. xviii) सन नेपाली वाक्यांश एकाएक दृष्टिगत होइत अछि।

पाँच, मैथिली, नेपाली, ओ अङरेजीसहित तीनहु भाषामे प्रस्तुत '*समकालीन मैथिली भाषा: परिवेश आर विशेषता*' (पृ. xix-liv) शीर्षकक सभसँ नमहर आ दमगर निबन्धमे मैथिली भाषाक अधिकाधिक पक्षमादे अनेकहु वहुमूल्य, विद्वत्तापूर्ण, आधिकारिक, ओ अद्यावधिक जानकारी प्रस्तुत कएल गेल अछि - **जाहिलेल प्रा. डा. योगेन्द्र प्रसाद यादव कोटिशः धन्यवादक पात्र थिकाह**। ओना नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानद्वारा एकगोट सुयोग्य एवम् मैथिली-मर्मज्ञ प्रूफरीडरक सहयोग नहि लेलासन्ताँ (बुझि तहिना पड़ैत

Bickel, Balthasar, Walter Bisang & Yogendra P. Yadava (1999)
Bickel, Balthasar & Yogendra P. Yadava (2000)
Brown, Penelope & Stephen C. Levison (1987)
Chomsky, N. (1995)
Stump, Gregory T. & Ramawatar Yadav (1988)
Kuno, Susumo (1987)
Yadava (1999a, b, 2000, 2003, 2005, 2007), आदि आदि।

(घ) कखनहु अशुद्ध ज्ञानक सम्प्रेषण सेहो भेल अछि, यथा:

जयकान्त मिश्र संकलित (१९७३, १९९५) *बृहत् मैथिली शब्दकोशक* मात्र दुइ Fascicules सिमलासँ अद्यावधि प्रकाशित भेल अछि, न तु 'three volumes' — जेना कि पृ. xliiiमे कहल गेल अछि।

(ङ) कतेकहु बहुचर्चित कृतिक शीर्षक अशुद्ध ओ अपूर्ण तथा तकर सन्दर्भगत विवरण सेहो अशुद्ध रूपेँ प्रस्तुत कएल गेल अछि, यथा:

अछि: Grierson (1981) (p. xxxix)
होएबाक चाहैत छल: Grierson (1881)
अछि: Bihar's Peasant Life (p. xliii)
होएबाक चाहैत छल: Bihar Peasant Life
अछि: G. Jha 1999 Maithili-English Dictionary, Darbahanga: Maithili Akademi (पृ. liii)
होएबाक चाहैत छल: Jha, G. 1999 Kalyani Kosh: Maithili-English Dictionary, Darbhanga: Maharajadhiraja Kameshwar Singh Kalyani Foundation
अछि: Yadav, R. also 1976 Doctoral Dissertation, Mainz: University of Mainz (पृ. liv)
होएबाक चाहैत छल: Yadav, R. 1979 Maithili Phonetics and Phonology, Doctoral Dissertation, University of Kansas, Lawrence, USA
वस्तुत: Yadav, R. 1976क सही सन्दर्भ निम्नानुसार अछि: Yadav, R. 1976 "Generative phonology and the aspirated consonants of Colloquial Maithili," *Contributions to Nepalese Studies* 4: 1, 77-91

अछि) एहि अध्यायमे मैथिली भाषागत विषय-वस्तुक प्रस्तुतिक जे चरम दुर्गति भेल अछि से परम अशोभनीय त' अछिए आ असहनीय सेहो। **आ तहिना प्रा. डा. योगेन्द्र प्रसाद यादवक प्रतिष्ठा-हानि ओ मान-मर्दन त' भेल छैन्हिए।**

एहि अध्यायमे उपलब्ध प्रस्तुतिगत (तथ्यगत नहि) अनन्त त्रुटिसभक पूर्ण फिहरिस्त साध्य नहि। ताहि कारणेँ मूलतः अङरेजी भाषाक माध्यमेँ लिखल विवरण (पृ. xxxix-liv) उपलब्ध आ उग्र रूपेण असह्य त्रुटिसभक मात्र उल्लेख होएत; मैथिली तथा नेपाली अंशसँ कुछेक त्रुटिसभक मात्र उद्धरण होएत।

(क) अङरेजी भाषाक माध्यमेँ लिखल निबन्धमे स्पष्ट रूपेण उल्लिखित/सन्दर्भित अनेकहु मान्य विद्वानसभक नाम ओ हुनक कृतिसभक सन्दर्भगत पूर्ण विवरण दुर्भागयवशात् *References*मे अनुपलब्ध अछि; एहिसँ मैथिलीक अध्येतालोकनि सं सन्दर्भ-ज्ञानसँ पूर्ण रूपेण वञ्चित होइत छथि, यथा:

Chatterji (1926), Turner (1931), Govind Jha (1968, 1974, 1979), Colebrooke (1801), Masica (1991), Trail (1973), Royal Nepal Academy (V.S. 2030/1973-74 CE), Grierson (1882, 1885), Hoernle & Grierson (1885, 1889), Dinabandhu Jha (1946, 1950), Yadava (2011), Yadava & Mahato (2012), Hugoniot/Hugioniot ? (1997), Yadav (1989, 2014), Constitution of Nepal (1991, 2015), Hoernle (1880), Kellogg (1893), Davis (1973), Williams (1973), Shaeffer (2007), Singh (1989), Burghart (1992, In Progress), आदि आदि।

(ख) अति लब्ध-प्रतिष्ठित विद्वानसभक नामहु अशुद्ध रूपेँ लिखल पाओल जाइत अछि, यथा:

अछि: Chatterjee (S. K.) पृ. (xxxix)
होएबाक चाहैत छल: Chatterji (S. K.)
अछि: Hornle (A. F. R.) पृ. (xxxix, xliii)
होएबाक चाहैत छल: Hoernle (A. F. R.)
अछि: Jaya Kanta Mishra पृ. (xliii)
होएबाक चाहैत छल: Jayakanta Mishra

(ग) *References*मे किछु एहनो प्रतिष्ठित भाषावैज्ञानिकसभक नाम ओ कृति उतारि देल गेल अछि जनिकर सन्दर्भ-सङ्केत निबन्धमे सर्वथा अनुपलब्ध अछि, यथा:

Bickel, Balthasar, Walter Bisang & Yogendra P. Yadava (1999)
Bickel, Balthasar & Yogendra P. Yadava (2000)
Brown, Penelope & Stephen C. Levison (1987)
Chomsky, N. (1995)
Stump, Gregory T. & Ramawatar Yadav (1988)
Kuno, Susumo (1987)
Yadava (1999a, b, 2000, 2003, 2005, 2007), आदि आदि।

(घ) कखनहु अशुद्ध ज्ञानक सम्प्रेषण सेहो भेल अछि, यथा:

जयकान्त मिश्र संकलित (१९७३, १९९५) *बृहत् मैथिली शब्दकोशक* मात्र दुइ Fascicules सिमलासँ अद्यावधि प्रकाशित भेल अछि, न तु 'three volumes' — जेना कि पृ. xliiiमे कहल गेल अछि।

(ङ) कतेकहु बहुचर्चित कृतिक शीर्षक अशुद्ध ओ अपूर्ण तथा तकर सन्दर्भगत विवरण सेहो अशुद्ध रूपेँ प्रस्तुत कएल गेल अछि, यथा:

अछि: Grierson (1981) (p. xxxix)
होएबाक चाहैत छल: Grierson (1881)
अछि: Bihar's Peasant Life (p. xliii)
होएबाक चाहैत छल: Bihar Peasant Life
अछि: G. Jha 1999 Maithili-English Dictionary, Darbahanga: Maithili Akademi (पृ. liii)
होएबाक चाहैत छल: Jha, G. 1999 Kalyani Kosh: Maithili-English Dictionary, Darbhanga: Maharajadhiraja Kameshwar Singh Kalyani Foundation
अछि: Yadav, R. also 1976 Doctoral Dissertation, Mainz: University of Mainz (पृ. liv)
होएबाक चाहैत छल: Yadav, R. 1979 Maithili Phonetics and Phonology, Doctoral Dissertation, University of Kansas, Lawrence, USA
वस्तुतः Yadav, R. 1976क सही सन्दर्भ निम्नानुसार अछि: Yadav, R. 1976 "Generative phonology and the aspirated consonants of Colloquial Maithili," *Contributions to Nepalese Studies* 4: 1, 77-91

(च) अर्वाचीन ओ पौरस्त्य आ पाश्चात्य दुहु ज्ञान-पद्धतिक पारम्परिक मर्यादाक निर्वाह नहि कए मैथिली शब्दकोश ओ शब्द-सङ्ग्रहमादे प्रज्ञा-प्रतिष्ठानहुसँ पूर्व-प्रकाशित कृतिसभप्रति पूर्ण अनास्था प्रदर्शित कएल गेल अछि, अर्थात् प्रज्ञा-प्रतिष्ठानसँ पूर्व-प्रकाशित स्वयं शब्दकोशकारक ओ अन्य महानुभावक कतिपय महत्त्वपूर्ण कृतिसभक उल्लेखहु अप्राप्य अछि एहि *प्रमैनेअशक* पूर्व-कथनमे प्रस्तुत *References*मे, यथा:

१. Yadava, Yogendra P. & T. R. Kansakar (eds. 1998) *Lexicography in Nepal: Proceedings of the Institute on Lexicography,* Kathmandu: Royal Nepal Academy.
२. यादव, रामावतार १९९७ "मैथिली शब्दकोश ओ शब्दसंग्रह: ऐतिहासिक सर्वेक्षण," *सयपत्री* (नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान) ३: ३, ६२-७२।
३. Yadav, Ramawatar 1998 "Maithili dictionaries and lexical studies," In: Yadava & Kansakar (eds. 1998), pp. 75-80.
४. Yadav, Ramawatar 1999 "Review of Jayakanta Mishra (1973, 1995) *Bṛhat Maïthilī Śabdakośa 1-2,*" *Journal of Nepalese Studies* (Royal Nepal Academy) 3: 1, 129-137.

ततबहि नहि, स्यम् कोशकारसहितक प्रकाशित लेखसभक सन्दर्भ-ज्ञान अपूर्ण अछि: कतहु जर्नलक अङ्क संख्या ओ पृष्ठ संख्याक उल्लेख अप्राप्य अछि, यथा: Bickel & Yadava 2000 (p. liii) त' अन्यत्र Yadavaक प्रकाशित लेखसभक पृष्ठ संख्याक उल्लेख सर्वथा अप्राप्य अछि (p. liv) - जे अशोभनीय अछि। आ, पूर्ण विराम चिह्न नहि देब जेना नीक बात होइक (p. liii-liv)।

(छ) मैथिली भाषाक माध्यमेँ लिखल गेल निबन्धमे पाओल गेल कुछेक गम्भीर त्रुटिसभदिसि मात्र ध्यानाकर्षण कएल जाइत अछि:

अछि: ट्रेल (१९६३ ई.) (पृ. xxiv)
होएबाक चाहैत छल: ट्रेल (१९७३ ई.)
अछि: जयकान्त मिश्र (१९६३ ई.) (पृ. xxiv)
होएबाक चाहैत छल: जयकान्त मिश्र (१९७३ ई.)
अछि: ...१० मौखिक स्वर वर्ण (पृ. xxvi)
होएबाक चाहैत छल: ...८ मौखिक स्वर वर्ण

(पृ. xxvi)मे कहल गेल अछि जे ...**तालिका** २मे उल्लेखित **आठो स्वरवर्ण**... (हैं ई जानकारी सही अछि), परञ्च तथाकथित तालिका २ एहि निबन्धभरिमे कतहु उपलब्ध नहि अछि; संभवत: राखब छुटि गेल अछि।

(ज) नेपाली भाषाक माध्यमेँ लिखल गेल निबन्धमे सेहो उपर्युक्त त्रुटिसभक प्रचुर विद्यमानता स्पष्ट रूपेण परिलक्षित होइत अछि, ताहि हेतुएँ तकर अनावश्यक पिष्टपेषण/पुनरावृत्ति समीचीन नहि। एकहिगोट उदाहरण प्रशस्त होएत:

अछि: ... दीनबन्धु झा (१९५० ई.) को *मिथिला भाषा कोश* ... (पृ. xxxiv)
होएबाक चाहैत छल: दीनबन्धु झा (शाके १८७२/१९५० ई.) ... *मिथिलाभाषाकोष* ...

३. मैथिली-नेपाली-अङग्रेजी शब्दकोश (पृ. १-५७०)

सामान्यत: वैश्विक स्तरपर कोनहु भाषाक शब्दकोशक मूल प्रविष्टिमे अधिकतम रूपेँ निम्न जानकारीसभ देबाक प्रचलन विद्यमान अछि: वर्तनी/हिज्जे आ उच्चारण, व्याकरणिक पदकोटि, अर्थ, व्याख्यागत वाक्य ओ चित्रादि, परस्पर-सन्दर्भन, व्युत्पत्ति, रूपभेद, साधित/व्युत्पादित रूप, मुहावरा/लोकोक्ति, पर्यायवाची शब्द, विपरीतार्थक शब्द, आदि आदि। स्पष्टत: मैथिली भाषाकेँ "*श्रोत भाषा*" ("*लक्ष्य भाषा*" नहि) मानि निर्मित एहि शब्दकोशमे प्रयुक्त मैथिली शब्द-प्रविष्टिद' उपर्युक्त सभ वस्तुक जानकारी देब *प्रमैनेअशक* ध्येय नहि अछि। ताहि हेतुएँ, एहि परिच्छेदमे *प्रमैनेअश*मे प्रयुक्त मैथिली शब्द-प्रविष्टिसभक चयन, तकर स्वरूप अर्थात् वर्तनी/हिज्जे, ओ विशेषत: तकर रोमन लिपिमे लिप्यन्तरण/आलेखन विधिद' मात्र संक्षेपमे सोदाहरण चर्च कएल जाएत; सङ्गहि देवनागरी लिपिमे प्रयुक्त अनुस्वार ओ चन्द्रविन्दुक रोमन लिपिमे लिप्यन्तरण/आलेखन विधिमादे कनेक बेकछाक' चर्च होएत।

मैथिली शब्दकोशशास्त्रमे *प्रमैनेअशक* विलक्षण योगदानक पुष्टि एहिमे प्रयुक्त मैथिली शब्द-प्रविष्टिसभक स्वस्थ चयनसँ सिद्ध होइत अछि, अर्थात् एहिमे मात्र बभनाह आ सोतिआइनक गंध नहि (जकर आभास पूर्व-प्रकाशित अनेकहु शब्दकोशमे सहजहि प्रतीत होइत अछि) अपितु आम मैथिलजनक बोलचालक भाषाक स्वरूप पर्यन्त परिलक्षित होइत अछि। ओना मैथिली शब्द भंडारकेँ आओरो बेसी समृद्ध करबाकहेतु कतिपय अति ग्रन्थिल संस्कृताह शब्दक चयन सेहो भेल अछि: एकाधहि उदाहरण प्रशस्त होएत, यथा: *अंगुल्यास्थि, अंत:क्षेफण* (पृ. १), *अवक्षेपण प्रतिक्रिया* - जकर अर्थहु 'अवक्षेपण प्रतिक्रिया' (पृ. ६१) सएह देल गेल अछि -, आदि आदि।

जयकान्त मिश्र (१९७३, १९९५) सदृश एहु शब्दकोशमे मैथिली शब्द-प्रविष्टिसभक वैकल्पिक स्वरूप/रूपभेदकेँ स्वतंत्र शब्दक सत्तासँ अभिमंडित कए पूर्ण प्रविष्टिरूपेँ स्थापित कएदेलासन्ताँ पुनरावृत्तिक दोषक कारणेँ एहि शब्दकोशक आकार-

प्रकारमे अस्वाभाविक वृद्धि भए स्वभावत: तथाकथित २७,००० मैथिली शब्द-प्रविष्टि संख्याक परिगणनमे पर्यन्त कृत्रिम अभिवृद्धि भेल अछि — जे एहि शब्दकोशक त्रुटि रूपेँ परिगणित होएत, यथा: *अउँठा, अउँठी* (पृ. २) vs. *आँठा, आँठी, आँउठा* (?), *आँउठी* (?) (पृ. १२२), *अकल* (पृ. ३) vs. *अकिल* (पृ. ४) आदि आदि। ध्यातव्य जे जयकान्त मिश्रक दोषसँ दीनबन्धु झा, गोविन्द झा, मतिनाथ मिश्र सामान्यत: वञ्चित छथि। परस्पर-सन्दर्भ विधिसँ — जकर प्रयोग एहि शब्दकोशमे स्मित रूपेँ भेल अछि — एवम् मूल प्रविष्टि अन्तर्गत कोष्ठक मध्य अन्य वैकल्पिक स्वरूपसभकेँ समाहित कए देलासन्ताँ पाणिनीक सूत्रमे अपनाओल गेल Economy सिद्धान्तक परिपालन भए सकैत छल। फलस्वरूप, सहजहि *प्रमैनेअश* दोषमुक्त सेहो भ' जाइत।

जेना कि पूर्वमे सङ्केत कएल गेल अछि, *प्रमैनेअशक* स्तरमे स्खलन अएबाक एकगोट मूल कारण एहिमे प्रयुक्त रोमन लिप्यन्तरण विधि अछि। **कुछेक उदाहरण प्रशस्त होएत**। रोमन लिपिक वर्णपर देवनागरी लिपिक diacritic चन्द्रविन्दुक प्रयोग हमरा देखल नहि अछि m̐ : भारतीय आर्यभाषाक भाषावैज्ञानिक वा शब्दकोशशास्त्रीय साहित्यमे देवनागरी लिपिसँ रोमन लिपिमे लिप्यन्तरण करबाकाल स्वर वर्णमे सानुनासिकता बोध करएबाकलेल कि त' स्वर वर्णपर tilde daicriticक प्रयोग, जेना कि पृ. १मे प्रविष्टि *अँड़कोस* ā̃rkos — जकर वर्णानुक्रम चोट्टहि *अ-* शब्द-प्रविष्टिक पाछाँ नहि किंवा *अँड़पेना* प्रविष्टिसँ पूर्व होएबाक चाहैत छल — सँ *अँत्ता* ā̃ttā धरि उचितहि कएल गेल अछि, वा स्वर वर्ण पश्चात् चोट्टहि m व्यञ्जनक निचाँ ṃ वा ṁ व्यञ्जनक उपर dot देबाक प्रचलन अछि, न तु चन्द्रविन्दु। ध्यातव्य जे एहने प्रविष्टि-वर्णानुक्रमगत त्रुटिसँ मतिनाथ मिश्र (१९९८) पर्यन्त वञ्चित नहि छथि (देखू यादव २०००, पृ. ९०, झा २०१०, पृ. १२६)। ताहि हेतुएँ, कोन फल विचारि, शब्दकोशकार पृ. २मे एकाएक *अउँगही, अउँठा, अउँठी* प्रविष्टिक रोमन लिप्यन्तरण a'um̐gahī, a'um̐ṭhā, a'um̐ṭhī रूपेँ कएल से स्पष्ट नहि अछि। होएबाक चाहैत छल: aũgahī/auṁgahī, aũṭhā/auṁṭhā, aũṭhī/auṁṭhī। तहिना, मैथिली शब्दप्रविष्टिक उच्चारणमादे ई शब्दकोश मूलत: मूक रहबाक अवस्थितिमे, सामान्यत: ध्वन्यात्मक बलाघातहेतु प्रयुक्त diacritic ' कोना उपर्युक्त उदाहरणसभमे वा अन्यत्र सर्वत्र अनपेक्षित रूपेँ घुसि आएल से बुझना नहि जाइत अछि। तहिना, पाठकगणकेँ ज्ञात छैन्हिए जे नासिक्य ध्वनिक उच्चारण देखएबाकाल square brackets अन्तर्गत स्वर वर्णपर tilde daicriticक प्रयोग सार्वजनीन अछि, यथा [ã ā̃ ĩ ī̃ ũ ū̃]।

हद त तखन होइत अछि जखन पृ. १२२मे देवनागरी लिपिमे *आँउठा, आँउठी* सन प्रविष्टि दृष्टिपथपर अबैत अछि - जाहिमे शब्दमध्यक -उ- अक्षर फालतू (redundant) अछि। आ, *आँठा* प्रविष्टि रोमन लिपिमे दू फराक तरहेँ प्रस्तुत भेल पाओल जाइत अछि: a'um̐ṭhā ओ aunṭhā जाहिसँ पाठकगण भ्रमित होइत छथि, वस्तुत: aunṭhāक देवनागरी लिप्यन्तरण *औण्ठा* प्रविष्टि भ' जाएत जे ई अछि नहि। एतए ध्यातव्य जे *कण्ठ* (दुर्भाग्यवश ई प्रविष्टि *प्रमैनेअशमे* अनुपलब्ध अछि) ओ *कण्ठ्य* (एहि शब्दकोशमे *कंठ्य* अछि) सन प्रविष्टिक रोमन लिप्यन्तरणधरि kanṭha, kanṭhya जकाँ होएब समुचित। एतादृश अन्यत्रहु बुझी। अलमतिविस्तरेण।

४. उपसंहार

उपसंहारवत् मात्र तीनि-चारिगोट बात — अत्यन्त संक्षेपमे।

प्रथमत:, *प्रमैनेअशक* मुखपृष्ठपरक अङरेजी शीर्षकमे प्रयुक्त शब्द Prajña ओ अन्त:पृष्ठमे प्रस्तुत अङरेजी शीर्षकमे प्रयुक्त शब्द Prajñāमे तादात्म्यक अभाव अछि — जे असतर्कता/आलस्य/लापरवाहीक पराकाष्ठाक स्पष्ट द्योतक अछि। स्मरणीय जे प्रज्ञा-प्रतिष्ठानहिसँ आइसँ १८ वर्ष पूर्व प्रकाशित रामदयाल राकेशक (वि. सं. २०५६/१९९९ ई.) गौरवशाली ग्रन्थहुक मुखपृष्ठपरक शीर्षक *मैथिली* [sic] *संस्कृति* ओ अन्त:पृष्ठमे प्रस्तुत शीर्षक *मैथिल संस्कृति*मे तादात्म्यक अभाव तहिना देखना जाइत अछि - जे अवाञ्छनीय अछि। सङ्गहि, **'विषयसूची'** (पृ. x) अन्तर्गत **नेपाली-मैथिली शब्दसूचीक** प्रारम्भक पृष्ठ संख्या ५०२ देल गेल अछि जे वस्तुत: पृ. ५७१ होएबाक चाहैत छल, आ तहिना **अङग्रेजी-मैथिली शब्दसूचीक** प्रारम्भक पृष्ठ संख्या ५८२ देल गेल अछि जे वस्तुत: पृ. ६६१ होएबाक चाहैत छल। निस्सन्देह एहि कृत्यसभसँ *प्रमैनेअशक* गरिमामे प्रशस्त ह्रास अबैत अछि।

द्वितीयत:, पूर्वमे हम अपन प्रकाशित आलेखसभमे मैथिली भाषाक शब्दकोशशास्त्र विधा अद्यावधि अति क्षीण ओ उपेक्षित भेलासँ मन विखिन्न होएबाक विचार अभिव्यक्त कएने छलहुँ; दुर्भाग्यवश, हम एखनहूँ एहि विचारमे दृढ़ छी।

तृतीयत:, एतबहि कहब प्रशस्त होएत जे *प्रमैनेअश* नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानक समादरणीय कुलपति महोदयक सेहन्ता (पृ. i) पूरा करबाक सत्प्रयासमे संभवत: कनेक क्षीण ने सिद्ध भ' जाए।

चतुर्थत: ओ अन्तत:, अत्यन्त प्रसन्नताक गप जे नेपाली ओ अङरेजी सिखनिहार मैथिली-भाषीजन तथा अनुवादकलोकनिकेँ एहि *प्रमैनेअशक* साहाय्यसँ प्रशस्त लाभ प्राप्त होएतैन्हि आ ताहि हेतु **ओलोकनि शब्दकोशकार प्रा. डा. योगेन्द्र प्रसाद यादवप्रति सदैव ऋणी रहताह** से हमर विश्वस्त धारणा अछि।

सन्दर्भ सूची

झा, गोविन्द (सं. १९९२) *मैथिली शब्दकोश-१*, पटना: मैथिली अकादमी।

झा, गोविन्द (सं. १९९९) *कल्याणी कोश (मैथिली-अंग्रेजी शब्द कोश)*, दरभंगा: महाराजाधिराज कामेश्वर सिं कल्याणी फाउण्डेशन।

झा, गोविन्द (२०१०) "मैथिली शब्दकोशक परम्परा," मे: गोविन्द झा (२०१०) *अनुचिन्तन*, पटना: नवारम

झा, गोविन्द (२०१६) "डा. रामदेव झाक शब्द-सन्धान," *घर-बाहर* १६: ५७, ४५-४६।

झा, दीनबन्धु (शाके १८७२/१९५० ई.) *मिथिलाभाषाकोष*, इसहपुर: दीनबन्धु झा।

झा, योगानन्द (१९८८) "देशीनाममाला ओ मैथिली," *भाखा* (मैथिली मासिक, पटना) २: १०, ४८-५

झा, योगानन्द (२००७) "बँसकरम सम्बन्धी शब्दावली," मे: योगानन्द झा (२००७) *लोक, साहित्य ओ शब्द सम्पदा*, कबिलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा: मिथिला रिसर्च सोसाइटी, पृ. १२३-१३६।

झा, योगानन्द (२००९) *मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दावली*, कबिलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा मिथिला रिसर्च सोसाइटी।

झा, रामदेव (२०१३) "मैथिली: परिशिष्ट शब्द सञ्चय," *मैथिली* (ल. ना. मि. विश्वविद्यालय मैथिली विभाग शोध-पत्रिका): ८, १३३-२४२।

झा, रामदेव (२०१४) *मैथिली शब्द-सञ्चय*, कबिलपुर-लहेरियासराय-दरभंगा: मिथिला रिसर्च सोसाइटी।

नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान (वि. सं २०३०/१९७३-७४ ई.) *पर्यायवाची शब्दकोश*, काठमाण्डू।

मिश्र, जयकान्त (१९७३) *बृहत् मैथिली शब्दकोश-१*, सिमला: इण्डिअन इन्स्टिच्यूट अफ एडभान्स्ड स्टडी।

मिश्र, जयकान्त (१९९५) *बृहत् मैथिली शब्दकोश-२*, सिमला: इण्डिअन इन्स्टिच्यूट अफ एडभान्स्ड स्टडी।

मिश्र, भवनाथ (१३२२ साल/१९१४-१५ ई.) *मिथिला शब्द प्रकाशः*, काशी: श्री भूपालचन्द्र वन्दोपाध्याय।

मिश्र, मतिनाथ (१९९८) *मैथिली शब्द कल्पद्रुम*, जमुथरि-झंझारपुर-मधुबनी: मिश्र वन्धु प्रकाशन।

यादव, रामावतार (१९९४) "गोविन्द झाक मैथिली शब्दकोश पढला सन्ताँ," *मिथिला वाणी* (जनकपुर) १: ३, १-१४।

यादव, रामावतार (वि. सं २०५४/१९९७ ई). "मैथिली शब्दकोश ओ शब्दसंग्रह: ऐतिहासिक सर्वेक्षण," *सयपत्र* (नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान) ३: ३, ६२-७२।

यादव, रामावतार (२०००) "मैथिली शब्द कल्पद्रुम: एक समीक्षा," *भारती मण्डन* (सुपौल, सहरसा): ७, ११०-११५।

यादव, रामावतार (२००२) "*मैथिली गद्य-सङ्ग्रह*: एक विहङ्गावलोकन," *मिथिला समाज* (काठमाण्डू) ८: १, २४-२९।

Davis, Alice I. (1984) *Basic Colloquial Maithili (A Maithili-Nepali-English Vocabulary)*, Delhi: Motilal Banarsidass.

Fallon, S. W. (1879) *A New Hindustani-English Dictionary*, London; Truebner & Co, (Reprinted by the Uttar Pradesh Urdu Akademi, Lucknow, 1954)

Grierson, George Abraham (1881) *An Introduction to the Maithilī Language of North Bihār, Part 1, 'Grammar'*, Calcutta: Asiatic Society of Bengal.

Grierson, George Abraham (1882) *An Introduction to the Maithilī Language of North Bihār, Part II, Chrestomathy and Vocabulary*, Calcutta: Asiatic Society of Bengal.

Grierson, George Abraham (1884) "Index to Man'bodh's Haribans," *Journal of the Asiatic Society of Bengal*: 53, Part 1, 37-75.

Grierson, George Abraham (1885 ed. & transl) "Selected specimens of the Bihārī language, Part 1: The Maithilī dialect: The Gīt Dīnā Bhadri, and the Gīt Nebārak," *Zeitschrift der Deustchen Morgenlaendischen Gesellschaft* 39: 1, 617-673.

Grierson, George Abraham (1885/1926) *Bihar Peasant Life*, Patna: Superintendent, Government Printing, Bihar and Orissa. Second and Revised Edition

Hoernle, A. F. R. & George Abraham Grierson (1885) *A Comparative Dictionary of the Bihārī Language. Part 1*, Calcutta: Bengal Secretariat Press.

Hoernle, A. F. R. & George Abraham Grierson (1889) *A Comparative Dictionary of the Bihārī Language, Part 2*, Calcutta: Bengal Secretariat Press.

Jha, Subhadra (1939-40) "Maithili equivalents to vernacular words found in Sarvānanda's commentary on Amarakośa," *Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute* 21: 12, 106-114.

Sen, Sukumar (1940-44) "New Indo-Aryan vocables in Sarvānanda's Ṭīkāsarvasva," In: *Indian Linguistics*, Reprinted Edition, Vol. II, 1965, 554-572.

Trail, R. L. (1973) *Word Lists*, Kathmandu: SIL, Tribhuvan University Press.

Yadav, Ramawatar (1996) *A Reference Grammar of Maithili*, Berlin & New York: Mouton de Gruyter. [Pages 10-13 contain information on Maithili dictionaries and lexical studies]

Yadav, Ramawatar (1998) "Maithili dictionaries and lexical studies," In: Yadava & Kansakar (eds. 1998), pp. 75-80.

Yadav, Ramawatar (1999) "Review of Jayakanta Mishra (1973, 1995) *Bṛhat Maïthilī Śabdakośa 1-2*," *Journal of Nepalese Studies* (Royal Nepal Academy) 3: 1, 129-137.

Yadava, Yogendra P. & T. R. Kansakar (eds. 1998) *Lexicography in Nepal: Proceedings of the Institute on Lexicography*, Kathmandu: Royal Nepal Academy.

[Invited Talk delivered as Expert at the **Janakpur Art-Literature & International Drama Festival-2019** held during March 2-7, 2019]

मैथिली भाषा-साहित्यक संरक्षण : चुनौती आ निदान*

Languages no longer being learned as mother-tongue by children are beyond mere endangerment, for, unless the course is somehow dramatically reversed, they are already doomed to extinction, like species lacking reproductive capacity.

Michael Krauss, 1992

A language dies when nobody speaks it any more.

David Crystal, 2000

मैथिली साहित्यक ई दुर्भाग्य रहल अछि जे एकर प्राचीन-पोथी सभक मूल भोतिआयल जाय रहलैक अछि। वर्णरत्नाकरक मूल अप्राप्त, तरौनी पदावली बाबू नगेन्द्र गुप्त हेरओलनि, रामभद्रपुर पदावली सेहो नष्ट भेल ओ ई रागतरङ्गिनी लुप्त भ' गेल। केवल नेपाल-पदावली एखनहु नेपाल अभिलेखालयमे सुरक्षित अछि, सेहो ओ नेपालमे अछि तैं बँचल अछि।

शशिनाथ झा (सं. १९८१: iii) *रागतरङ्गिनी*

०. उपोद्घात

२७ जनवरी २०१९ सायंकाल ७.३०क' प्राप्त **मैथिली विकास कोषक** अध्यक्ष जीवनाथ चौधरी-हस्ताक्षरित ईमेल-पत्रमे उल्लिखित शीर्षकसँ सहजहि ई आभासित भेल जे एहि कार्यक्रमक आयोजकलोकनि आ स्वयं अध्यक्षजी एहि विचारमे विश्वस्त-रूपेण दृढ़ छथि

* आँजुर २१: ८८, २०१९, पृ. ३-११मे प्रकाशित।

जे मैथिली भाषा-साहित्य वर्तमानमे संकटापन्न अवस्थामे अछि एवम् एकर संरक्षण-सम्वर्द्धन होएब अनिवार्यहि नहि अपितु अपरिहार्य अछि। आ, तहिना, ई कार्य दुष्कर सेहो अछि। एहि आलेखमे हमर अभीप्सित इष्ट मैथिली भाषाक (आ प्रकारान्तरसँ मैथिली साहित्यक) वर्तमान संकटापन्न अवस्थिति ओ एकर संरक्षण-सम्वर्द्धन आदिसँ जुड़ल विषयसभद' वैश्विक अनुसन्धानक परिवेशमे कनेक बेकछाक' वर्णन-विश्लेषण करब थिक। मैथिली साहित्यसँ जुड़ल विषयमादे आन केओ विद्वान वक्ता सविस्तार अपनेकैं सम्बोधित करताहे। अवसर प्रदान करबाकहेतु हम जीवनाथ चौधरीकैं नमन करैत छिऐन्हि।

भाषिक संकटक (language endangerment) वैश्विक परिदृश्यमे हमरा जतबा देखल अछि ताहिसँ अभिज्ञात होइत अछि जे बीसम शताब्दीक सातम दशकक उत्तरार्द्धसँ ल'क' आइधरि संसारक विद्वानलोकनि भाषा प्रसरण (language shift), भाषा क्षय (language decay), भाषा विलोप (language extinction), एवम् भाषा मृत्युक (language death) बढ़ैत क्रमद' साकांक्षेटा नहि अपितु चिन्तितो छथि, यथा: Dressler & Wodak-Leodolter 1977; Dorian 1978; Hale et al 1992; Kraus 1992; Schilling-Estes & Wolfram 1999; Fishman 1991, 2001; Crystal 2000; Moseley 2007। हिनक अभिमत छैन्हि जे वर्तमानधरि संसारक कुल ६९०९ भाषामध्य २०५ भाषासभ मरणोन्मुख (moribund) भ' चुकल अछि एवम् एकैसम शताब्दीक अन्तधरि सम्भवत: ५०% अर्थात् कुल **३४५५** भाषासभ धरतीसँ विलुप्त (extinct) भ' जाएत। बाँकी रहल ३४५५ भाषामध्य कुल **६००** भाषा मात्र सुरक्षित ('safe') अछि एवम् भाषामृत्युक गतिक वेग एहन प्रबल अछि जे औसतन १५ दिनमे एकगोट भाषा मरैत होएत से अनुमान विज्ञलोकनिक छैन्हि। *National Geographic* सन प्रसिद्ध पत्रिकाक July 2012 अङ्कमे प्रकाशित 'Vanishing Voices' शीर्षकक एकगोट आलेखमे त' Russ Rymer असंदिग्ध रूपैं कहैत छथि जे "One language dies every 14 days" आ ओ एकगोट महा गम्भीर प्रश्न सेहो ठाढ़ करैत छथि "What is lost when a language goes silent?"। तहिना, Lewis (2009)क सुविख्यात कृति *Ethnologue: Languages of the World, 16th edition* एहि तथ्यक अकाट्य साक्ष्य अछि जे विश्वक पूर्व-परिगणित जीवित भाषासभक संख्यामे क्रमिक एवम् प्रत्यक्ष ह्रास देखना जाइत अछि, अर्थात् संसारक कुल **६९०९** भाषामध्य **४५७** गोट भाषा 'Nearly Extinct' भए चुकल अछि। अत्यन्त दुखक गप जे उपर्युक्त अध्यर्थनक प्रतिवाद करैत आइधरि कोनहु भाषावैज्ञानिकक उल्लेख्य आलेख वा पुस्तकाकार कृति प्रकाशनमे नहि आएल अछि। तहिना, इहो उचिते जे मैथिलीक विद्वानलोकनि सेहो मैथिलीक भाषा प्रसरण, क्षय, विलोप, एवम् मृत्युद' गम्भीर रूपैं विचार-विमर्श करथि। ताहूमे जाहि दिनसँ यात्रीजी भाव-विह्वलभए घोषणा कएलैन्हि जे मैथिली मरि जाएत ताहि दिनसँ एहि विषयक चर्चा-परिचर्चा प्रबल रूप धए लेलक अछि (देखू उपेन्द्र 'दोषी' १९९९)। संयोगवशात्, ताही साल मैथिलीक दूगोट उद्भट्ट विद्वान-भाषावैज्ञानिक, यथा गोविन्द झा (१९९९) ओ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' (१९९९), मैथिलीक संकटापन्न अवस्थाद' अपन-अपन गरिमामय ओ चिन्तापूर्ण उद्गार व्यक्त कएलैन्हि। गोविन्द झाक

भाषा प्रसरणक प्रवाहपूर्ण एवम् प्रबल वेगकें शिथिल कए तकर गतिकें उत्क्रमित पर्यन्त करबाकहेतु Fishman (1991)क कहब छैन्हि जे जखनहि अभिभावकवर्ग राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक आदि कारणें ई निष्कर्ष निकालबालेल बाध्य भ' जाइत छथि जे आन प्रभुत्वशाली भाषाक सोझाँ अपन मातृभाषाक प्रयोग हुनक ओ हुनक बालबच्चाक उर्ध्वगामी विकासकलेल क्षीण सिद्ध भए कम उपयोगी ओ कम महत्वपूर्ण संसाधन (less advantageous resource) भ' गेल अछि तखनहि भाषा प्रसरण (language shift) ओ भाषा क्षय (language decay) प्रारम्भ होइत अछि। एहि कृतिमे ओ एकगोट ८-सूत्रीय मापक सोपान प्रतिपादित कएलैन्हि जे पछाति **Fishman's Graded Intergenerational Disruption Scale (GIDS)** रूपें प्रख्यात भेल अछि :

1. The language is used in education, work, mass media, and government at the nationwide level.
2. The language is used for local and regional mass media and governmental services.
3. The language is used for local and regional work by both insiders and outsiders.
4. Literacy in the language is transmitted through education.
5. The language is used orally by all generations and is effectively used in written form throughout the community.
6. The language is used orally by all generations and is being learned by children as their first language.
7. The child-bearing generation knows the language well enough to use it with their elders but is not transmitting it to their children.
8. The only remaining speakers of the language are members of the grandparent generation.

(Lewis & Simons 2010: 25)

की कहैत अछि त' ई मापक सूत्र? उपरसँ नीचाँ पढ़ैत ई देखना जाइत अछि जे **Levels 1-3** भाषा प्रयोगक क्षेत्रसँ (domains of language use) सम्बद्ध अछि; **Levels 4-5** साक्षरतासँ (literacy) सम्बद्ध अछि; **Levels 6-8** अन्तर्पुश्तात्मक भाषा प्रेषणसँ (intergenerational language transmission) सम्बद्ध अछि। सँगहि **Levels 5-6** अन्तर्पुश्तात्मक प्रेषणक सर्वसामान्य पूर्वशर्तक (the most common preconditions) सूचक रूपें सेहो काज करैत अछि।

(१९९९: २२) निष्कर्ष छैन्हि जे "मैथिली सभ तरहेँ मरबाक स्थितिमे सम्प्राप्त भए गेल अछि"; ततबहि नहि, एकगोट निश्चित काल सीमा स्थिर कए ओ उद्घोष करैत छथि जे "२०५० ई. अबैत-अबैत मैथिली कँ हिन्दी/उर्दू गीड़ि लेतैक"। तत्पश्चात्, तत्क्षण नेपालमे कार्यरत एकगोट अमेरिकी तरुण भाषावैज्ञानिक Stephen Watters (2002)क नेपालक परिपेक्ष्यमे अति मनोयोगपूर्वक लिखल गेल एकगोट लेख आएल; आ ११ वर्ष पश्चात रामावतार यादवक (२०१३) आलेख प्रकाशित भेल — जे पछाति रामावतार यादव (२०१६) मे सेहो संगृहीत अछि। सन्तोषक गप जे George van Driem (2007) लिखित 'South Asia and the Middle East' शीर्षकक आलेखमे — जे *Encyclopaedia of the World's Endangered Languages* नामक ग्रन्थमे छपल अछि — मैथिली भाषा तत्काल संकटापन्न भाषासभक सूचीमे परिगणित नहि कएल गेल अछि। मैथिलीद' अद्यतन हमरा जे- जतबा देखल-सुनल अछि से कहल। प्राम्भहिमे एकगोट बात। सरहद पार जखन हम एहि विषयद' कतहु परोक्षो रूपेँ चर्चो प्रारम्भ करैत छी त' ओम्हुरका अति उत्साहित वरिष्ठ साहित्यकारलोकनि वर्तमानमे मैथिली भाषा भारतक संविधानक अष्टम् सूचीमे सूचीकृत भेलासन्ताँ प्राप्त प्रचुर आर्थिक अनुदानसँ प्रशस्त मात्रामे प्रकाशित ढेरराश पुस्तकसभदिसि इंगित करैत मैथिलीसन सृजनशील भाषा संकटमे होएबाक कथ्य सुनहु नहि चाहैत छथि। हुनकालोकनिकेँ हम 'नचिकेता'क (१९९९: २७) सम्मति स्मरण कराबए चाहब: "भाषा विलोपक पाछाँ सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, शैक्षणिक आदि कतेको कारण भ' सकैत अछि, मात्र एतबा कहब यथेष्ट नहि हैत जे कोनो भाषा विशेषमे जँ साहित्यिक सृजनशीलताक स्वस्थ धारा रहैत अछि त' ओ युग युग धरि टिकि जाएत।"

१. संकटापन्न होएब की थिक?

एहि अनुच्छेदमे हम भाषा संकटमादे विश्वभरिमे काल-क्रमेण कएल गेल अधुनातन सैद्धान्तिक शोध-अनुसन्धान कार्य ओ तकर प्रतिफलसभक सारांश मैथिलीक अनुसन्धित्सु एवम् विवेकशील अध्येतालोकनिक अवगतार्थ अति संक्षेपमे प्रस्तुत करए चाहब।

सर्वप्रथम, ई. 1992मे Linguistic Society of Americaक मुख्य जर्नल *Language* मे Ken Hale *et al* लिखल 'Endangered languages' ओ Michael Krauss लिखल 'The world's languages in crisis' शीर्षकक दूगोट आलेख प्रकाशित भेला पश्चात् संसारक समाजभाषावैज्ञानिक, भाषावैज्ञानिक, भाषा-योजनाकार, एवम् शिक्षण पेशासँ आबद्ध जन भाषा संकटक सभसँ प्रमुख कारण, भाषा प्रसरण, दिसि गम्भीरतासँ आकृष्ट भेलाह। ओना ताहिसँ एक साल पूर्वहि Joshua Fishman (1991) लिखित गौरवशाली ग्रन्थ *Reversing Language Shift* प्रकाशित भेल छल आ दश वर्ष पछाति पुन: हुनक दोसर बहुमूल्य कृति *Can Threatened Languages Be Saved? Reversing Language Shift, Revisited: A 21st Century Perspective* (Fishman 2001) प्रकाशित भेल।

भाषा प्रसरणक प्रवाहपूर्ण एवम् प्रबल वेगकेँ शिथिल कए तकर गतिकेँ उत्क्रमित पर्यन्त करबाकहेतु Fishman (1991)क कहब छैन्हि जे जखनहि अभिभावककर्ता राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक आदि कारणेँ ई निष्कर्ष निकालबालेल बाध्य भ' जाइत छथि जे आन प्रभुत्वशाली भाषाक सोझाँ अपन मातृभाषाक प्रयोग हुनक ओ हुनक बालबच्चाक उर्ध्वगामी विकासकलेल क्षीण सिद्ध भए कम उपयोगी ओ कम महत्वपूर्ण संसाधन (less advantageous resource) भ' गेल अछि तखनहि भाषा प्रसरण (language shift) ओ भाषा क्षय (language decay) प्रारम्भ होइत अछि। एहि कृतिमे ओ एकगोट ८-सूत्रीय मापक सोपान प्रतिपादित कएलैन्हि जे पछाति **Fishman's Graded Intergenerational Disruption Scale (GIDS)** रूपेँ प्रख्यात भेल अछि :

1. The language is used in education, work, mass media, and government at the nationwide level.
2. The language is used for local and regional mass media and governmental services.
3. The language is used for local and regional work by both insiders and outsiders.
4. Literacy in the language is transmitted through education.
5. The language is used orally by all generations and is effectively used in written form throughout the community.
6. The language is used orally by all generations and is being learned by children as their first language.
7. The child-bearing generation knows the language well enough to use it with their elders but is not transmitting it to their children.
8. The only remaining speakers of the language are members of the grandparent generation.

(Lewis & Simons 2010: 25)

की कहैत अछि त' ई मापक सूत्र? उपरसँ नीचाँ पढ़ैत ई देखना जाइत अछि जे **Levels 1-3** भाषा प्रयोगक क्षेत्रसँ (domains of language use) सम्बद्ध अछि; **Levels 4-5** साक्षरतासँ (literacy) सम्बद्ध अछि; **Levels 6-8** अन्तर्पुश्तात्मक भाषा प्रेषणसँ (intergenerational language transmission) सम्बद्ध अछि। सँगहि **Levels 5-6** अन्तर्पुश्तात्मक प्रेषणक सर्वसामान्य पूर्वशर्तक (the most common preconditions) सूचक रूपेँ सेहो काज करैत अछि।

तत्पश्चात् मार्च २००३मे the UNESCO Intangible Cultural Heritage Unitक Ad Hoc Expert Group on Endangered Languagesक तत्वावधानमे Language Vitality and Endangerment शीर्षकक एकगोट दस्तावेज तैयार भेल जे पछाति २०११मे UNESCO Background Paper रूपेँ UNESCO Parisसँ प्रकाशित भेल — जाहिमे ५-सूत्रीय मापक ढाँचा (Framework) प्रस्तुत कएल गेल। आ तहिना २००९मे *UNESCO Atlas of the World's Languages in Danger* शीर्षकक अति उपयोगी ग्रन्थ सेहो प्रकाशित भेल। कोनहु भाषाकेँ सुरक्षित अर्थात् 'Safe' श्रेणीमे वर्गीकृत होएबाकहेतु UNESCO द्वारा निर्धारित एकगोट कारकतत्त्व (Factor) सुधी पाठकक सुविधार्थ निचाँ प्रस्तुत अछि:

UNESCO Framework

Degree of Endangerment	*Intergenerational Language Transmission*
Safe	The language is used by all ages, from children up.
Unsafe/Vulnerable	The language is used by some children in all domains; it is used by all children in limited domains.
Definitely endangered	The language is used mostly by the parental generation and up.
Severely endangered	The language is used mostly by the grandparental generation and up.
Critically endangered	The language is used mostly by very few speakers, of grandparental generation.
Extinct	There are no speakers left.

(Lewis & Simons 2010: 26)

एम्हर आबि, Summer Institute of Linguistics (SIL) International, Dallas (USA)सँ सम्बद्ध Paul Lewis & Gary Simons सन Joshua Fishman (1991) क ८-सूत्रीय मापक सोपानक परिमार्जित ओ विस्तारित रूप *Romanian Review of Linguistics*, Vol. 2, 2010मे प्रकाशित कएल — जे १३-सूत्रीय **Expanded Graded Intergenerational Disruption Scale (EGIDS)** रूपेँ प्रख्याति पओलक। ई १३-सूत्रीय EGIDS पाठकलोकनिक अवगतार्थ निचाँ उद्धृत कएल गेल अछि:

Expanded Graded Intergenerational Disruption Scale (adapted from Fishman 1991)

Level	Label	Description	UNESCO
0	International	The language is used internationally for a broad range of functions.	**Safe**
1	National	The language is used in education, work, mass media, government at the nationwide level.	**Safe**
2	Regional	The language is used for local and regional mass media and government services.	**Safe**
3	Trade	The language is used for local and regional work by both insiders and outsiders.	**Safe**
4	Educational	Literacy in the language is being transmitted through a system of public education.	**Safe**
5	Written	The language is used orally by all generations and is effectively used in written form in parts of the community.	**Safe**
6a	Vigorous	The language is used orally by all generations and is being learned by children as their first language.	**Safe**
6b	Threatened	The language is used orally by all generations but only some of the child-bearing generations are transmitting it to their children.	**Vulnerable**
7	Shifting	The child-bearing generation knows the language well enough to use it among them-selves but none are transmitting it to their children.	**Definitely Endangered**
8a	Moribund	The only remaining active speakers of the language are members of the grandparent generation.	**Severely Endangered**
8b	Nearly Extinct	The only remaining speakers of the language are members of the grandparent generation or older who have little opportunity to use the language.	**Critically Endangered**
9	Dormant	The language serves as a reminder of heritage identity for an ethnic community. No one has more than symbolic proficiency.	**Extinct**
10	Extinct	No one retains a sense of ethnic identity associated with the language, even for symbolic purposes.	**Extinct**

(Lewis & Simons 2010: 28)

एहि ठाम ध्यातव्य जे Fishman (1991) कृत GIDSक पद्धतिपर University of Kansas (USA)क Arienne Dwyer (2011) द्वारा चीनक ओ विशेषत: तिब्बत प्रदेशक तिब्बती-बर्मेली भाषापरिवारक संकटापन्न Amdo macrogroupक भाषा तथा Wutun ओ Sanie भाषाकेँ एवम् UNESCO Framework तथा Paul Lewis & Gary Simons (2010) कृत EGIDS पद्धतिपर University of Wales (UK)क Hugh Jones (2013) द्वारा Celtic भाषापरिवारक एकगोट मरणासन्न Breton भाषाकेँ पुनर्जीवित करबाक उद्देश्यसँ कएल गेल विस्तृत अध्ययन-अनुसन्धान प्रकाशनमे आबि चुकल अछि — जे मैथिली-शोधार्थीकेहेतु मैथिली भाषाक संरक्षण-सम्वर्द्धन एवम् पुनर्ताजगीसँ जुड़ल अध्ययन-अनुसन्धानक कार्यमे अति सहायक सामग्री सिद्ध होएत से हमर विश्वस्त धारणा अछि।

२ संरक्षण/सबलीकरण की आ कोना?

उपर्युक्त वर्णन-विश्लेषणसँ आब ई बात स्पष्ट भ' गेल अछि जे मैथिलीक हित रक्षार्थ निम्न क्षेत्रमे अनुसन्धानीय हस्तक्षेपक प्रबल प्रयोजन अछि: १. **भाषा प्रयोगक क्षेत्र** २. **साक्षरता** ३. **अन्तर्पुश्तात्मक भाषा प्रेषण**। अत्यन्त खेदक गप जे नेपालमे (आ हिन्दुस्तानमे सेहो) मैथिली भाषाक प्रयोगक क्षेत्र (domains of language use) दिनानुदिन अति संकुचित भ' रहल अछि — जाहि मादे नेपाल आ भारतक विश्वविद्यालय, मैथिली भाषा विभाग, साहित्य अकादमी दिल्ली, नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान काठमाण्डू, नेपाल सङ्गीत तथा नाट्य प्रज्ञा-प्रतिष्ठान काठमाण्डू, मैथिली अकादमी पटना, चेतना समिति पटना, एवम् मैथिली विकास कोष, जनकपुरधामसन सम्बद्ध संस्थासभमे गम्भीर अध्ययन-अनुसन्धान अति आवश्यक भ' गेल अछि। आइसँ सत्ताइस वर्ष पूर्व एकगोट सामान्य मैथिली-भाषीक दयनीय दुरवस्थाद' हम अपन आलेखमे कहने छलहुँ जे एकगोट मैथिल युवा "... makes love in Maithili, discusses politics and resents discrimination in Hindi, makes an application for a job in Nepali and does research on laser beams in English" (Yadav 1992: 188) सम्भव अछि जे आब ओ युवा अपन प्रेयसीकेँ प्रणयकालमे अङरेजीएमे कहैत होथि: "Darling, I love you so." स्पष्टरूपेण मैथिली भाषाक प्रयोगक क्षेत्र दिनानुदिन आओरो बेसी संकुचित भ' रहल अछि। तहिना, जाबतधरि साक्षरता अपन मातृभाषामे देबाक समुचित प्रबन्ध नहि होएत ताबतधरि मैथिली भाषाक language maintenance/language loyalty नहि होएत आ ताहि कारणेँ एकर संरक्षण/सबलीकरण नहि भ' सकत। मातृभाषा-इतर देशक आन कोनहु प्रभुत्वशाली भाषाक माध्यमेँ साक्षरता प्रदान कएलासन्ताँ नेपालक शिक्षा पद्धतिमे भेल अनन्त हानि, विशेषत: drop out, educational attrition, educational wastageक विशद् वर्णन-विश्लेषणद' देखू Ramawatar Yadav (1992, 2017b)। आ, तहिना मैथिली भाषाक अन्तर्पुश्तात्मक भाषा प्रेषण सघन रूपेँ नहि भेलासँ तेसर पुश्ताधरि जाक' त' एकर विलोप अवश्यम्भावी अछि। हमर विनम्र आग्रह जे नवतुरिए आगाँ बढ़ओ आ ओ एहि विषयसभदिसि अध्ययन-अनुसन्धान कार्यमे दत्तचित्त भए प्रवृत्त होथि। हम

अइपार-ओइपार रहल गैरसरकारी संस्थासभकेँ (NGOs) सेहो एहि कार्यदिसि, विशेषत मैथिलीक माध्यमेँ साक्षरता अभियानदिसि, सक्रिय भए अपन बहुमूल्य योगदान देबाक आग्रह करबैन्हि।

ध्यान देबाक योग्य बात इहो जे UNESCO दस्तावेजमे एकगोट नव शब्द आएल,'Vitality', आ पछाति भाषा मृत्यु-साहित्यमे University of Kansasक Ariene Dwyerक सौजन्यसँ दोसर नव शब्द,'Viability', सेहो चर्चामे आएल। सामान्य रूपेँ मैथिली भाषाक Viability भलहि अद्यावधि असंदिग्ध रूपेँ विद्यमान रहलसन देखना जाइत होअए तथापि हमरा जनितेँ मैथिली भाषाक पुनर्ताजगीकरण (Revitalization)परमावश्यक। तहिना एकगोट आओरो गम्भीर प्रश्न मुह बाबि ठाढ़ होइत अछि : की ई भाषा आधुनिक परिवेशमे 'Viable' अछि? की ई भाषा एकैसम शताब्दीक नव-नव ओ अप्रत्याशित चुनौतीसभक सामना करबाक सामर्थ्य रखैत अछि? अपनेलोकनि एहि सभाकक्षसँ बाहर जाइत-जाइत एहि प्रश्नमादे गम्भीरतापूर्वक सोची, विचार करी से हमर विनम्र आग्रह।

३. उपसंहार

अन्तमे, उपसंहार रूपेँ, मैथिलीक हित रक्षार्थ नेपालक राष्ट्रिय अभिलेखालयमे संरक्षित मैथिली भाषा-साहित्यक अपार धनराशिदिसि अति संक्षेपमे अपनेलोकनिक ध्यानाकर्षण करए चाहब।

आब ई सर्वविदित अछि जे नेपालक राष्ट्रिय अभिलेखालयमे नेवारी/बाङ्गला/मिथिलाक्षर लिपिमे हस्तलिखित कुल १५३ नाट्यकृतिक पाण्डुलिपि विद्यमान अछि जाहिमे ११५गोट मैथिली नाटक अछि; तहिना एहिमे नेवारी/मिथिलाक्षर लिपिमे हस्तलिखित अनेकहु सङ्गीतबद्ध पद्य-गीत रचनासभ सुरक्षित अछि। अत्यन्त खेदक गप जे वर्तमानधरि मैथिलीक कुल ११५ गोट मैथिली नाटकमध्य मात्र १३गोट नाट्यकृतिक सफल सम्पादन-प्रकाशन संभव भेल अछि आ तहिना अद्यतन मैथिलीक कुल ८गोट पद्य-गीत कृति मात्र प्रकाशित भ' सकल अछि (देखू Ramawatar Yadav 2011, 2017a, 2018)। मैथिलीक अनुसन्धित्सु युवा-युवतीसँ हमर विनम्र आग्रह जे ओलोकनि मैथिली भाषा-साहित्यक संरक्षण-सम्वर्द्धन सन पुनीत काजमे अपन ऊर्जा लगाबथि, आ अमूल्य योगदान देथि। मुदा अछि ई काज अति कष्टसाध्य। हस्तलिखित पाण्डुलिपिसभक समीक्षात्मक संस्करण-कार्य आसान नहि अछि। एहि कार्यक सफल सम्पादनकहेतु कठोर परिश्रम, अदम्य साहस, दीर्घकाल, गहन गवेषण, त्रिभाषा (संस्कृत, नेवारी, मैथिली) ज्ञान, ऐतिहासिक एवम् पुरातात्त्विक ज्ञान, सही लिप्यन्तरण क्षमता, पद-विच्छेद करबाक सामर्थ्य, अनुवाद कौशल, प्रतिलिपिकारजन्य त्रुटि-विश्लेषण आदि गुणसभक खगता पड़ैत छैक। ई समस्त गुणसभक समष्टि कोनहु एक विद्वान व्यक्तिमे नहिओ भ' सकैत अछि, ताहि हेतुएँ एहि काजमे विद्वत्समुदायक (a team of scholars) सहभागिता प्रयोजनीये नहि अपितु अपरिहार्य देखना जाइत अछि।

अध्ययन-अनुसन्धानक क्रमें हमरा इहो परिलक्षित भेल जे नेपाल सरकारद्वारा स्थापित एवम् सरकारी राजस्वसँ सञ्चालित प्रज्ञा-प्रतिष्ठानसभ नेपाल राष्ट्रिय अभिलेखालयमे अवस्थित/संरक्षित मल्लकालीन नेपालमण्डलमे रचित सभ भाषाक हस्तलिखित पाण्डुलिपिकेँ संघीय नेपाल राष्ट्रक सौष्ठवपूर्ण धरोहर एवम् अमूल्य निधि बूझि तकर कुशल एवम् वैदुष्यपूर्ण समीक्षात्मक सम्पादन-प्रकाशनक कार्यमे प्रतिष्ठित नेपाली विद्वानसभक सम्मानजन्य संलग्नता स्थापित कए प्रज्ञा-प्रतिष्ठानहिक तत्त्वावधानमे पुस्तकाकार रूपेँ प्रकाशित करएबाक काजप्रति अद्यतन अति उदासीन देखना जाइत अछि। अत्यन्त खेदक गप जे आइधरि ललितपुर निवासी कवि धर्मगुप्त द्वारा १३८१ ई.मे विरचित एवम् ललितपुर राज्यक स्थापनाक सुखद अवसर तथा ललितपुर राज्यक पहिल राजा जयसिंहमल्लक राज्यारोहणक पुनीत अवसरमे मञ्चित प्राकृत-संस्कृत *रामाङ्कनाटिका* नामक एकगोट नाटक मात्र गोविन्दप्रसाद भट्टराईद्वारा सम्पादित-नेपाली अनूदित भए ५४९ वर्ष पश्चात् वि.सं २०३२ तदनुरूप १९७५ ई.मे तत्कालीन नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठानसँ प्रकाशित होएबाक सौभाग्य पओने अछि।

अध्ययन-अनुसन्धानक क्रमें हमरा एकगोट आओरो बात देखना गेल। ओ ई जे भारतक बाङ्गलाभाषी विद्वानलोकनि बाङ्गला वा मिथिलाक्षर वा नेवारी लिपिमे रचित बाङ्गला तथा मैथिली भाषाक कृतिसभक बाङ्गला संस्करण मात्र प्रकाशित करैत छथि तेँ भारत आ नेपालक मैथिलीभाषी विद्वानलोकनि मात्र मैथिली ओ प्राकृत-संस्कृत ग्रन्थसभक मैथिली संस्करण प्रकाशित करैत छथि। आ तहिना नेपालक नेवारभाषी विद्वानलोकनि सामान्यतः मात्र नेवारी भाषाक कृतिक नेवारी संस्करण ओ नेपाली-भाषी ब्राह्मण जातिक विद्वानलोकनि मल्लकालमे नेपाली भाषामे रचित हस्तलिखित पाण्डुलिपिक अनुपलब्धताक कारणेँ मात्र प्राकृत-संस्कृत ग्रन्थसभक नेपाली संस्करण प्रकाशित करैत पाओल जाइत छथि। हुनकासभकेँ कोनहु विशेष प्रकारक अपन बाध्यता हौएतैन्हि तथापि हमरा विचारेँ एहन पृथक्करण (segregation) सर्वथा अनुचित।

अन्ततः, हमर तीव्र आकांक्षा जे नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान आ नेपाल सङ्गीत तथा नाट्य प्रज्ञा-प्रतिष्ठानसन प्रतिष्ठित अनुसन्धान केद्रसभ नेपाल राष्ट्रिय अभिलेखालयमे अवस्थित/सङ्गृहीत/अनुरक्षित सभ भाषाक बहुमूल्य पाण्डुलिपिकेँ संघीय नेपाल राष्ट्रक सौष्ठवपूर्ण धरोहर एवम् अमूल्य निधि बूझि नेपाली विद्वानद्वारा सुसम्पादित कराए प्रज्ञा-प्रतिष्ठानहिक तत्त्वावधानमे प्रकाशित करबाक पुनीत कार्यक यशभागी होएबाक सुअवसरसँ वंचित नहि होथि। एहन अध्ययन-अनुसन्धानसँ प्राचीन एवम् मध्यकालीन मैथिली भाषा-साहित्यक संरक्षण-सम्वर्द्धनमे सेहो प्रशस्त संबल सम्प्राप्त होएत आ समग्रमे मैथिली भाषा-साहित्यक सबलीकरणमे साहाय्य होएत से हमर विश्वस्त धारणा अछि। अस्तु।

सन्दर्भ सूची

झा, गोविन्द १९९९ "मैथिलीक भविष्य: समाजशास्त्रीय आकलन," *सन्धान* १: १, २२-२५।

"दोषी", उपेन्द्र १९९९ "मैथिली मरि जायति," मे: गोविन्द झा (सं. १९९९) *स्मारिका: विद्यापति स्मृति पर्व समारोह १९९९*, पटना: चेतना समिति, ३१-३३।

"नचिकेता", उदय नारायण सिंह १९९९ "कत्ते दिन जीयत मैथिली?" *सन्धान* १: १, २६-३०।

यादव, रामावतार वि.सं २०७०/२०१३ ई. "की मैथिली मरि जाएत?: भाषा मृत्युद' किछु विचार," *अप्पन मिथिला* (काठमाण्डू) २: २, ३-६।

यादव, रामावतार २०१६ *मैथिली आलेख सञ्चयन (१९८९-२०१५)*, जनकपुरधाम: मैथिली विकास कोष।

यादव, रामावतार २०१७a "कविशेषराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर (circa 1290-1350 CE): परिचिति," *रंग राग* (नेपाल सङ्गीत तथा नाट्य प्रज्ञा-प्रतिष्ठान) ४: ५, ७-१९।

यादव, रामावतार २०१७b "नेपालक भाषा नीति आ मैथिली," *घर-बाहर* (चेतना समिति, पटना) १६: ६०, ७-११।

Crystal, David 2000 *Language Death*, Cambridge: Cambridge University Press.

Dorian, Nancy 1978 "The fate of morphological complexity in language death," *Language* 4: 3, pp. 590-609.

Dressler, Wolfgang & Ruth Wodak-Leodolter (eds. 1977) *Language Death, International Journal of the Sociology of Language*: 12, The Hague Paris New York: Mouton Publishers.

van Driem, George 2007 "South Asia and the Middle East," In: Christopher Moseley (ed. 2007) *Encyclopaedia of the World's Endangered Languages*, London & New York: Routledge, pp. 283-347.

Dwyer, Arienne M. 2011 "Tools and techniques in endangered-language assessing and revitalization," In: *Vitality and Viability of Minority Languages*, New York: Trace Foundation Lecture Series, Proceedings. http://www.trace.org/events_lecture_proceedings.html, pp. 20

Fishman, Joshua 1991 *Reversing Language Shift*, Cleveland, UK: Multilingual Matters Ltd.

Fishman, Joshua 2001 *Can Threatened Languages Be Saved? Reversing Language Shift, Revisited: A 21st Century Perspective*, Cleveland, UK: Multilingual Matters Ltd.

Hale, Ken et al 1992 "Endangered languages," *Language* 68: 1, 1-42.

Jones, Hugh 2013 "Breton: Language birth and death and reversing language shift," *The Student Researcher*, Vol. 2, No. 2, May 2013, 83-93.

Kraus, M. 1992 "The world's languages in crisis," *Language*: 68: 1, 4-10.

Lewis, M. Paul ed. 2009 *Ethnologue: Languages of the World 16th edition*, Dallas: SIL International.

Lewis, M. Paul & Gary F. Simons 2010 "Assessing endangerment: Expanding Fishman's GIDS," *Revue Roumaine de Linguistique/Romanian Review of Linguistics*, Vol. 2, pp. 30. http://www.lingv.ro/resources/scm_images/PRL-02-2010-Lewis.pdf

Rymer, Russ 2012 "Vanishing Voices," *National Geographic*, Vol. 222, No. 1, the July issue.
Schilling-Estes, Natalie & Walt Wolfram 1999 "Alternative models of dialect death: dissipation vs. concentration," *Language* 75: 3, 486-527.
UNESCO 2011 Background Paper "UNESCO's Language Vitality and Endangerment Methodology and Guidelines: Review of Application & Feedback since 2003," pp. 15.
Watters, Stephen 2002 "Language death: A review and an examination of the global issue in the Nepalese context," *Gipan*: 2, 39-66.
Yadav, Ramawatar 1992 "The use of the mother tongue in primary education: The Nepalese context," *Contributions to Nepalese Studies* 19: 2, 177-190.
Yadav, Ramawatar (ed. 2011) *A Facsimile Edition of a Maithili Play: Bhūpatīndramalla's Parśurāmopākhyāna-nāṭaka*, Kathmandu: India-Nepal B P Koirala Foundation.
Yadav, Ramawatar (ed. 2018) *Elegy Written in a Royal Courtyard: A Facsimile Edition of Jagatprakāśamalla's Gītapañcaka*, New Delhi: Adroit Publishers.

कखनहु आठ-आठटा कहारवाला पालकीमे बैसल त' कखनहु हौदा-कसल हाथीपर सवार एकगोट फिरिङ्गी मैथिली-सेवक: संक्षिप्त जीवनवृत्त*

For seven months of the year he has pitched his tents beside a village, a grove or the ruin, sleeping under canvas or the open sky, rarely with a pukka or solid roof over the head. For company he has had only a learned Brahmin, a scholarly pandit drawn from the Hindu priestly caste who can read and translate Sanskrit for him, as well as a pair of clerks who handle his correspondence and half a dozen scouts who act as his eyes and ears. The rest of his camp is made up of servants, palanquin-bearers, mahouts (elephant-keepers), bullock-cart drivers, grass-cutters and matchlockmen.

Charles Allen, *The Buddha and the Sahibs, the Men Who Discovered India's Lost Religion*, 2002

१. प्राक्कथन

बात किछु पुरान अछि। भारतवर्षमे ईष्ट इण्डिया कम्पनी सरकारक विस्तार भ' गेल छल। स्कौटलैण्डक ग्लास्गो शहरक आसपासक ग्रामीण इलाकामे जन्मल आ ग्लास्गोमे प्रारम्भिक शिक्षा तथा एडिनबड़ा विश्वविद्यालयमे डाक्टरी पढ़ाई समाप्तकए Dr. Francis Buchanan MD विशुद्ध धनोपार्जन एवम् यशार्जनक तीव्र अभिलाषासँ अभिभूतभए देहातक डाक्टरी पेशाकेँ लात मारि समुद्री यात्रापर निकलि अनायास एकगोट पानीजहाजक कप्तानक Assistant Surgeon रूपेँ ईष्ट इण्डीज, मलाया, बर्मा आदि प्रदेशक यात्राकए १७९४ ई. सितम्बर मासक १४ तारीखक दिन एकाएक पानीजहाज छाड़ि कलकत्ता बन्दरगाहक धरतीपर उतरि गेलाह। बीसहु वर्षधरि ईष्ट इण्डिया कम्पनीक वफादार नोकरभए

*अनुप्रास २: २, २०२०, पृ. ३-६मे प्रकाशित।

डा. फ्रान्सिस ब्युक्यानन भारतक दक्षिणसँ उत्तर विभिन्न भूभागक यात्रा कए ताहि प्रदेशसभक विविध पक्षदिसि विस्तृत भौगोलिक, वैज्ञानिक, सांस्कृतिक अध्ययन-सर्वेक्षण कएल — जे अद्यतन बहुमूल्य अछि, अनुसन्धेय अछि। विशेष रूपेण उल्लेख्य अछि हुनक १८०७-१८१४ ई.क बेङ्गाल प्रेजिडेन्सी अन्तर्गतक कुल आठगोट जिल्लाक 'तथ्याङ्कगत सर्वेक्षण' — जाहि मध्य ब्युक्यानन मूलत: मेडिकल डाक्टर वा कहू जे Botanist होइतहु उत्तरी भारतमे (आ नेपालमे सेहो) बाजएजाएवाला *मिथिला* (पढ़ू *मैथिली*) सहित अनेकहु स्थानीय/प्रादेशिक भाषाक *Comparative Vocabularies* (1810) अर्थात् 'तुलनात्मक शब्द-सङ्ग्रह'क हस्तलिखित पाण्डुलिपि तैयार कएलैन्हि — ई हस्तलिखित पाण्डुलिपि अप्रकाशित रूपैं British Library, Londonक India Office Recordsमे अनुरक्षित अछि एवम् सौभाग्यवश एकर आधिकारिक प्रतिलिपि हमरालग सेहो अछि: विस्तृत विवरणहेतु देखू हमर प्रकाशनोन्मुख कृति (Yadav 2020, Forthcoming)।

प्रस्तुत आलेखक अभीप्सित इष्ट ताही स्कौटिश मैथिली सेवकक जीवनवृत्त ओ हुनक मैथिली शब्दकोशशास्त्रमे पुरोगामी एवम् अतुलनीय अवदानक संक्षिप्त वर्णन-विश्लेषण-समीक्षा करब थिक।

ओना, हमरा इहो ज्ञात अछि जे फ्रान्सिस ब्युक्याननहुसँ २-३ वर्ष पूर्वहि ईष्ट इण्डिया कम्पनीक एकगोट अत्युच्च पदाधिकारी एवम् प्रकाण्ड संस्कृतज्ञ Henry Thomas Colebrooke (1807) अमरसिंह-विरचित प्रख्यात कृति *अमरकोष*मे उपलब्ध कुल ३७० मैथिली शब्दक सङ्गहि भारतभरिक अन्यान्य १२गोट स्थानीय/प्रादेशिक भाषाक *Comparative Vocabulary*क एकगोट सुगठित एवम् विलक्षण देवनागरी लिपिमे हस्तलिखित पाण्डुलिपि तैयार कएने छलाह जे अद्यतन अशोधित एवम् अप्रकाशित रूपैं British Library, London मे अनुरक्षित अछि ओ एहि गौरवशाली कृतिक आधिकारिक प्रतिलिपि हमरालग सेहो अछि — जाहिमादे अनुसन्धान गतिमान अछि। ध्यातब्य जे एकगोट अति प्रख्यात आलेखमे Colebrooke (1801: 225) अङरेजी भाषाक माध्यमैं लिखल गेल दस्तावेजमे ग्रिअर्सनहुसँ पूर्व पहिलि बेरि मैथिल/तिरहुतीय (पढ़ू मैथिली) भाषाक उल्लेख कएने छलाह:

> **MAIT'HILA**, or *Tirhutīya*, is the language used in Mithīlà, that is, in the Sircár of Tirhūt, and in some adjoining districts, limited however by the rivers Cusī (Causicī) and Gandhac (Ghandhacī,) and by the mountains of Nepál; it has great affinity with Bengálī; and the character in which it is written differs little from that which is employed throughout Bengal. In Tirhūt, too, the learned write Sanscrit in the Tirhutīya character, and pronounce it after their own inelegant manner.

मैथिली शब्दकोशशास्त्रमे एकगोट आओरो फिरिङ्गी S. W. Fallon (1879)क बहुमूल्य अवदानकहेतु द्रष्टव्य अछि गोविन्द झा (२०१०: ७-११)।

तहिना, एहि ठाम ई उल्लेख करब प्रासंगिक होएत जे कोलब्रुकक मार्गक अनुसरणकए Subhadra Jha (1939-40) बरौदासँ प्रकाशित *Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute* नामक प्रसिद्ध जर्नलमे वन्द्यघटीय सर्वानन्द-विरचित अमरकोशक टीका — *टीकासर्वस्व*मे (1159 A.D.) — उपलब्ध कुल ३०० मैथिली शब्दक मनोयोगपूर्वक सङ्कलन ओ विशद् विश्लेषण प्रकाशित कएलैन्हि — ओना आब ई स्पष्ट बुझना जाइत अछि जे सुभद्र झा कोलब्रुक (1807)क British Library, Londonमे अनुरक्षित ओ अद्यतन अप्रकाशित पाण्डुलिपिसँ कोनहुना अवगत नहि छलाह।

तद्वत्, एम्हर आबि शशिनाथ झा (१९८४) "अमरकोशक टीकामे उपलब्ध मैथिली शब्द" शीर्षकक पूर्ण-शोधित आलेख *मैथिली अकादमी पत्रिका*मे प्रकाशित कएलैन्हि — जाहिमे ओ सर्वानन्दक *टीकासर्वस्व* सहित श्रीकरोपाध्यायकृत *व्याख्यामृत*, अच्युतोपाध्यायकृत *व्याख्याप्रदीप*, चतुर्भुज शर्माकृत *नामलिङ्गानुशासनवृत्ति*, मुकुन्द झाकृत *अमरमैथिलभाषाविवृत्ति*; तथा चन्द्रधारी सिंहकृत *चन्द्रिका टीका* (चन्द्रधारी सिंह २००१)सन मैथिल विद्वानक बनाओल अमरकोशक बहुमूल्य टीकासभक गहन गवेषणा कएलैन्हि। पढ़लासँ अभिज्ञात होइत अछि जे शशिनाथ झा सुभद्र झाक वैदुष्यपूर्ण कृतिसँ कि त' पूर्णत: अनभिज्ञ छथि आ कि हुनक सन्दर्भ देबाक काजदिसि विमुख। पच्चीस वर्ष पश्चात् पुनर्प्रकाशित उपर्युक्त आलेखक परिमार्जित-परिशोधित प्रारूपमे पर्यन्त शशिनाथ झा (२००९: ४४-६५) Subhadra Jha (1939-40)क उल्लेख नहि कएल अछि; तखन Colebrooke (1807)क आ Sukumar Sen (1944)क त' कथे कोन। तहिना, हेमचन्द्रकृत *देशीनाममाला*मे उपलब्ध गोट 'शताधिक' मैथिली शब्द ओ ऐतिहासिक-भाषाविज्ञानमे तकर योगदानद' देखू योगानन्द झा (१९८८)।

शशिनाथ झा (२००९)क चारि वर्ष पश्चात्, राम चैतन्य धीरज (२०१३: २४-२५) वैदिक संस्कृतमे लिखित *ऋग्वेद*मे ५०गोट मैथिलीक शब्दक उपलब्धताक दावा करैत एकगोट अति विवादास्पद/कलहपूर्ण ओ अविश्वसनीय अध्यर्थन प्रस्तुत कएलैन्हि — ओना एहि कृतिमे अग्रज अध्येता-अनुसंधाता सुभद्र झा, सुकुमार सेन, ओ शशिनाथ झाक अप्रतिम अवदानसभक कोनहु चर्च उपलब्ध नहि अछि। उदाहरणार्थ प्रस्तुत शब्दमध्य *ऋग्वेद*क किछु शब्द, यथा:

काटब	<kāṭ=a-ba>	cut=LINK-FUT-1/2HON	'I/You(HON) will cut'
	<kāṭ=a-ba>	cut=LINK-INF/GERUND	'The act of cutting', तथा
सुनू	<sun-ū >	hear-IMP-2HON + 1	'(YouHON) listen to me'

स्पष्टत: काल, पुरुष, कक्षगत आदरार्थी आदि व्याकरणिक प्रत्यय (affixes)सँ अन्वित आधुनिक मैथिलीक समापिका क्रियारूप-सन प्रतीत होइत अछि। धीरजक अध्यर्थनसँ आभासित होइत अछि जे कालान्तरमे बहुत पाछाँ जन्मल ओ मागधी अपभ्रंशक (अर्द्धमागधी अपभ्रंश नहि) पूर्वी शाखासँ नि:सृत (देखू: गंगानन्द सिंह १९५०, Tsuyoshi Nara

1979, Tanmoy Bhattacharya 2016) मैथिली भाषाक व्याकरण — जाहि भाषाक नामहुक एकरूप अद्यतन स्थिर नहि भ' सकल अछि — अपन जन्महुसँ पूर्वक प्राचीन वैदिक संस्कृतमे लिखित *ऋग्वेद*क व्याकरणकेँ गम्भीर रूपेँ प्रभावित कएने अछि। जेना एतबा मात्र प्रशस्त नहि होअए, ६ वर्ष पश्चात्, पुन: राम चैतन्य धीरज (२०१९) इहो कहि गेलाह अछि जे प्राचीन वैदिक संस्कृत आ नव्य भारतीय आर्यभाषा मैथिलीक जन्मकाल सँगहि अछि। स्पष्टत: एहि कथनसभक पुष्टिहेतु बहुतराश अनुसंधानक अपरिहार्यता अछि — से सुधी पाठकजन बुझताह। अलमति विस्तरेण।

ओना आब ई सर्वविदित भ' गेल अछि जे पहिल मैथिली-भाषी विद्वान जनिका मैथिली भाषाक तुलनात्मक शब्द-सङ्ग्रह प्रस्तुत करबाक श्रेय प्राप्त छैन्हि ओ छथि भव नाथ मिश्र जे ईष्ट इण्डिया कम्पनीक राज्यकालहिमे ई. १९१४मे *मिथिला शब्द प्रकाश:* शीर्षक अन्तर्गत मिथिला (पढ़ू मैथिली), हिन्दी, संस्कृत भाषाक कुल ५८१ शब्दक त्रैभाषिक शब्दसङ्ग्रह प्रकाशित कएने छलाह।

२. ब्युक्याननक संक्षिप्त जीवनवृत्त

फ्रान्सिस ब्युक्याननक आधिकारिक आत्मचरित वा जीवनचरित अद्यतन अनुपलब्ध अछि। ताहि हेतुएँ यत्रतत्रसँ सङ्कलित सूचनासँ अभिज्ञात होइत अछि जे हुनक जन्म 15 February 1762क' Scotland प्रदेशक Bardowie estate अन्तर्गत Stirling countyक Branziet नामक स्थानमे भेल छलैन्हि; प्रारम्भिक शिक्षा ग्लास्गो शहरमे भेलैन्हि; तत्पश्चात् चिकित्सा शास्त्रक अध्ययनकए University of Edinburghसँ 1783मे MD डिग्री प्राप्त कएलैन्हि।

ग्लास्गो शहरक ईर्दगीर्दक देहाती इलाकामे डाक्टरी पेशासँ अप्रसन्न ओ पिताक ऋण भार सतत् बढ़ैत देखि ३२ वर्षक ब्युक्यानन खिन्नभए धनार्जनक उद्येश्यसँ पानीजहाज चढ़ि १४ सितम्बर १९७४क' एकाएक भारतक कलकत्ता बन्दरगाहपर उतरि गेलाह। शीघ्रहि ईष्ट इण्डिया कम्पनीक Bengal Medical Serviceमे आबद्धभए बीसहु वर्षधरि (१७९४-१८१४) भारतमे कार्यरत रहि ब्युक्यानन चिटागौङ्ग, मलाया, मैसुर आदि स्थानक स्थलगत अध्ययन-सर्वेक्षणकए प्रतिवेदन समेत प्रस्तुत कएल: ताही क्रमैं ओ १८०२-१८०३मे नेपालक भ्रमणकए अनेकहु बहुमूल्य वनस्पतिक सङ्कलनकए गुप्त रूपैं कलकत्ता पठाओल तथा नेपालक इतिहास सेहो लिखल। परञ्च, मैथिली-भाषी समस्त मैथिलजनहेतु सर्वोपरि उपादेय सूचना ई जे ११ सितम्बर १८०७क' विज्ञप्तत: हुनका बेङ्गाल प्रेजिडेन्सी अन्तर्गतक कुल आठगोट जिल्लाक 'तथ्याङ्कगत सर्वेक्षण' करबाक अभिभारा भेटलैन्हि — जाहि मध्य ओ मैथिली सहित अन्य आठगोट भाषाक तुलनात्मक शब्द-सङ्ग्रह सेहो तैयार कएलैन्हि। प्रमाण साक्ष्य अछि जे ओ पूर्णिया जिलाक सर्वेक्षण त' कएलैन्हि परञ्च निजी कारणैं घनीभूत रूपैं मैथिली-भाषी जिला तिरहुत नहि जाए सोझे जङ्गलवाला जिला भागलपुर चलि गेलाह — आखिर ओ Botanist जे छलाह। तैं दुर्भाग्यवश तिरहुत जिलाक स्वतंत्र सर्वेक्षण-प्रतिवेदन अनुपलब्ध अछि।

फ्रान्सिस ब्युक्यानन ई. १८१५मे स्वदेश लौटि गेलाह; माएक मृत्यु पश्चात् ई.

१८१८मे माएक सर्वस्वक लोभैं अपन पारिवारिक नाम 'ब्युक्यानन' बदलि माए Elizabeth Hamiltonक पारिवारिक नाम 'ह्यामिल्टन' राखि कानूनत: **फ्रान्सिस ह्यामिल्टन** भ' गेलाह; ५९ वर्षक अधेड़ उमेरमे विवाह कएलैन्हि; आ 15 June 1829क' ६७ वर्षक उमेरमे हुनक देहान्त भेलैन्हि।

३. ब्युक्याननक मैथिली शब्दसङ्ग्रह: संक्षिप्त परिचय

फ्रान्सिस ब्युक्याननक हस्तलिखित पाण्डुलिपिमे एहि शब्दसङ्ग्रहक ने त' सङ्कलयिताक नाम आ ने कोनहु शीर्षक देल गेल अछि, परञ्च ब्रिटिश लाइब्रेरी लन्दनद्वारा प्रदत्त Information Sheetमे स्पष्टरूपेण एकर रचयिता फ्रान्सिस ब्युक्यानन आ एकर शीर्षक *Comparative Vocabularies* रूपैं प्रस्तुत कएल गेल अछि। तैं एकर शीर्षक इएह स्थिर भेल।

एहि हस्तलिखित पाण्डुलिपिमे **अङरेजी** भाषाक अतिरिक्त भारत आ नेपालक सीमावर्ती क्षेत्रक कुल आठ गोट भाषाक शब्दसभ संगृहीत अछि,, यथा **हेन्दी** (पढ़ू **हिन्दी**), **मिथिला** (पढ़ू **मैथिली**), **खस/पहड़िया** (पढ़ू **नेपाली**), **किरात**, **एयाकथुम्बा**, **मगर**, **मुर्मी**, आ **सिकिमभुटिया**। प्रविष्टिसभ तत्तत् भाषाक नीचाँ देल गेल अछि। अर्थात् मूल प्रविष्टि अङरेजीमे दए तकर समरूप आन आठहु भाषामे रोमन आ देवनागरी लिपिमे प्रस्तुत कएल गेल अछि। ब्रिटिश लाइब्रेरी लन्दनद्वारा प्रदत्त Information Sheetमे सूचित कएल गेल अछि जे एहि शब्दसङ्ग्रहमे कुल १७५९ शब्द समाविष्ट भेल अछि परञ्च गम्भीर गवेषण पश्चात् ई आभासित होइत अछि जे जैं कि किछु पृष्ठक पुनरावृत्ति भेल अछि तैं शब्दक यथार्थ संख्यामे ह्रास भ' सकैत अछि। एहि शब्दसङ्ग्रहक सभसँ विशिष्ट पक्ष ई जे शब्दसभक चयन/सङ्कलन योग्य सङ्ग्रहकर्त्ताद्वारा (विशेषत: संस्कृतज्ञ ब्राह्मण जातिक 'Assistant'द्वारा जनिक नामक स्पष्ट उल्लेख अद्यतन अनुपलब्ध अछि) क्षेत्रगत अनुसन्धानकए कएल गेल अछि — ताहि हेतुएँ एकर आधिकारिकता संदेहशून्य अछि। ओना अधिकांश चयनित शब्दसभ बभनाह/संस्कृताह होएबाक प्रबल संभावना देखना जाइत अछि। ब्राह्मण संकलकक अतिरिक्त ब्युक्यानन स्वयं चयनित शब्दसभक पुनर्निरीक्षण करैत छलाह। औष्ट्रेलियामे कार्यरत विदुषी Marika Vicziany (1986: 649)क सम्मतिमे:

> ...but Buchanan used a number of alternatives: personal observation, questionnaires to Company servants, personal interviews with pundits, peasants and artisans, and the records of interviews conducted by his Indian assistants.

तहिना, चारि वर्ष पूर्व प्रकाशित एकगोट गम्भीर अध्ययन-अनुसंधानमे Mark F. Watson & Henry J. Noltie (2016: 19)क मतैं ब्युक्यानन स्वयं अति साकांक्ष छलाह:

Buchanan trusted his own observations more than hearsay, but went to great length to garner data from local informants to back up what he saw... Buchanan would attempt to establish reliability by considering the first-hand experience of his informants and their possible motives for distorting or withholding evidence, and lastly by cross-checking with other sources - a methodology familiar to modern anthropologists.

जैं कि ई शब्दसङ्ग्रह बहुभाषिक अछि तैं एकर प्रविष्टिसभ देवनागरी लिपिक वर्णक्रमानुसार प्रस्तुत करब संभव नहि। स्वभावतः ई शब्दसङ्ग्रह Ontological अछि, अर्थात् शब्दसभक चयन जीवन-जगतक विविध पक्षसँ भेल अछि — जेना कि अमरसिंहकृत विश्वविख्यात कृति *अमरकोष*मे कएल गेल अछि। द्रष्टव्य जे उनैसम शताब्दीक पहिल दशकहिमे मैथिली भाषाक स्थिर एवम् स्तरीय वर्तनी प्रयुक्त देवनागरी लिपिमे हस्तलिखित ब्युक्याननक ई *Comparative Vocabularies* मैथिली भाषाक एकगोट अमूल्य निधि अछि।

४. उपसंहार

प्रथमतः, ई कहब समीचीन होएत जे भारत आ नेपालक मैथिली भाषाक अध्येता-अनुसन्धाता एवम् विद्वानलोकनि मैथिली शब्दकोशशास्त्र-विधामे प्रदत्त फ्रान्सिस ब्युक्याननक पुरोगामी तथा मौलिक योगदानकहेतु सतत् हुनक ऋणी रहताह।

द्वितीयतः, जौर्ज एब्राहम ग्रिअर्सनहुसँ (1881) एकहत्तरि-बहत्तरि वर्ष पूर्वहि ब्युक्यानन (1809-1810) **मैथिली ओ हिन्दी भाषाकेँ दू फराक एवम् स्वतंत्र भाषा बूझि** अलग-अलग शब्दावली प्रस्तुत कएने छलाह। स्पष्टतः ग्रिअर्सन मधुबनी क्षेत्रमे रहितहु भागलपुर आ पूर्णियामे कार्यरत अग्रज कर्मचारीक बहुमूल्य अवदानसँ अवगत नहि छलाह से बुझना जाइत अछि।

तृतीयतः, क्षेत्रानुसंधानकए, मैथिलीभाषी जनसमुदायक जीवन-जगतसँ प्रत्यक्षरूपेँ सम्बद्ध विषयमादेँ, मैथिलीभाषीजनसँ अन्तर्वार्तालए, एवम् प्रत्यक्षरूपेँ पूछि, तात्कालीन कथ्य मैथिली भाषाक चयनित-सङ्कलित शब्दसभक आधिकारिक शब्दसङ्ग्रह प्रस्तुत करबाक ई पहिल स्तुत्य प्रयत्न थिक। निस्सन्देह एहन वैज्ञानिक प्रयत्न अद्यतन अपेक्षिते रहल अछि।

निष्कर्षतः ओ अन्ततः, जँ भव नाथ मिश्र (१९१४) मैथिलीक पहिल मैथिली-भाषी तुलनात्मक-शब्दसङ्ग्रहकार छथि, आ जँ दीनबन्धु झा (१९५०) मैथिलीक पहिल मैथिली-भाषी पूर्ण शब्दकोशकार छथि, तँ फिरिङ्गी फ्रान्सिस ब्युक्यानन (१८१०) हिनका दुहुसँ पूर्वक मैथिलीक पहिल तुलनात्मक-शब्दसङ्ग्रहकार छथि।

सन्दर्भ सूची

झा, गोविन्द २०१० *अनुचिन्तन,* पटना: नवारम्भ।

झा, दीनबन्धु शाके १८७२/१९५० ई. *मिथिलाभाषाकोष,* इसहपुर: दीनबन्धु झा।

झा, योगानन्द १९८८ "*देशीनाममाला* आ मैथिली," *भाखा* (पटना) २: १०, ४८-५२।

झा, शशिनाथ १९८४ "*अमरकोश*क टीकामे उपलब्ध मैथिली शब्द," *मैथिली अकादमी पत्रिका,* जून-जुलाई, ४: ३, ४४-६५।

झा, शशिनाथ २००९ *निबन्धमन्दारमञ्जरी,* दीप-मधुबनी: तीर्थनाथ पुस्तकालय।

धीरज, राम चैतन्य २०१३ *भाषा विचार आ मैथिलीक प्राचीन साहित्य,* पटना: शेखर प्रकाशन।

धीरज, राम चैतन्य २०१९ *मैथिली भाषाक वैचारिक अस्मिता,* पटना: नवारम्भ।

मिश्र, भव नाथ १९१४ *मिथिला शब्द प्रकाशः,* काशी: श्री भूपालचन्द्र वन्दोपाध्याय।

सिंह, गंगानन्द १९५० "अखिल भारतीय प्राच्यविद्यासम्मेलनक चौदहम अधिवेशनक मैथिली शाखाक अध्यक्ष कुमार गंगानन्द सिंहक अभिभाषण १९५०," मे: देवेन्द्र झा (सङ्कलयिता, १९८३) *भाषणत्रयी,* पटना: मैथिली अकादमी, पृष्ठ ३७-७३।

सिंह, चन्द्रधारी २००१ *नामलिङ्गानुशासनं नाम अमरकोषः (श्री चन्द्रधारीसिंहशर्मणा विरचितया चन्द्रिकाख्यव्याख्यया समलंकृतः),* दरभङ्गा: कामेश्वर सिंह दरभङ्गा संस्कृत विश्वविद्यालयः।

Allen, Charles 2002 *The Buddha and the Sahibs, the Men who Discovered India's Lost Religion*, London: John Murray.

Bhattacharya, Tanmoy 2016 "Inner/outer politeness in Central Magadhan Prākrit languages: Agree as labeling," *Linguistic Analysis* 40: 3-4, 297-336.

Buchanan, Francis 1810 *Comparative Vocabularies*, MS. British Library, London.

Colebrooke, Henry Thomas 1801 "On the Sanscrit and Prācrit languages," *Asiatick Researches*: 7, 199-231.

Colebrooke, Henry Thomas 1807 APAC MSS IO/San. 156-157. British Library, London.

Grierson, George Abraham 1881 *An Introduction to the Maithilī Language of North Bihār, Part 1, Grammar*, Calcutta: Asiatic Society of Bengal.

Jha, Subhadra 1939-40 "Maithili equivalents to vernacular words found in Sarvanand's commentary on *Amarakośa," Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute* (Baroda, India) 21: 1-2, 106-114.

Nara, Tsuyoshi 1979 *Avahaṭṭha and Comparative Vocabulary of New Indo-Aryan Languages*, Tokyo, Japan: Institute for the Study of Languages and Cultures of Asia and Africa.

Sen, Sukumar 1944 "New Indo-Aryan vocables in Sarvānanda's *Ṭīkāsarvasva," Indian Linguistics*. 8: 4, 184-209.

Vicziany, Marika 1986 "Imperialism, botany and statistics in early nineteenth-century India: The surveys of Francis Buchanan (1762-1829)," *Modern Asian Studies* 20: 4, 625-650.

Watson, Mark F. & Henry J. Noltie 2016 "Career, collections, reports and publications of Dr Francis Buchanan (later Hamilton), 1762-1829: Natural history studies in Nepal, Burma (Myanmar), Bangladesh and India, Part 1," *Annals of Science*, 1-33.

Yadav, Ramawatar (ed. 2020 **Forthcoming**) *Historiography of Maithili Lexicography & Francis Buchanan's Comparative Vocabularies: Facsimile Edition of the British Library, London Manuscript*, Darbhanga: Maharajadhiraja Kameshwar Singh Kalyani Foundation, Kameshwar Singh Bihar Heritage Series-23.

निजी सङ्ग्रहालय काठमाण्डू, हामबुर्ग विश्वविद्यालय पुस्तकालय जर्मनी, केम्ब्रिज विश्वविद्यालय पुस्तकालय संयुक्त राज्य आदि स्थलसभमे संगृहीत होइतहु मूलत: नेपाल-जर्मन म्यानुस्क्रिप्ट्स प्रेजर्भेशन प्रोजेक्टक सौजन्यसँ निर्मित माइक्रोफिल्मरूपेँ नेपाल राष्ट्रिय अभिलेखालय काठमाण्डूमे अनुरक्षित अछि।

अत्यन्त खेदक गप जे विश्वभरिमे अद्यतन मध्य मैथिली नाटक ओ गीति विधाक किछुएटा पाण्डुलिपि ग्रन्थाकाररूपेँ प्रकाशित भ' सकल अछि। प्रस्तुत आलेखक अभीप्सित इष्ट थिक एहि प्रकाशित ग्रन्थसभक समीक्षात्मक परिचयसहित ताहिमे प्रयुक्त मध्य मैथिली भाषाक स्वरूपक संक्षिप्त भाषावैज्ञानिक वर्णन-विश्लेषण करब। कनेक आओरो बेकछाक' कही त' एहि आलेखक रचना कुल तीनिगोट उद्येश्यसँ अभिप्रेरितभए कएल गेल अछि : (i) मध्यकालीन नेपालमण्डलक तात्कालीन ऐतिहासिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, एवम् भाषिक तत्त्वसभक परिपेक्ष्यमे शक्तिक अधिकारी नेवारीभाषी नृपलोकनि एवम् ज्ञानक अधिकारी (परञ्च मुगल वादशाह गयासुद्दीन तुगलकक मुसलमानी आक्रमणसँ आतंकित भए प्राणरक्षा तथा विशुद्ध धनार्जन ओ यशार्जनक उत्कट अभिलाषासँ अभिभूतभए सिमरौनगढ़सँ हैँजकहैँज आप्रवासित) संस्कृतज्ञ मैथिलीभाषी राज्याश्रित पण्डित-विद्वज्जनमध्य भेल सुखद सहकार्यक (synergy) कारणेँ वा कहू जे Thomas Richards (1993)क शब्दैँ "a new symbiosis of knowledge and power"क परिणतिरूपेँ सृजित मध्य मैथिली भाषाक अनेकहु सुललित गीति-संग्रह ओ अति मनोहारी एवम् सुमञ्चनीय नाट्य कृतिसभक रचनामादैँ चर्च करब, (ii) विश्वभरिमे अद्यतन ग्रन्थाकाररूपेँ प्रकाशित मध्य मैथिली नाट्य ओ गीति विधाक कृतिसभक संक्षिप्त समीक्षात्मक वर्णन-विश्लेषण करब, तथा (iii) प्रकाशित पाण्डुलिपिसभक अवलोकन पश्चात् नेवारीभाषी नृपलोकनि-विरचित ग्रन्थसभमे आ विशेषक 'नाट्यकृतिसभमे पात्रसभक रङ्गमञ्चीय वार्तालापमे प्रयुक्त मध्य मैथिली भाषाक गद्यक स्वरूपक व्याकरणिक एवम् भाषावैज्ञानिक वर्णन-विश्लेषण करब। मूल उद्येश्य ई जे एहिसँ प्राचीन/मध्यकालीन नेपाल ओ भारत राष्ट्रक अमूल्य निधि एवम् मध्ययुगीन मैथिली भाषा-साहित्यक धरोहरसभक संरक्षणकसङ्गहि ऐतिहासिक भाषाविज्ञान (diachronic linguistics) ओ वर्णनात्मक भाषाविज्ञान (synchronic linguistics)मध्य सुखद अन्तर्सम्बन्धक (nexus) सृजन भए नेपाल आ भारतक आर्यभाषासभक वैज्ञानिक तुलनात्मक ऐतिहासिक-भाषावैज्ञानिक वर्णन-विश्लेषणमे सेहो प्रशस्त साहाय्य होएतैक। परञ्च वस्तुत:, तात्त्विकरूपेँ हमर ध्येय नेपाल राष्ट्रिय अभिलेखालयमे अनुरक्षित मैथिलीक बहुमूल्य हस्तलिखित पाण्डुलिपिसभमे अभिनिहित वा अंत:स्थापित पुन:प्रापणीय ज्ञानक उत्खनन, तत्सम्बन्धी नव-नव ज्ञानक सृजन, ओ जनमानसमे ताहि ज्ञानक सफल विकीर्णन करब थिक।

मध्य मैथिली नाट्यकृतिक हस्तलिखित पाण्डुलिपिसँ हमर पहिल साक्षात्कार चालिस वर्ष पूर्व १९८० ई.मे भेल जखन हमरा नेवारी लिपिमे लिखल एकगोट बहुमूल्य

मध्य मैथिलीक भाषावैज्ञानिक वर्णन-विश्लेषण — मध्यकालीन नेपालमण्डलक नेवार नृपलोकनि-विरचित ओ नेपाल राष्ट्रिय अभिलेखालयमे अनुरक्षित मैथिली नाट्य तथा गीति-कृतिसभक हस्तलिखित नेवारी पाण्डुलिपिक परिपेक्ष्यमे*

Since written records give us direct information about the speech-habits of the past, the first step in the study of linguistic change, wherever we have written record, is the study of these records.

Leonard Bloomfield

मैथिली साहित्यक ई दुर्भाग्य रहल अछि जे एकर प्राचीन-पोथी सभक मूल भोतिआयल जाय रहलैक अछि। वर्णरत्नाकरक मूल अप्राप्त, तरौनी पदावली बाबू नगेन्द्र गुप्त हेरओलनि, रामभद्रपुर पदावली सेहो नष्ट भेल ओ ई रागतरङ्गिणी लुप्त भ' गेल। केवल नेपाल-पदावली एखनहु नेपाल अभिलेखालयमे सुरक्षित अछि, सेहो ओ नेपालमे अछि तेँ बँचल अछि।

शशिनाथ झा

१. उपोद्घात

मध्यकालीन नेपालमण्डलमे नेवार राजालोकनि विरचित एवम् नेवारी भाषाक *नेपालाखल* (सं. *नेपालाक्षर*, आधुनिक नेवारी *नेपा:अख:*) लिपिमे लिखित मध्य मैथिलीक नाट्य ओ गीति विधाक अनेकहु हस्तलिखित पाण्डुलिपि सम्प्रति काठमाण्डू शहरस्थित नेपाल राष्ट्रिय अभिलेखालयमे अनुरक्षित अछि। ओना ध्यातब्य जे मध्य मैथिलीक नाट्य ओ गीति विधाक ई हस्तलिखित पाण्डुलिपिसभ छिटफुटरूपेँ आसा सफु काठमाण्डू, नेपाल अनुसन्धान केन्द्र पुस्तकालय काठमाण्डू, केशर पुस्तकालय काठमाण्डू, व्यक्ति-विशेषक

*आँजुर ३३: ९५, २०२०, पृ. ३-२१मे प्रकाशित।

मैथिली नाटकक हस्तलिखित पाण्डुलिपिक छायाप्रति प्रेमबहादुर कसाक सौजन्यसँ प्राप्त करबाक सुअवसर प्राप्त भेल छल — ज्ञातव्य जे प्रेमबहादुर कसा ई. १९६४मे नेवार नृप *जयप्रकाशकृत रत्नेश्वर प्रादुर्भाव* नामक नेवारी नाटकक सम्पादन-प्रकाशन जुजु *जयप्रकाशया रत्नेश्वर प्रादुर्भाव* शीर्षक अन्तर्गत कए चुकल छलाह। स्मरणीय ईहो जे ताहि मैथिली नाटकक प्रारम्भिक वर्णन-विश्लेषणगत एकगोट आलेखक प्रस्तुतीकरण हम १९८२ ई.क अप्रिल मासक १८ तारीखक' काठमाण्डू शहरस्थित विश्वभाषा क्याम्पस परिसरमे आयोजित Literary Association of Nepalक सभाकक्षमे कएल छल (cf. Ramawatar Yadav & Ratneshwar Jha 1982)। पछाति ओ आलेख यादव (१९९०)मे नेपाली भाषाक माध्यमेँ प्रकाशित भेल छल।

प्रस्तुत आलेखक प्रतिपाद्य विषय प्रत्यक्षत: जर्मनीक विश्वविद्यालयसभमे १९८३सँ २०१८ ई.धरि कुल ३५ वर्षक स्वयम् हमर अपन अभिलेखीय-भाषावैज्ञानिक अनुसन्धान-कार्यपर आश्रित अछि (cf. Yadav 2004, 2011, 2018, 2019, 2020), परञ्च परोक्षत: भारत, जर्मनी, नेपाल, तथा जापानमे ग्रन्थाकाररूपेँ अद्यतन प्रकाशित समग्र मैथिली पाण्डुलिपिसभक गम्भीर अध्ययन-अनुशीलनसँ प्रशस्त संबल सेहो प्राप्त भेल अछि।

२. मध्ययुगीन मैथिली पाण्डुलिपि: सांख्यिकी

नेपाल राष्ट्रिय अभिलेखालयमे मध्य मैथिलीक कुल कतेक पाण्डुलिपि संगृहीत/संरक्षित अछि ताहिमादे विद्वानलोकनिमध्य मतैक्य नहि-सन देखना जाइत अछि। ई. १९५७क दोसर बेरिक नेपाल भ्रमणकालमे अन्वेषित संस्कृत प्रहसन *मैथिली-धूर्त्तसमागम* शीर्षकक ग्रन्थरत्नक अङरेजी भूमिकामे Jayakanta Mishra (ed. 1960, 'Introduction', p. 1) कहैत छथि जे नेपाल राष्ट्रिय अभिलेखालयमे "as many as 300 old Mss. in Maithili" अनुरक्षित अछि; Horst Brinkhaus (1987)क मतेँ एहि अभिलेखालयमे "some 150 Newari and/or Mithilākṣara hand-copied manuscripts" संरक्षित अछि; आ तारानन्द मिश्र (२००५, २०१५)क सम्मति छैन्हि जे आशा सफू, केशर पुस्तकालय, एवम् नेपाल राष्ट्रिय अभिलेखालयमे कुल ४०० पाण्डुलिपि संगृहीत अछि — जाहिमध्य हालहि आविष्कृत भेल मैथिलीक महानतम कवि विद्यापति विरचित आयुर्वेद शास्त्रक अनुपम ग्रन्थरत्न *वैद्यरहस्य* सेहो संगृहीत अछि। तहिना, अमेरिकाक जौर्जिया राज्यक आप्रवासन कालमे Kamal P. Malla (Personal Communication, Email 2012) विश्वस्त भावेँ हमरा लिखि जनौने छलाह जे नेपाल राष्ट्रिय अभिलेखालयमे कुल १५३गोट नाट्यकृति (ओ अनेकहु नेवारी तथा मैथिली काव्य ग्रन्थ) संरक्षित अछि जाहिमे २६-३० नेवारीमे, ५-६ बाङला तथा हिन्दी/व्रजभाषा/अवधीमे, आ शेष सभ अर्थात् ११५सँ बेसी नाटक मैथिलीमे अछि। परञ्च हमर ई विश्वस्त धारणा अछि जे एखनहु अनेकहु नव-नव

ग्रन्थक पाण्डुलिपिसभ अनन्वेषित अछिए आ अत्यन्त खेदक गप जे अद्यावधि संसारभरिमे मैथिलीक पाण्डुलिपिसभक सम्पादन-प्रकाशन अत्यल्प मात्रामे भ' सकल अछि — जाहिदिसि नवतुरक विद्वज्जनक ध्यान आकर्षित होएब आवश्यके नहि अपितु अपरिहार्य।

३. प्रकाशित ग्रन्थ: संक्षिप्त परिचयात्मक टिप्पणी

आब ई ज्ञान सार्वजनीन भ' चुकल अछि जे जर्मनीक August Conrady पहिल एहन विद्वान छथि जनिका पाटनक नेवार-नरेश सिद्धिनरसिंहमल्ल (1620-1661) विरचित प्रथम मैथिली नाट्यकृति *हरिश्चन्द्रनृत्यम्* क जर्मन संस्करण *Das Hariścandranṛtyam Ein Altnepalesisches Tanzspiel* शीर्षक अन्तर्गत जर्मनीक लाइप्त्सिग (Leipzig) शहरसँ १८९१ ई.मे प्रकाशित करबाक गौरव प्राप्त भेलैन्हि। ग्रन्थक शीर्षक अस्पष्ट वा द्व्यार्थक अछि, सङ्गहि एहि कृतिक भाषा *Mischsprache* मैथिली ओ बाङला मिश्रित अछि। ताहि भाषागत भ्रमक सफल निवारण ११४ वर्ष पश्चात् कएलैन्हि गोविन्द झा (२००५) एक गहन गवेषणात्मक आलेखसँ — जाहिमे अपन नितान्त निजी विशिष्ट अन्वेषण विधि, इस्पाती परिशुद्धता, अजेय तर्कशक्ति, एवम् अविवाद्य ऐतिहासिक-भाषावैज्ञानिक साक्ष्यक साहाय्यसँ ओ ई सिद्ध कएलैन्हि जे *हरिश्चन्द्रनृत्यम्* नाटकमे बाङला भाषाक प्रयोग होइतहु वस्तुत: ई मैथिलीए भाषाक गौरवशाली ग्रन्थ अछि, बाङलाक नहि। हालहि रमानन्द झा 'रमण' (सङ्कलन-सम्पादन, २०१९) एहि नाटकक मैथिली संस्करण *रामभद्रशर्माकृत हरिश्चन्द्रनृत्यं (मल्लकालीन मैथिली नाटक)* शीर्षक राखि उत्तर भारतक झारखण्ड प्रदेशक राँची शहरसँ सङ्कलन-सम्पादनकए प्रकाशित कएलैन्हि अछि — जाहिमे गोविन्द झा, आनन्द मिश्र, ओ जर्मनीक Elma Rennerक अवदानसभ सेहो संगृहीत अछि। जे से, मुदा सत्य तथ्य ई अछि जे अपन 'दोसर' पीएच.डी. डिग्रीकहेतु आउगुष्ट कोनराडी तात्कालीन जर्मनीक अति प्रसिद्ध लाइप्त्सिश विश्वविद्यालयमे एहि कृतिक 'प्रकाशित' प्रति सोमवार २३ नभेम्बर १८९१ दिनक १२ बजे *Habilitationsschrift* वा कहू जे "Professorial Dissertation"रूपेँ स्वीकृतार्थ प्रस्तुतकए ताही दिन सफल भए उक्त उपाधिसँ सुशोभित भेल छलाह।

बीसम शताब्दीक प्रथम दशकमे वा कहू जे ब्रिटिश राजमे, बेङ्गाल प्रेसिडेन्सीक ईष्ट इण्डिया कम्पनीक आज्ञासँ आ एसियाटिक सोसाइटी औफ बेङ्गालक तत्वावधानमे बङ्गालक प्रसिद्ध विद्वान महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री विरल ओ दुष्प्राप्य संस्कृत पाण्डुलिपिसभक अन्वेषणार्थ कुल दुइबेरि नेपालक आ एकबेरि वाराणसीक यात्रा कएलैन्हि (cf. Shāstrī 1905, 1911)। तदुत्तर, कलकत्ता ओ आसपासक किछु नामवर बङ्गाली विद्वानलोकनि मध्यकालीन नेपालक ५गोट मैथिली नाट्यकृतिक अति मनोयोगसँ सम्पादन-प्रकाशन कएलैन्हि — खेदक गप जे ओलोकनि कतेकहु मैथिली कृतिकेँ बङ्गालोक कृति मानि लेलैन्हि। यथा, ननिगोपाल बन्दोपाध्याय (बङ्गाब्द १३२४/१९१७ ई.)

भूपतीन्द्रमल्लक (१६९६-१७२२) *महाभारत*, १७०२, तथा *विद्याविलाप*, १७२०, एवम् रणजितमल्लक (१७२२-१७६९) *माधवानल-कामकन्दला* मैथिली नाटकक बङ्गाली संस्करण *नेपालेर बाङ्गाला नाटक* शीर्षक अन्तर्गत कलकत्तासँ प्रकाशित कएलैन्हि। तद्वत् प्रबोध चन्द्र बागची (बङ्गाब्द १३४७/१९४० ई.) जगज्ज्योतिर्मल्ल (१६१४-१६३७)कृत मैथिली नाटक *कुञ्जविहार* कलकत्ता विश्वविद्यालयक बङ्गाली मासिक पत्रिका *परिचय*मे प्रकाशित कएलैन्हि, आ तहिना बिजितकुमार दत्त (सं. १९८०) जगज्ज्योतिर्मल्लकृत मैथिली नाटक *मुदितकुवलयाश्व*, १६२८, पश्चिम बङ्गालस्थित बर्धमान विश्वविद्यालयसँ *प्राचीन-बाङ्गाला-मैथिली-नाटक* शीर्षक अन्तर्गत प्रकाशित कएलैन्हि।

हुनक चौबीस वर्ष पश्चात् एकगोट नेवार युवा अनुसन्धाता राजित्बहादुर श्रेष्ठ (२००४) *काशीविजय* नामक नाटककेँ भ्रमवशात् मैथिली भाषाक कृति बूझि तकर नेवारी संस्करण पाटनसँ प्रकाशित कएलैन्हि अछि — जे हमरा विचारेँ मूलतः (मैथिली-मिश्रित) बाङला भाषाक नाटक अछि।

तहिना, बिहार प्रदेशक अनेकहु मैथिलीभाषी विद्वानलोकनि नेवार नृप विरचित एवम् *नेपालाखल* लिपिमे लिखित कतिपय नाट्यकृतिक सम्पादन-प्रकाशनक दुर्वह कार्यदिसि दत्तचित्तसँ प्रवृत्त भेलाह — जाहिमे अति लब्धप्रतिष्ठ ओ अग्रगण्य छथि रामदेव झा। वस्तुतः रामदेव झाकँ नृप जगज्ज्योतिर्मल्लकृत पाँचगोट नाट्यकृतिक सम्पादन-प्रकाशन करबाक सुखद सुयश संप्राप्त छैन्हि, यथाः जगज्ज्योतिर्मल्ल कृत *हरगौरी विवाह नाटक* (१९७०), *कुञ्जविहार नाटक* (१९७६, पुनर्प्रकाशित), जगज्ज्योतिर्मल्लकृत *दशावतार नृत्यम् ओ षोड़श गीतम्* (१९८८), तथा जगज्ज्योतिर्मल्ल कृत *मुदितकुवलयाश्व नाटक* (२०१३, पुनर्प्रकाशित)। स्मरणीय जे हुनकहुसँ पूर्व जयकान्त मिश्र (सं. १३६८ साल/१९६० ई.) नेपालसँ ज्योतिरीश्वर ठाकुरक *धूर्त्तसमागम* संस्कृत नाटकक एकगोट पाण्डुलिपिक छायाप्रति आनि *मैथिली धूर्त्तसमागम* शीर्षक अन्तर्गत इलाहाबादसँ प्रकाशित कएने छलाह, तहिना पुनः इलाहाबादहिसँ जयकान्त मिश्र (सं. १९६५) भूपतीन्द्रमल्लकृत पूर्व-प्रकाशित *विद्याविलाप* नाटकक पुनर्सम्पादन-प्रकाशन *विद्याविलापः नेपालीय मैथिली नाटक* शीर्षक अन्तर्गत कएने छलाह। तत्पश्चात् लेखनाथ मिश्र (सं. १९७२) जगतप्रकाशमल्लकृत *प्रभावती हरण* नाटकक केम्ब्रिज विश्वविद्यालयक पाण्डुलिपिक सम्पादन-प्रकाशन सेहो कएलैन्हि। आ, तद्वत्, हालहि रमानन्द झा 'रमण' (२०१९) *रामभद्रशर्माकृत हरिश्चन्द्रनृत्यं (मल्लकालीन मैथिली नाटक)* शीर्षकक ग्रन्थ राँचीसँ प्रकाशित कएलैन्हि अछि।

आउगुष्ट कोनराडीक एक शताब्दी पश्चात् एकगोट आन जर्मन विद्वान Horst Brinkhaus (1987) पुनः जर्मनीक Hamburg Universityसँ अपन 'दोसर' पीएच. डी. उपाधिहेतु अति मनोयोगसँ जगतप्रकाशमल्ल विरचित *प्रद्युम्नविजय-नाटकक* अङरेजी संस्करण अङरेजी अनुवादसहित जर्मनीक श्टुटगार्ट शहरसँ प्रकाशित कएलैन्हि — द्रष्टव्य

जे ई कृति अद्यतन मध्य मैथिलीक नवतुरक अनुसन्धित्सु अध्येतालोकनिकहेतु एकगोट अनुकरणीय साँचा-तुल्य सिद्ध भेल अछि।

ब्रिङ्कहाउसक २४ वर्ष पश्चात्, Ramawatar Yadav (ed. 2011) राजा भूपतीन्द्रमल्ल (१६९६-१७२२)कृत मध्य मैथिली नाटक *पर्शुरामोपाख्यान*क प्रतिकृतिसहित समीक्षात्मक अङरेजी संस्करण *A Facsimile Edition of a Maithili Play Bhūpatīndramalla's Parśurāmopākhyāna-nāṭaka* शीर्षक अन्तर्गत नेपाल-भारत बी. पी. कोइराला प्रतिष्ठान, भारतीय दूतावास, नेपालक आर्थिक साहाय्यसँ काठमाण्डूसँ प्रकाशित कएलैन्हि। एहि संस्करणक मुख्य विशेषता ई जे एहिमे मूल नेवारी पाण्डुलिपिक सुपठनीय प्रतिकृति (पृ. ७७-१३९), देवनागरी लिप्यन्तरण (पृ. १४१-१९४), रोमन लिप्यन्तरण (पृ. १९५-२५२), ओ अङरेजी अनुवाद (पृ. २५३-३२०) प्रस्तुत भेल अछि। ताहूसँ विशिष्ट पक्ष ई जे एहि कृतिक 'Introduction' (पृ. २१-७६)मे नाटकक कथोपकथनमे प्रयुक्त मध्य मैथिली गद्यक गहन गवेषणा पश्चात् ताहि गद्यक भाषाक स्वरूपपर आधारित मध्य मैथिलीक एकगोट पूर्ण व्याकरणक निर्माणभए तकर भाषावैज्ञानिक वर्णन-विश्लेषण प्रस्तुत भेल अछि जाहिमे मध्य मैथिलीक वर्तनी, ध्वनिशास्त्र, शब्दविचार, एवम् वाक्य ओ अर्थविचारक सोदाहरण व्याख्या पाठगत साक्ष्यसहित कएल गेल अछि।

तीनि-चारि वर्ष पश्चात्, जापानक ओसाका विश्वविद्यालयमे कार्यरत एकगोट युवा अनुसन्धाता Makoto Kitada (2014, 2015) जगज्ज्योतिर्मल्लकृत *मदालसाहरण नाटक*क जापानी संस्करण मूल नेवारी पाठक रोमन लिप्यन्तरणसहित ताहि विश्वविद्यालयक जर्नल *Indomizokukenkyu* (Indian Folk Culture Research) मे आलेख रूपेँ कुल दू किश्तमे प्रकाशित कएलैन्हि।

सारांशतः ई ज्ञान निसृत होइत अछि जे नेपाल उपत्यकाक नेवार नृपलोकनि विरचित अनुमानतः ११५ मैथिली नाटकमध्य अद्यतन कुल १३गोट नाट्यकृति मात्र प्रकाशित भ' सकल अछि।

अन्ततः, प्रकाशित ग्रन्थमादे एकाधटा संक्षिप्त टिपपणी निचाँ प्रस्तुत कएल गेल अछिः

(१) रामावतार यादवकेँ छाड़ि आइधरि आन कोनहु विद्वान-सम्पादक मूल नेवारी *नेपालाखल* पाठक प्रतिकृति प्रकाशित नहि कएलैन्हि अछि — ताहि कारणेँ जिज्ञासु-अनुसन्धित्सु पाठकगण नेवारी मूल पाठ ओ तकर देवनागरी ओ रोमन लिप्यन्तरणमध्य विद्यमान अनायास विभेदक सही आकलन करबामे असमर्थ होइत छथि।

(२) नेवारीभाषी प्रतिलिपिकारजन्य भाषिक ओ वर्तनीगत त्रुटिसभक सही ठेकान करब सेहो दुष्कर भ' जाइत अछि।

(३) ग्रन्थाकार रूपेँ प्रकाशित कृतिसभक अध्ययन-अनुशीलन पश्चात् ईहो बोध होइत अछि जे परमादरणीय विद्वान-सम्पादकलोकनि कतहु-कतहु हुसि गेलाह अछि

— स्मरणीय जे जर्मन विद्वान होर्ष्ट ब्रिङ्कहाउस लेखनाथ मिश्र संपादित *प्रभावती हरण* नाटकमे नेवारीसँ देवनागरी लिप्यन्तरण कार्यमे अनायास भेल अनेकहु नेवारी भाषा पाठगत त्रुटिसभक उल्लेख करैत छथि।

(४) तद्वत्, श्रद्धेय रामदेव झा (२०१३) कुल ५१ पृष्ठक 'प्ररोचना' सहित वैदुष्यपूर्ण सम्पादित-प्रकाशित ग्रन्थरत्न जगज्ज्योतिर्मल्ल कृत *मुदितकुवलयाश्व* नाटक मादे अत्यन्त इमान्दारीपूर्वक नेवारी भाषाक पूर्ण ज्ञानक अभावेँ वा कहू जे नेवारीभाषी विद्वानक साहाय्य ताहि ठाम तत्काल अनुपलब्ध भेलासन्ताँ नेवारी भाषामे लिखल मञ्च-निर्देशमे प्रयुक्त सभ नेवारी शब्दक सही मैथिली अनुवाद नहि भेलासँ कतहु-कतहु त्रुटि पर्यन्त होएबाक कथ्य स्वीकार करैत छथि (व्यक्तिगत वार्तालाप, कविलपुर-लहेरियासराय, १६-०५-२०१३) — जे हुनक महानता थिक।

एही प्रसंगेँ, मध्य मैथिली पाण्डुलिपिसभक सम्पादन-प्रकाशन कार्य कतेक कष्टसाध्य अछि ताहिमादे व्यक्त हमर विचार (यादव २०१९: ९) निचाँ उद्धृत अछि:

> मुदा अछि ई काज अति कष्टसाध्य। हस्तलिखित पाण्डुलिपिसभक समीक्षात्मक संस्करण-कार्य आसान नहि अछि। एहि कार्यक सफल सम्पादनकहेतु कठोर परिश्रम, अदम्य साहस, दीर्घ काल, गहन गवेषणा, त्रिभाषा (संस्कृत, नेवारी, मैथिली) ज्ञान, ऐतिहासिक एवम् पुरातात्त्विक ज्ञान, सही लिप्यन्तरण क्षमता, पद-विच्छेद करबाक सामर्थ्य, अनुवाद कौशल, प्रतिलिपिकारजन्य त्रुटि-विश्लेषण आदि गुणसभक खगता पड़ैत छैक। ई समस्त गुणसभक समष्टि कोनहु एक विद्वान व्यक्तिमे नहिओ भ' सकैत अछि, ताहि हेतुएँ एहि काजमे विद्वत्समुदायक (a team of scholars) सहभागिता प्रयोजनीये नहि अपितु अपरिहार्य देखना जाइत अछि।

आब आबी मध्य मैथिली गीति विधादिसि। शैलेन्द्र मोहन झा (१९६९) पहिल भारतीय विद्वान छथि जनिका पाटन नरेश सिद्धिनरसिंहमल्ल विरचित कुल १३गोट मध्य-मैथिली गीतसभक आधुनिक मैथिलीमे अर्थसहित एकगोट लघु संग्रह दरभंगासँ *सिद्धि नरसिंह मल्ल* शीर्षक अन्तर्गत प्रकाशित करबाक श्रेय प्राप्त छैन्हि। एहि गीतसभक संकलन *रागतरङ्गिणी, राग-भजनसंग्रह*, तथा *भाषा-गीत-संग्रह*-सन प्रकाशित/अप्रकाशित संग्रहसँ कएल गेल अछि। परञ्च सूक्ष्म पर्यवेक्षणसँ अवगत होइत अछि जे कुल १३ गीतमध्य १२गोट गीत त' मात्र तिरहुता (मिथिलाक्षर) लिपिमे लिखल *भाषा-गीत-संग्रहक* पाण्डुलिपिसँ संगृहीत अछि।

नेपालक प्रसिद्ध शहर बिराटनगरसँ *मैथिली* नामक एक लघुकाय मैथिली पत्रिकाक सम्पादकीयमे प्रफुल्ल कुमार मौन (वि.सं. २०२८/१९७१ ई.) कान्तिपुर

नरेश प्रतापमल्ल (१) ओ भक्तपुर नरेश भूपतीन्द्रमल्ल (२) विरचित कुल तीनिगोट विरल शिलोत्कीर्ण मध्य मैथिली गीतक देवनागरी लिप्यन्तरण प्रकाशित कएलैन्हि। बिराटनगरक *मैथिली* पत्रिकाक ताही अङ्कमे रामदेव झा (वि.सं. २०२८/१९७१ ई.) सेहो जगतप्रकाशमल्ल, जितामित्रमल्ल, तथा प्रतापमल्ल विरचित कुल १८गोट शिलोत्कीर्ण मध्य मैथिली गीतक देवनागरी लिप्यन्तरण वैदुष्यपूर्ण विश्लेषणसहित प्रकाशित कएलैन्हि।

चोट्टहि, सुन्दर झा शास्त्री (वि.सं. २०२९/१९७२ ई.) जगतप्रकाशमल्लकृत *नानार्थ देव देवी गीत संग्रहक* कुल १११ गीतक पूर्ण पाठ अपनहि सम्पादकत्वमे काठमाण्डूसँ प्रकाशित एकगोट अति कृशकाय मैथिली पत्रिका फूल-पातमे पादटिप्पणीमे अनेकहु कठिन शब्दसभक अर्थ-व्याख्यासहित पूर्ण मनोयोगसँ प्रकाशित कएलैन्हि।

ततःपर, दुर्गानाथ झा 'श्रीश' (सं. शाके १८९६/१९७४) जगज्ज्योतिर्मल्ल विरचित ५०गोट मध्य मैथिली गीतक संग्रह *गीत पञ्चाशिका*, १६२८,क पूर्ण पाठक कुशल सम्पादन-प्रकाशन *नृपतिजगज्ज्योतिर्मल्ल-कृत गीत-पञ्चाशिकाक* शीर्षक अन्तर्गत दरभंगासँ कएलैन्हि — जाहिमे आठ पृष्ठक 'प्रस्तावना ' (पृ. क-ज) आ तहिना आठ पृष्ठक 'टिप्पणी ' (पृ. २७-३४) सेहो प्रस्तुत भेल अछि।

तीनि वर्ष पश्चात्, सुरेन्द्र झा 'सुमन' ओ रामदेव झा (सं. १९७७) मैथिली अकादमी, पटनासँ *मैथिली प्राचीन गीतावली* शीर्षकक मूल्यवान ग्रन्थ प्रकाशित कएलैन्हि जाहिमे पाटन नरेश सिद्धिनरसिंहमल्ल विरचित १०गोट गीतक सन्निवेश सेहो भेल अछि।

ताही वर्ष, जयमन्त मिश्र (सं. १९७७) सेहो कान्तिपुर ओ भक्तपुर नरेशलोकनि विरचित कुल २१गोट अति विरल ओ दुर्लभ शिलोत्कीर्ण मध्य मैथिली गीतक संकलन मैथिली अकादमी, पटनासँ *मैथिली अभिलेख गीतमाला* शीर्षक अन्तर्गत प्रकाशित कएलैन्हि।

अनेकहु वर्ष पश्चात्, लेखनाथ मिश्र ओ भक्तीश्वर झा (सं. २०१०) *जगज्ज्योतिर्मल्ल पदावली* शीर्षक अन्तर्गत कुल २५० मध्य मैथिली गीतक संग्रह पटना विश्वविद्यालयक मैथिली डिभेलपमेण्ट फण्डसँ प्रकाशित कएलैन्हि — जाहि संग्रहमे *गीत-पञ्चाशिका* (५०), *गीतसंग्रह* (१४८), एवम् *रागभजनसँ* संकलित किछु गीत (५२) संगृहीत अछि। दुर्भाग्यवश, सम्पादकद्वय मिश्र ओ झा (२०१०) 'श्रीश' (१९७४)क सम्पादित-प्रकाशित पूर्व कृति नृपतिजगज्ज्योतिर्मल्ल-कृत *गीत-पञ्चाशिकाक* कतहु उल्लेखहु नहि कएल अछि।

अन्ततः, Ramawatar Yadav (ed. 2018) भक्तपुर नरेश जगतप्रकाशमल्लद्वारा अपन अभिन्न ओ 'जिवतुल्य' मित्र चन्द्रशेखरसिंहक मृत्योपरान्त सर्जित अति प्रशस्तिपरक परञ्च सुललित ओ घनीभूतरूपेँ शोकपूर्ण कुल ४०गोट शोकगीत, *गीतपञ्चक*, १६६२, मूल नेवारी पाठक प्रतिकृति, तकर देवनागरी ओ रोमन लिप्यन्तरण, तथा अङरेजी अनुवादसहित *Elegy Written in a Royal Courtyard: A Facsimile*

Edition of Jagatprakāśamalla's Gītapañcaka शीर्षक अन्तर्गत नई दिल्ली, भारतसँ प्रकाशित कएलैन्हि। एकगोट पद्य-कृतिक सम्पादन होइतहु रामावतार यादवक एहू ग्रन्थमे मध्य-मैथिलीक भाषिक/व्याकरणिक स्वरूपक विशद् वर्णन-विश्लेषण प्रस्तुत भेल अछि। एहि ग्रन्थक एकगोट आओरो विलक्षण उपलब्धि ई जे एहिमे नेवार नरेश विरचित आ कहू जे आइधरिक सभसँ पुरान ओ हमरा जनितेँ 'पहिल' मैथिली बारहमासा लोकगीतक सन्निवेशकसङ्गहि तकर विशद् वर्णन-विवेचन पर्यन्त कएल गेल अछि।

४. सिमरौनगढ़-नेपालमण्डल सम्बन्ध

नेपाल ओ आनहु ठामक इतिहासकार तथा भाषावैज्ञानिकलोकनि ई देखि आश्चर्यचकित छथि जे नेपाल उपत्यकाक खाधिमे — जतए मल्ल वंशक राजा आ समस्त प्रजाजन एकगोट भिन्न तिब्बती-बर्मन परिवारक नेवारी भाषा बजनिहार छथि ओ जनिक रीतिरिवाज, खानपान, एवम् परिधान पर्यन्त नितान्त भिन्न छैन्हि — ततए आर्यभाषा परिवारक मैथिली भाषा किएक आ कोन विधिएँ प्रचलित एवम् आदृत भए साहित्य-सृजनक एकगोट अति सशक्त माध्यम बनि प्रतिष्ठापित भेल देखना जाइत अछि। ततबहि नहि अपितु नेपालक मल्ल युग मैथिली साहित्यक नाट्य कृतिक स्वर्ण युग रूपेँ घोषित पर्यन्त भेल अछि। एहि अनुच्छेदमे किछु ऐतिहासिक-राजनीतिक-भाषावैज्ञानिक तत्त्वसभक — जाहि कारणेँ सिमरौनगढ़-नेपाालमण्डल सम्बन्ध स्थापित भेल — संक्षिप्त वर्णन प्रस्तुत होएत, सङ्गहि बाङला भाषाकेँ उछटि मैथिली भाषा कोना नेवार नृप विरचित असंख्य मैथिली नाट्य ओ गीति कृतिक अविवाद्य ओ सबल माध्यम भ' गेल तकर चर्च सेहो कएल जाएत। ओना एहि विषयक विशद् वर्णनहेतु देखू Ramawatar Yadav (ed. 2011: 3-8)।

नेवार इतिहासकार तथा आन इतिहासकारमध्य तात्कालीन इतिहासक किछु घटनामादे पूर्ण मतैक्य नहि होइतहु नेपाल आ भारतक अनेकहु इतिहासकारलोकनि निचाँ प्रस्तुत घटनासभकेँ प्रामाण्कि तथ्य मानैत छथि:

(१) कार्णाट वंश (१०९७-१३२०)क महासामन्ताधिपति नान्यदेव (१०९७-११४७) '*सिमलओन/सिमरओन*' गढ़ (रामदेव झा सं. २०१३: ६२) राज्यक स्थापना कएल — जे सम्प्रति गणतंत्र नेपालक प्रदेश नं २क भोजपुरीभाषी क्षेत्र वारा जिलामे अवस्थित अछि।

(२) सिमरौनगढ़क अन्तिम सामन्त/सरदार/राजा हर(रि)सिंहदेव (१३१६-१३२४)क सन्धिविग्रहिक मन्त्री चण्डेश्वरठक्कुरक नेतृत्वमे हुनक सेनाद्वारा १२९० तथा १३११ ई.मे कुल दुइबेरि नेपाल उपत्यकापर आक्रमण (Kumar Pradhan 1991: 10; देखू ज्ञानमणि नेपाल वि. सं. २०६२/२००५ ई., १८३-१८५ सेहो)।

(३) पुनः १३१४ ई.मे चण्डेश्वरठक्कुरक नेपाल उपत्यकाक किछु भूभागपर आधिपत्य (रामदेव झा १९९५: ९)।

(४) १३२४ ई.मे दिल्लीक सुल्तान गयासुद्दीन तुगलक (१३२०-१३२५)द्वारा सिमरौनगढ़क राजा हरिसिंहदेवपर मुसलमानी आक्रमण ओ युद्धमे हरिसिंहदेवक पराजय आ पछाति नेपालमण्डलदिसि पड़ाइत काल नेपालक दोलखाक लगमे अवस्थित तीनपाटन नामक स्थलमे ई. १३२६मे हुनक रहस्यमय मृत्यु।

(५) सिमरौनगढ़ राज्य ओ नेपाल उपत्यकामध्य सम्बन्ध-सेतु निर्माणक प्रारम्भ मूलतः राजा हरिसिंहदेव ओ हुनक सुपुत्र राजकुमार जगतसिंह दुहुक विवाह नेपाल उपत्यकाक मल्ल वंशक राजकुमारीसँ भेलासन्ताँ देखना जाइत अछि — राजा हरिसिंहदेवक विवाह राजा जयतुङ्गमल्ल एवम् पद्मलक्ष्मीदेवीक — जे पद्मल्लदेवी नामेँ प्रसिद्ध छथि — सुपुत्री राजकुमारी देवलक्ष्मीदेवीसँ (जे देवलदेवी नामेँ प्रसिद्ध छथि) भेलैन्हि आ राजकुमार जगतसिंहक विवाह राजा जयतुङ्गमल्लक सुपुत्र राजा रुद्रमल्लक सुपुत्री नायकदेवीसँ — जे काशीनरेशक वंशमे जनमल राजकुमार हरिश्चन्द्रक व्याहता विधवा छलीह।

(६) दुहु राज्यक सम्बन्ध आओरो बेसी प्रगाढ़ तखन भेल जखन १३५४ ई.मे राजा हरिसिंहदेवक सुपुत्र जगतसिंहक सुपुत्री राजकुमारी राजल्लदेवीक विवाह नेपालमण्डलक मल्ल वंशक संस्थापक राजकुमार स्थितिराजमल्लसँ भेलैन्हि एवम् राजल्लदेवीक साहाय्यसँ राजा श्रीजयस्थितिराजमल्ल (१३८१/२-१३९५) नेपाल उपत्यकाक पहिल कुशल शासक बनबामे समर्थ भेलाह। आन शब्देँ कही त' नेवार राज्यक पहिल संस्थापक-शासक श्रीजयस्थितिराजमल्ल तात्कालीन समतल प्रदेशस्थित सिमरौनगढ़ राज्यक कर्णाट-वंशीय मैथिलीभाषी राजकुमार जगतसिंहक 'ज्वाइँ-नारायण/घर-जमाय-राजा' भेलाह। एहि ठाम ध्यातव्य जे, इटालियन विद्वान लूचियानो पेटेच (१९५८)केँ आधार मानि, राजेन्द्र राम (१९७७: ५८) ई निष्कर्ष निकाललैन्हि जे तात्कालीन नेवार समुदायमे बौद्ध धार्मिक ओ सामाजिक प्रणालीक वर्चस्व होइतहु राजा श्रीजयस्थितिराजमल्ल मैथिल तथा अन्य भाँतिक ब्राह्मण विद्वानक साहाय्यसँ नेपालमण्डलमे सनातनी हिन्दू ब्राह्मणवादी जातिप्रथाक प्रतिस्थापन सेहो कएल। हुनकहि शब्दमे:

> एक दक्ष विधायक जेकाँ जयस्थितिमल्ल भारतक हिन्दू सामाजिक दृष्टिकोण सँ सम्बद्ध कतिपय विचारधाराक समर्थक पाँच ब्राह्मण विद्वानक एक समिति बनाओल। कीर्त्तिनाथ उपाध्याय कान्यबुब्ज, रमानाथ झा, रघुनाथ झा मैथिल, श्री नाथ भट्ट आओर महीनाथ भट प्रमुख भारतीय विद्वज्जन छलाह जे लोकनि नेपाली समाजक सम्पूर्ण प्रणालीकेँ एक सुनिश्चित सनातनी गठन मे विधिवद्ध करबामे सहयोग देल।

आब ई बात स्वत:सिद्ध भ' गेल अछि जे १७६८ ई.मे पृथ्वीनारायण शाहक राज्यारोहणसँ पूर्व चौदहमसँ अठारहम शताब्दीधरि नेपाल उपत्यकामे बङ्गाली, मैथिली, नेवारी (आ हिन्दी) भाषासभक आधिपत्य छल। इतिहास साक्ष्य अछि जे स्थितिराजमल्लक शासन कालसँ जगज्ज्योतिर्मल्लक शासनक प्रारम्भसँ पूर्वधरि साहित्य-सृजनक प्रमुख सशक्त माध्यम बङ्गाली भाषा छल। परञ्च, जगज्ज्योतिर्मल्लक शासन कालसँ एकाएक मैथिली भाषा बङ्गालीकेँ उछटि निर्विघ्न रूपेँ नेपाल उपत्यकाक साहित्य-सृजनक सर्वप्रमुख सशक्त माध्यमेटा नहि अपितु मल्ल राजाक राजदरबारमे गरिमामय अत्युच्च स्थान पर्यन्त ग्रहण कएलक — विस्तृत विवरणहेतु देखू Horst Brinkhaus (2003)।

नेपाल उपत्यकामे मैथिली भाषाक एहन गरिमामय सम्मानक पाछाँ तात्कालीन इतिहास आ दुहु राज्यक, अर्थात् नेपालमण्डल ओ सिमरौनगढ़क, शासनाधिकारीलोकनिमध्य विद्यमान रक्त सम्बन्धक अतिरिक्त मैथिली भाषाक अपन वैशिष्ट्य ओ आन्तरिक गुणसभ प्रमुख कारक तत्त्व सिद्ध भेल अछि। स्वेडनक स्टौकहोम विश्वविद्यालयमे कार्यरत William L. Smith (1995: 339) मैथिलीक उत्तोलनक तीनिगोट कारणक उल्लेख कएने छलाह: (१) प्राचीन मैथिलीक "sweetness/mellifluousness"क कारणेँ, (२) प्राचीन मैथिलीक पवित्र/धार्मिक प्रतिष्ठा एवम् एकर "increasingly closer association with Kṛṣṇa literature"क कारणेँ, तथा (३) विद्यापतिक प्रेम-गीतसभमे सशक्त साहित्यिक भाषा रूपेँ प्रयुक्त भेलासन्ताँ मैथिलीक महत्ता ओ प्रतिष्ठामे भेल अभिवृद्धिक कारणेँ। हुनकहि शब्दमे:

> Maithili, however, had an established literary reputation and the Vaiṣṇava reformers immediately realized its advantages: it had great prestige, it was mellifluous, it was already associated with Kṛṣṇa thanks to Vidyapati and, finally, by simplifying its grammar and equipping it with a more Sanskritized vocabulary, it could be made relatively intelligible to audiences in Assam and Bengal. This proved a combination impossible to resist and Maithili became a favored vehicle for literature in the great swath of India stretching from Kathmandu to Puri.

जर्मन विद्वान Horst Brinkhaus (1991, 2003) ऐतिहासिक, वैवाहिक, तथा भाषिक वैशिष्ट्यक अतिरिक्त एकगोट चारिम कारणक उल्लेख करैत छथि — भाषा राजनीति। ब्रिङ्कहाउस गम्भीर गवेषणा पश्चात् ई निष्कर्ष निकाललैन्हि जे मल्ल-नृप जयस्थितिमल्लक पुर्खालोकनिक वंशावलीद' उपलब्ध ज्ञान खण्डित भेलासन्ताँ हुनक

पश्चातक प्रतापी महाराजाधिराज जगज्ज्योतिर्मल्ल राज्य संचालन कार्यकेँ वैधता प्रदान करबाकहेतु ओ पराक्षेपसँ बचएहेतु प्रत्यक्षत: स्वीकारलैन्हि जे ओलोकनि सिमरौनगढ़ राज्यक कर्णाट-वंशीय मैथिलीभाषी राजासभक सन्तति छथि एवम् ताहिहेतु हुनका शासन कालमे मैथिली भाषाकेँ साहित्यिक राजभाषाक गरिमामय पदसँ अभिमण्डित कएल गेल। ब्रिङ्कहाउसहिक शब्दमे:

> The ancestry of the first Malla king Sthitirājamalla was left out in a contemporary chronicle (i.e. *Gopālarājavaṁśāvalī*) and, as it seems, was concealed deliberately. Later generations of Malla kings, however, felt embarrassed about this absence of any knowledge of their own genealogical origin - the more so as their claim to the throne was based on hereditary title. In order to delete the blemish they traced their lineage back to the older, well-known Karṇāta Dynasty of Mithila. (2003: 73)

नेपाल नरेशसभक पुर्खालोकनिक खण्डित वंशावलीमादे प्रस्तुत ब्रिङ्कहाउसक अभिकथनक सबल पुष्टि जगज्ज्योतिर्मल्लकृत *मुदितकुवलयाश्व नाटक*मे प्रस्तुत/उद्धृत वंशावलीसँ सेहो होइत अछि जतए नेवार वंशक पूर्वजक गणन अयोध्याक सूर्यवंशी राजा रामचन्द्रसँलए कर्णाटवंशीय प्रथम सामन्त/भूप "*वंशचूड़ामणि नान्यदेव:*" एवम् कर्णाटवंशीय सातम नृप "*वंशशिरोमणि हरिसिंहदेव:*" होइत मल्ल वंशक संस्थापक-नृप "*प्रतापादित्य श्रीजयस्थितिमल्लदेव:*" तथा "*नीतिनिपुण ताताधिक श्रीजगज्ज्योतिर्मल्लदेव महाराजाधिराज*" धरि कएल गेल अछि, (देखू: रामदेव झा सं. २०१३, पृ. ६२-६३)।

एवम् भातिएँ ई देखना जाइत अछि जे सत्रहम शताब्दीएमे नेपालमण्डलक तात्कालीन राजदरबारमे भाषा राजनीति एकगोट कारक तत्त्व रूपेँ प्रवेश कए चुकल छल। पुन: ब्रिङ्कहाउसहिक शब्दमे:

> Thus the pre-eminence of the Nepalese Malla kings in the field of literature was perhaps more a matter of their political power than of their poetical skill as royal authors.
> (Brinkhaus 2003: 77)

५. ०. मध्य मैथिलीक भाषिक स्वरूप (१६००-१७६९)

मैथिली भाषाक उत्पत्तिक ऐतिहासिक-भाषावैज्ञानिक व्याख्या अपारदर्शी ओ सतही अछि। मैथिली भाषा-साहित्यक कोनहु दूगोट इतिहासकार साहित्यिक विभाजनक तिथिमादे

एकमत नहि छथि वरन् ओ अपन-अपन निजी वरीय कालवाची चौहद्दी प्रस्तुत करैत छथि। ताहि हेतुएँ प्राचीन मैथिली, मध्य मैथिली, तथा आधुनिक मैथिली-सन वर्गीकरण बुझू जे कामचलाउ अटकलबाजी सदृश अछि। मैथिली पूर्वी मागधी अपभ्रंशसँ निसृत भाषा मानल जाइत अछि (देखू: गंगानन्द सिंह १९५०, गोविन्द झा १९६८, Tsuyoshi Nara 1979, Tanmoy Bhattacharya 2010) तथा एहि मागधी अपभ्रंशक पश्चिमी शाखासँ अवधी, भोजपुरी; केन्द्रीय शाखासँ मगही, मैथिली, अङ्गिका, कुर्माली; तथा पूर्वी शाखासँ बाङ्ला, असमिया, उड़िया आदि नव्य आर्यभाषासभ निसृत भेल मानल जाइत अछि। परञ्च एहि 'अन्हार' कालखण्डक — जखन मध्ययुगीन आर्यभाषासभसँ नव्य आर्यभाषासभ निसृत भेल — वा कहू जे कोन विशेष मागधी प्राकृत/अपभ्रंश कृतिसभसँ मैथिली भाषा निसृत भेल अछि तकर वैज्ञानिक ओ आधिकारिक ऐतिहासिक-भाषावैज्ञानिक वर्णन-विश्लेषण हमरा जनितेँ अद्यतन अनुपलब्ध अछि। सुनीति कुमार चटर्जीक विशिष्ट शिष्य ओ मैथिली भाषाक ऐतिहासिक भाषाविज्ञानक वरिष्ठ राजनयिक Subhadra Jhā (1958) अपन अन्यतम कृति *The Formation of the Maithilī Language*मे प्राचीन मैथिलीसँ सोझे आधुनिक मैथिलीक परिवर्तित रूपपर कुदि (frogleap) जाइत छथि आ नेपाल तथा भारतक आसाम प्रदेशमे उपलब्ध मध्य मैथिलीक गरिमामय अपार साहित्य-धनराशिक तथा ध्वनि-परिवर्तनक सर्वमान्य नियम आ सिद्धान्तसभक तिरस्कार-सन करैत प्रतीत होइत छथि — से आश्चर्यक गप थिक। हेतु जे सुभद्र झा नेपाल राष्ट्रिय अभिलेखालयमे अनुरक्षित विद्यापतिक सभसँ प्राचीन पाण्डुलिपि *नेपाल पदावली*क सम्पादन ओ अङरेजी अनुवादसहित एकगोट अति वैदुष्यपूर्ण अङरेजी संस्करण आइसँ ६६ वर्ष पूर्वहि १९५४ ई.मे बनारससँ प्रकाशित क' चुकल छलाह।

नेपाल उपत्यकामे सृजित मध्य मैथिली साहित्य नेवारी (राई-किराती भाषासभ सेहो) ओ मैथिली भाषाक सम्पर्क ओ सान्निध्य, बहुभाषिकता (पन्द्रहम शताब्दीक पूर्वहिसँ उत्तरी भारतमे मैथिली साहित्य-निर्माण संस्कृतिमे बहुभाषिकताक सघन उपस्थितिद' देखू: Francesca Orsini 2012, Pankaj Kumar Jha 2016, पंकज कुमार झा २०१६), तथा विशेषक' उत्तरसँ दक्षिणदिसि आप्रवासन-सन कारक तत्त्वसभसँ पोषित-अभिप्रेरित अछि। Horst Brinkhaus (1987: 111-112)क मतेँ चौदहम शताब्दीसँ प्रारम्भ भए नेपाल उपत्यका आप्रवासित विद्वज्जनहेतु आश्रयस्थल बनि गेल छल:

> The Nepal Valley, which apart from an apparently very brief invasion in the year 1340, was spared Islamic rule, became the sanctuary of political refugees, brahmans, pundits, men of letters etc. who, while coming from various parts of northern India, streamed by far in the largest number from the northern Indian regions of Bihar and Bengal. A cultural flowering,

> fostered by the contemporary Malla kings of the Nepal Valley, came about under the influence of the immigrants and visitors, reaching its acme in the late Malla period of the seventeenth and eighteenth centuries

तद्वत्, यूरोपक प्रसिद्ध नेवारी विद्वान Siegfried Leinhard (1974/1992: 2) पूर्वहि कहि गेल छलाह जे:

> As regards subject matter, almost the whole of medieval Nevārī literature is founded on works in Sanskrit, which regained prestige and importance when, at the beginning of the Moslem Era in India, considerable numbers of fugitives, among them scholars of repute, left Bihar and Bengal and found a new home in or around Kathmandu.

५. १. वर्तनी ओ ध्वनि विचार

नेवारी-भाषी नृपजन ओ राज्याश्रित संस्कृतज्ञ मैथिली-भाषी ब्राह्मण पण्डितलोकनि कोन-कोन विधि प्रयोगकए मैथिली भाषाक ध्वनिपद्धतिकेँ अद्वयार्थक ओ त्रुटिविहीन रूपेँ नेवारीक *नेपालाखल* लिपिक माध्यमेँ प्रस्तुत कएल अछि से जानबाकहेतु एवम् *नेपालाखल* लिपिक सफल पारायण करए सिखबाकहेतु नवतुरक अनुसंधित्सुजन देखथु हमर कृति Yadav ed. 2011: 22-42, Yadav ed. 2018: 37-41)। तथापि, *नेपालाखल* लिपिक वर्तनीगत किछु विशेषतासभक उल्लेख सामान्य पाठकक हितार्थ निचाँ संक्षेपमे प्रस्तुत कएल गेल अछि।

(१) संस्कृत भाषाक सरणिपर रेफक पाछाँक व्यञ्जनक द्वित्व: यथा, *सर्व्व* (सर्व) (Throughout) *अर्ज्जुन* (अर्जुन) [Fol. 31a,b], *वर्ण्णब* (वर्णब) [Fol. 8b] आदि। कखनहु द्वित्वक अशुद्ध प्रयोग, यथा, *युर्द्ध* [Fol. 7a], *चित्त* [Fol. 53b] आदि।

(२) बाङ्ला ओ मिथिलाक्षर लिपिक सरणिपर व्यञ्जनसँ पूर्व शिरोरेखाक निचाँ आएल आ स्वरक मात्रा ए ध्वनिक प्रतिनिधित्त्व करैत अछि, यथा, *काम(धनु* (कामधेनु) (Fol. 48b) ।

(३) व्यञ्जनसँ पूर्व शिरोरेखाक निचाँ आएल आ स्वरक मात्रा रेफ सङ्ग मिलि ऐ ध्वनिक प्रतिनिधित्त्व करैत अछि, यथा, *म(र्ग* छथि (मगै छथि)[Fol. 49b]।

(४) तद्वत्, व्यञ्जनसँ पूर्व शिरोरेखाक निचाँ आएल आ स्वरक मात्रा व्यञ्जनक पाछाँ आएल *आ* स्वरक मात्रा सङ्ग मिलि *ओ* ध्वनिक प्रतिनिधित्त्व करैत अछि, यथा, *(गाकुलदास* (गोकुलदास) [Fol. 28a]।

(५) पढ़बामे अति कठिनाह होइत अछि कोनहु व्यञ्जनक शिरोरेखाक उपर आएल टेढ़मेढ़ छोटछिन tilde-सनक चिह्न जे *ए* स्वर ध्वनिक प्रतिनिधित्त्व करैत अछि (तथा जकर देवनागरी लिपिक अक्षरपर टाइपसँ लेखीकरण करब आसान नहि), यथा, *ह* (हे) [Fol. 28b]।

(६) सङ्गहि, कोनहु व्यञ्जनक शिरोरेखाक उपर आएल टेढ़मेढ़ छोटछिन tilde-सनक चिह्न ताहि व्यञ्जनक पाछाँ आएल आ स्वरक मात्रा सङ्ग मिलि *ओ* ध्वनिक प्रतिनिधित्त्व करैत अछि, यथा, *राजाना* (राजानो) [Fol. 63a]।

(७) तहिना, कोनहु व्यञ्जनक शिरोरेखाक उपर आएल टेढ़मेढ़ छोटछिन tilde-सनक चिह्न ताहि व्यञ्जनक उपर आएल पाछाँदिसि घुमल रेफ सदृश चिह्नसङ्ग मिलि *ऐ* ध्वनिक प्रतिनिधित्त्व करैत अछि, यथा, *देखे छिए* (देखै छिए) [Fol. 49b]। स्पष्टत: एहन पढ़ब सन्दर्भ-सापेक्ष अछि।

(८) तद्वत्, अन्तत:, कोनहु व्यञ्जनक शिरोरेखाक उपर आएल टेढ़मेढ़ छोटछिन tilde-सनक चिह्न ताहि व्यञ्जनक पाछाँ आएल *आ* स्वरक मात्रा ओ पाछाँदिसि घुमल रेफ सदृश चिह्नसङ्ग मिलि *औ* ध्वनिक प्रतिनिधित्त्व करैत अछि, यथा, *उभा* (उभौ) [Fol. 29b]. (Yadav ed. 2011)

(९) एकर अतिरिक्त, किछु व्यञ्जन अक्षरसभ निर्विघ्न रूपैं छुटिआएब कठिनाह अछि, यथा, *य प, च र, छ क्ष,* तथा *ड उ*। तहिना, *झ, छ, भ, फ* सेहो झंझटाह अछि, एवम् *व ब* छुटिआएब असम्भव-सन अछि। किछु संयुक्त व्यञ्जनगुच्छ छुटिआएब ततबहि कठिन, जेना, *त्थ, स्त, त्पर, ख्य, प्त*। (Yadav ed. 2018)

स्पष्टत:, प्रवीण पाठकलोकनि एहन द्वयार्थक व्यञ्जनगुच्छकैं आसानीसँ प्रसंगवशात् छुटिआए लेताह।

(१०) अन्तत:, आधुनिक मैथिलीक ८-स्वर पद्धति (Yadav 1984, 1996, 2003) होइतहु मध्ययुगीन मैथिलीमे ६-स्वर पद्धति (i, e, ə, a, o, u) विद्यमान छल, ओना दूगोट तरल उपस्वन [æ] आ [ɔ] बनबाक उपक्रममे भेल-सन प्रतीत होइत अछि — जकरा देवनागरी लिपिमे लिपिबद्ध कए प्रस्तुत करब आसान नहि।

(Yadav ed. 2011)

५. २. रूपविज्ञान

वचन

George Abraham Grierson (1881), Suniti Kumar Chatterji (1926), दीनबन्धु झा (साल १३५३/१९४६ ई.) तथा Subhadra Jhā (1954, 1958) प्रभृति विद्वानलोकनि आधुनिक मैथिली (ओ बाङला) भाषामे व्याकरणिक कोटि वचन लुप्त भेलासन्ताँ बहुल ओ जटिल आदरार्थीसूचक अवयवसभक आगमन भेल तथ्यक निरूपण कए चुकल छथि। परञ्च मध्य मैथिलीमे *सब, जन, लोक, आदि, गण, दल* प्रभृति शब्दसभ जोड़ि बहुवचनक अर्थ अभिव्यक्त कएल जाइत छल, यथा, *पौत्रसब, नगरबासीजन, गायनीलोके, मृग सुकर आदि, नागरीगण* (Yadav ed. 2011) तथा *तारि दल* (Yadav ed. 2011)।

लिङ्ग

मध्य मैथिलीअहुमे व्याकरणिक लिङ्ग अनुपलब्ध अछि, मात्र प्राकृतिक लिङ्ग उपलब्ध अछि। तथापि, प्राचीन मैथिलीक लिङ्ग पद्धतिक शेष विशेषण ओ भूतकाल तथा भविष्यत्कालक रूपसभपर विद्यमान पाओल जाइत अछि, यथा, *शशिमुखी, मनोमुरञ्जीनि, कनिस्था* (कनिष्ठा), *एहन, एहनि, तोहर पिता, तोहरि माता,* गगन पुरल मेघहि एहि खन, से बिनु महि तर *पुररि(लि)हु* नोर (Yadav ed. 2018)। तहिना, से स्वामी *झाकां होएताह* (Yadav ed. 2011)।

काल, पुरुष, आदरार्थी सूचक अवयव

कि बहुत कहिनी *करै* (do-IMPERF) *छह* (AUX-PRES-2NONHON) *छाडह* (leave-PRES-2NONHON) अनादरार्थी

हे मुनिराज कि आज्ञा *करै* (do-IMPERF) *छिअ* (AUX-PRES-2HON) आदरार्थी

तें बहुत चित्त व्याकुल *होइ* (become-IMPERF) *अछ* (AUX-PRES-3NONHON) अनादरार्थी

हे तपोधन राजकुमारी प्रसव व्यथा *जनै* (know-IMPERF) *छथि* (AUX-PRES-3HON) आदरार्थी (Yadav ed. 2011)

वस्तुत: आधुनिक मैथिलीक क्रियारूपमे व्याप्त जटिल पदसंगति भारत ओ नेपालक विरलहि कोनहु आन आर्यभाषामे उपलब्ध अछि, देखू: (Stump & Yadav 1988; Yadav 1996; झा २०१६)। ताहि हेतुएँ एखन हम विद्यापतिकालीन साहित्य पश्चात् अकस्मात् तथाकथित मानक ब्राह्मण-भाषिकाक क्रियापदमे बहुलरूपैं प्रयुक्त कर्त्ता ओ कर्म कारक, काल, पुरुष ओ कक्ष तथा क्रियामे पदसंगतिक सङ्गहि आदरार्थीसूचक अवयवसभक ऐतिहासिक/सामाजभाषिक व्युत्पत्तिमादे संक्षेपमे अपनेलोकनिक ध्यानाकर्षण करए चाहब — जे विषय वर्तमानमे संसारभरिक आर्यभाषा-भाषावैज्ञानिकसभकलेल एकगोट शोधपूर्ण गवेषणक विषय बनि गेल अछि। एहि मादे हालहि नभेम्बर २६, २०१९क' कीर्तिपुर, काठमाण्डूमे आयोजित Linguistic Society of Nepalक ४०म वार्षिक सम्मेलनमे प्रस्तुत Keynote भाषणमे हम जे अपन पूर्वप्रकाशित अध्यर्थन/सिद्धान्त प्रगट कएल

तकर उद्धरण अपनेलोकनिक अवगतार्थ निचाँ प्रस्तुत अछि:

> The question is: how is it that in works produced by kings and their priest-scholars in the Nepal Valley a codification of a complex verbal morphology occurred? The answer to the question may be had in the sociology of language use. During 16th to 18th centuries, Maithili was a court language, a language of royal communication, a language of prestige and high esteem, and at the same time it was a robust and potent means of literary expression in the Nepālamaṇḍala. Maithili was being used in the royal courts of the Malla kings of Nepal under highly formal and even formulaic circumstances by elites and courtiers of varying cadre and status. No wonder an element of highly codified form of deference and courtesy and honor was superimposed on the verbal bases in order to distinctly stratify the status of members of the royal court vis-à-vis other users/consumers of this language. Maithili was after all a language of kings and queens, of princes and princesses, of elites and courtiers, and of high priests and scholarly pundits. This perforce led to emergence of an immaculate form of language 'fit' to suit the royal purposes, while, at the same time, probably less dignified varieties, i.e. colloquial varieties of Maithili coexisted elsewhere in Nepal and India. (Yadav ed. 2011: 66-67)

चोट्टहि, एक आन सत्रमे, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्लीसँ आएल एकगोट बङ्गाली विद्वान भाषाशास्त्री मित्र, प्रो. तन्मय भट्टाचार्य, अपन पत्र-वाचन कालमे नेपालमे कएल गेल हमर अनुसन्धानक निष्कर्षसँ निसृत अध्यर्थन वा सिद्धान्तक सन्दर्भ अनेकहु बेरि प्रस्तुत करैत तथा बेर्लिन-न्यूयौर्कसँ प्रकाशित हमर व्याकरणसँ (Yadav 1996) अनेकहु वाक्य उद्धृत करैत एकगोट आन संभाव्य तथ्यदिसि सेहो संकेत कएलैन्हि, आ ओ ई जे संभवत: उत्तर-पूर्वी भारतक मुण्डा परिवारक भाषा, यथा खड़िया ओ सन्थाली, आदि भाषासँ भूतकालमे मैथिली भाषाक सम्पर्क ओ सान्निध्यक कारणेँ ई आदरार्थीकसङ्गहि आन-आन अवयवसभक आगमन भेल होआए। ततःपर गपसपक क्रमेँ ईहो घमर्थन भेल जे युरोपिअन, विशेषत: जर्मन, आर्यभाषा-भाषावैज्ञानिकलोकनिक मतेँ मैथिलीक क्रियापदमे जटिल आदरार्थी आदि अवयवसभक आगमन संभवत: नेपालक तिब्बती-बर्मेली भाषा परिवारक, विशेषत: राई-किराती भाषासभक, सम्पर्क ओ सान्निध्यक कारणेँ भेल होआए।

निष्कर्ष ई जे विशुद्ध भाषावैज्ञानिकलोकनिक चिन्ताक/अनुसन्धानक मूल विषय थिक: विद्यापति काल पश्चात् एकाएक मैथिलीक ब्राह्मण-भाषिकाक क्रियापदमे जुटल अति जटिल एवम् बहुल आदरार्थी ओ सार्वनामिक अवयवसभक ऐतिहासिक व्युत्पत्तिक समाजभाषावैज्ञानिक कारण ओ तकर संभावित सम्पर्क-काल ओ आगमन-काल निर्धारण।

५. ३. वाक्यविचार ओ अर्थविचार

Declarative

रेवा नदि *पहुचलाहु* (arrive-PST-1) [Fol. 11b] (Yadav ed. 2011)
तोहे बिनु हमे नहि *पारब* (can-FUT-1) संभारि (control) [Fol. 1 V: 4] (Yadav ed. 2018)

Imperative

एहन आज्ञा जनु *करिअ* (do-IMP-2HON) [Fol. 50a] (Yadav ed. 2011)
ह्मे जनु *बिसरह* (fotget-IMP-2MHON [Fol. 16 R: 6] (Yadav ed. 2018)

Interrogative

न पारब पराभव *किए* (why) गुमाने [Fol. 51b] (Yadav ed. 2011)
एहन प्रिय सखि *कतहु* (where-EMPH) गेलि (go-PST-FEM-3) आबे [Fol. 14 V: 2-3] (Yadav ed. 2018)

Converbal Constructions

मध्ययुगीन मैथिलीमे पूर्वकालिक क्रियाक तीनिगोट मूल रूप भेटैत अछि, यथा, -इ, -ए, -कहु।

कनक कमल सम कुच जुग *देखि* (AUX-PRES-3NONHON) [Fol. 8a] (Yadav ed. 2011)

सखिक पानि *लए* (take-CONV) [Fol. 14 R: 5-6] (Yadav ed. 2018)
उरसि *धरि कहु* (keep=LINK-CONV) [Fol. 14 R: 6] (Yadav ed. 2018)
ई पापिष्ठ राजा मृगया व्याजे *आए कहु* (come-CONV) [Fol. 52a] (Yadav ed. 2011)

हे हेमबती प्रेमबती जल स्नान *कय कहु* (do=LINK-CONV) उद्यान *जाए* रहब (go-CONV) (Brinkhaus 1987: 242-243)
हे हेमबती प्रेमबती नारदक बचन *मानि कहु* (accept=LINK-CONV) एतहि रहब (Brinkhaus 1987: 282-263)

वस्तुतः, प्राचीन मैथिली, मध्य मैथिली, आधुनिक मैथिली, एवम् समकालीन मैथिलीक कुल ११०० वर्षक भाषा-साहित्यमे व्यवहृत पूर्वकालिक क्रिया ओ एकर समरूपसभक ऐतिहासिक व्युत्पत्ति एवम् सर्वेक्षण तथा भाषावैज्ञानिक वर्णन-विश्लेषण कएला पश्चात् हम अपन एकगोट आलेखमे (Yadav 2004, यादव २००५) एहि निष्कर्षपर पहुँचल जे पूर्वकालिक क्रिया -कहुक मैथिली लिखित साहित्यमे 'पहिल प्रयोग' १४०६ ई.मे भेल — जँ Ramanath Jha (1972: 26) द्वारा कएल अवहट्ठ अपभ्रंशमे लिखित विद्यापतिक *कीर्तिलताक* लेखन-वर्षक काल-निर्धारण विश्वसनीय छैन्हि आ सङ्गहि इहो कहल जे ई पुरान रूप *-कहु/-कहुँ* आधुनिक मैथिलीक पूर्वकालिक क्रिया *-क'*, *-कए*, *-के* आदि रूपक ऐतिहासिक पूर्वरूप (historical antecedent) अछि, आ तहिना आधुनिक मैथिलीक पूर्वकालिक क्रिया *-क'*, *-कए*, *-के* आदि रूप ऐतिहासिक रूपेँ हिन्दी भाषाक *कर-* धातुसँ कोनहुना सम्बद्ध नहि भए सर्वथा असम्बद्ध अछि।

६. उपसंहार

निष्कर्षवत्, लेनर्ड ब्लूमफील्डक गम्भीर अंतर्दृष्टिपूर्ण उत्प्रेरणसँ — जे आलेखक प्रारम्भसँ पूर्वहि उद्धृत अछि — हम नवतुरक (आ जे नवतुरक नहि छथि तिनकहु) भाषाविद्, संस्कृतिविद् ओ इतिहासविद्सँ — विशेषतः, जनिका संस्कृत, प्राकृत, पाली, तिब्बती, बाङला, मैथिली, ओ नेवारी भाषाक ज्ञान छैन्हि — विनम्र निवेदन करए चाहब जे ओलोकनि मिलि नेपाल राष्ट्रिय अभिलेखालय, आशा सफु अभिलेखालय, केशर पुस्तकालय, तथा भारतक संग्रहालयसभमे संरक्षित पाण्डुलिपिसभक गहन गवेषणाकए ताहि ग्रन्थसभक प्रतिकृतियुक्त-समीक्षात्मक संस्करण सम्पादित-प्रकाशित करबादिसि दत्तचित्तसँ प्रवृत्त होथि। स्पष्टतः, एहन अनुसन्धानात्मक प्रकाशन-कार्यसँ दुहु देशक प्राचीन गौरवशाली धरोहरसभक संरक्षणकसङ्गहि तत्सम्बन्धी नव-नव ज्ञानक विकीर्णन होएत एवम् एहि आलेखक प्रारम्भसँ पूर्वहि उद्धृत मैथिली पाण्डुलिपिसभक भारत देशमे एकाएक रहस्यमय तिरोधान होएबाक शशिनाथ झाक भय-त्राससँ मुक्ति पर्यन्त होएत।

सन्दर्भ सूची

झा, गोविन्द १९६८ *मैथिलीक उद्गम ओ विकास*, कलकत्ता: मैथिली प्रकाशन समिति।

झा, गोविन्द २००५ "हरिश्चन्द्रनृत्यक भाषा," मे: गोविन्द झा (२००५) *अतीतालोक*, पटना: अखियासल प्रकाशन।

झा, गोविन्द २०१६ "मैथिली क्रियापद-रूपावलीक मूलान्वेषण," *मिथिला-भारती* ३: १-४, पृ. १०९-११२।

झा, दीनबन्धु साल १३५३/१९४६ई. *मिथिला-भाषा विद्योतन*, दड़िभङ्गा: मैथिली साहित्य परिषद।

झा, पंकज कुमार झा २०१६ "विद्यापति-इतिहासकारों की प्रतीक्षा में," *प्रतिमान*, पृ. २२०-२३९। Academia.edu PDF

झा, रामदेव (सं., १९७०) *जगज्ज्योतिर्मल्ल कृत हरगौरी विवाह नाटक*, लहेरियासराय-दरभंगा: मिथिला रिसर्च सोसाइटी।

झा, रामदेव १९७६ *कुञ्जविहार नाटक*, मे: *मनीषा* (कामेश्वरसिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय पत्रिका)।

झा, रामदेव १९८८ *जगज्ज्योतिर्मल्लकृत दशावतार नृत्यम् ओ षोडश गीतम्*, लहेरियासराय-दरभंगा: मिथिला रिसर्च सोसाइटी।

झा, रामदेव १९९५ *जगज्ज्योतिर्मल्ल*, नयी दिल्ली: साहित्य अकादेमी।

झा, रामदेव (सं., २०१३) *जगज्ज्योतिर्मल्ल कृत मुदितकुवलयाश्व नाटक*, नयी दिल्ली: साहित्य अकादेमी।

झा, शशिनाथ (सं., १९८१) *लोचनकृता रागतरङ्गिणी*, पटना: मैथिली अकादमी।

झा, शैलेन्द्र मोहन १९६९ *सिद्धि नरसिंह मल्ल*, लालबाग-दरभंगा: पुस्तक केन्द्र।

दत्त, बिजितकुमार (सं., १९८०) *प्राचीन बाङ्गाला-मैथिली नाटक*, बर्धमान: विश्वविद्यालय।

नेपाल, ज्ञानमणि वि. सं. २०६२/२००५ ई. *नेपालको माध्यमिक इतिहास (१)*, डिल्लीबजार, काठमाडौं: मकालु प्रकाशन गृह।

बन्दोपाध्याय, ननिगोपाल (सं., बङ्गाब्द १३२४/१९१७ ई.) *नेपालेर बाङ्गाला नाटक*, कलकत्ता: बङ्गीय साहित्य परिषद मन्दिर।

बागची, प्रबोध चन्द्र बङ्गाब्द १३४७/१९४० ई. (जगज्ज्योतिर्मल्लकृत) *कुञ्जविहार-नाटक*, *परिचय* (कलकत्ता विश्वविद्यालय बङ्गाली मासिक पत्रिका)।

मिश्र, जयकान्त (सं., साल १३६८/१९६० ई.) (ज्योतिरीश्वरकृत) *मैथिली-धूर्तसमागम*, इलाहाबाद: अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति।

मिश्र, जयकान्त (सं., १९६५) (भूपतीन्द्रमल्लकृत) *विद्याविलाप: नेपालीय मैथिली नाटक*, इलाहाबाद: अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति।

मिश्र, जयमन्त १९७७ *मैथिली अभिलेख गीतमाला*, पटना: मैथिली अकादमी।

मिश्र, तारानन्द वि.सं. २०६२/२००५ ई. "नेपाल उपत्यकाक मैथिली हस्तलिखित ग्रन्थक विशेषता," *आँगन* (नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान): १, ५३-५९।

मिश्र, तारानन्द वि.सं. २०७२/२०१५ ई. "चिकित्साशास्त्र, सिमरौनगढ़का वैद्य श्रीचक्रदत्त र देवपाटनका मल्ल राजवैद्यमाझ अन्तःसम्बन्ध," *अभिलेख* (राष्ट्रिय अभिलेखालय, नेपाल) ३३: ३३, ४४-५५।

मिश्र, लेखनाथ (सं., १९७२) *जगत्प्रकाशमल्लकृत प्रभावती हरण नाटक*, पौना-अरेराहाट-दरभंगा: श्री लेखनाथ मिश्र।

मिश्र, लेखनाथ ओ भक्तीश्वर झा (सं., २०१०) *जगज्ज्योतिर्मल्ल पदावली*, पटना विश्वविद्यालय: मैथिली डिभेलपमेण्ट फण्ड।

यादव, रामावतार १९९० "भूपतीन्द्रमल्लको परशुरामोपाख्यान नाटक," मे: कुलराज घिमिरे (सं. १९९०) *सिंहावलोकन: नेपालीय मैथिली विशेषाङ्क*, जनकपुर, पृष्ठ १८३-१९४।

यादव, रामावतार वि.सं. २०६२/२००५ ई. "मैथिलीक पूर्वकालिक क्रिया: ऐतिहासिक-भाषावैज्ञानिक वर्णन-विश्लेषण," *आँगन* (नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान): १, ११-२६।

यादव, रामावतार २०१९ "मैथिली भाषा-साहित्यक संरक्षण: चुनौती आ निदान," *आँजुर* (जनकपुर) २९: ८८, ३-११।

'रमण', रमानन्द झा (सङ्कलन-सम्पादन, २०१९) *रामभद्रशर्माकृत हरिश्चन्द्रनृत्यं (मल्लकालीन मैथिली नाटक)*, राँची, झारखण्ड: विश्वम्भर फाउण्डेशन।

राम, राजेन्द्र १९७७ "जयस्थितिमल्ल कालीन नेपालक सामाजिक स्थिति (ई. सन् १३८२-१३९५" *मिथिला-भारती* (पं. राजेश्वर झा स्मृति-अंक) ४: १-४, पृ: ५६-६०।

शास्त्री, सुन्दर झा वि.सं. २०२९/१९७२ ई. "श्री जय जगत्प्रकाश मल्ल कृत नानार्थ देव देवी गीत संग्रह," फूल-पात (काठमाण्डु) ४: ८, viii + ३८।

'श्रीश', दुर्गानाथ झा (सं., शाके १८९६/१९७४) *नृपतिजगज्ज्योतिर्मल्ल-कृत गीत-पञ्चाशिका*, कटहरबाड़ी-दरभंगा: चेतनाथ झा।

श्रेष्ठ, राजित्बहादुर (सं., ने.सं. ११२४/२००४ ई.) *काशीविजय,* न्हू हिसु पुचः तापाहिति, यल नेपाल।

सिंह, गंगानन्द १९५० "अखिल भारतीय प्राच्यविद्यासम्मेलनक चौदहम अधिवेशनक मैथिली शाखाक अध्यक्ष कुमार गंगानन्द सिंहक अभिभाषण," मे: देवेन्द्र झा (संकलक, १९८३) *भाषणत्रयी*, पटना: मैथिली अकादमी, पृ. ३७-७३।

'सुमन', सुरेन्द्र झा तथा रामदेव झा (सं., १९७७) *मैथिली प्राचीन गीतावली,* पटना: मैथिली अकादमी।

Bhattacharya, Tanmoy 2016 "Inner/outer politeness in Central Magadhan Prākrit languages: Agree as labeling," *Linguistic Analysis* 40: 3-4, 297-336.

Brinkhaus, Horst 1987 *Pradyumnavijaya-nāṭaka* (of Jagatprakāśamalla), In: *The Pradyumna-Prabhāvatī Legend in Nepal: A Study of the Hindu Myth of the Draining of the Nepal Valley*, Stuttgart: Franz Steiner, Wiesbaden, "Appendix 1", pp. 161-345.

Brinkhaus, Horst 1991 "The descent of the Malla dynasty as reflected by local Chronicles," *Journal of the American Oriental Society*: 111, 118-122.

Brinkhaus, Horst 2003 "On the transition from Bengali to Maithili in the Nepalese drama of the 16th and 17th centuries," In: Smith (ed. 2003), 67-77.

Chatterji, Suniti Kumar 1926 *The Origin and Development of the Bengali Language,* Calcutta: Calcutta University Press.

Chatterji, Suniti Kumar & Babua Mishra (eds. 1940) *Varṇa-Ratnākara of Jyotirīśvara-Kaviśekharācārya Edited with English and Maithili Introductions and Index Verborum,* Calcutta: Royal Asiatic Society of Bengal.

Conrady, August (ed. 1891) Das *Hariścandranṛtyam: Ein Altnepalesisches Tanzspiel,* Leipzig: G. Kreysing.

Das, Basudevlal 2002-2003 "Devalakshamidevi: A queen of Mithila in the politics of medieval Nepal," *Rolamba* (Joshi Research Institute, Lalitpur): 22-23, 2-4.

Grierson, George Abraham 1881 *An Introduction to the Maithilī Language of North Bihār, Part 1, Grammar,* Calcutta: Asiatic Society of Bengal.

Jha, Pankaj Kumar 2016 "Literary conduits for 'consent': Cultural groundwork of the Mughal state in the fifteenth century," *The Medieval History Journal* 19: 2, 322-350. Academia.edu PDF

Jha, Ramanath 1972 *Vidyāpati*, New Delhi: Sahitya Akademi.

Jha, Subhadra (ed. 1954) *Vidyāpati-Gīta-Saṁgraha or The Songs of Vidyāpati,* Banaras: Motilal Banarsidass.

Jhā, Subhadra 1958 *The Formation of the Maithilī Language*, London: Luzac.

Kitada, Makoto 2014 "Manuscript of a Maithili play preserved in the Kathmandu Valley: *Madālasāharaṇa-nāṭaka*, Part 1," *Indomizokukenkyu* (Indian

Folk Culture Research): 13, 65-84, Osaka University Knowledge Archive Osaka university. In Japanese

Kitada, Makoto 2015 "Jagajjyotirmalla's play *Madālasāharana-nāṭaka*, Part 2 (Latter half)," *Indomizokukenkyu* (Indian Folk Culture Research): 14, 45-84, Osaka University Knowledge Archive: Osaka University. In Japanese

Leinhard, Siegfried (ed. 1974/1992) *Songs of Nepal: An Anthology of Nevar Folksongs and Hymns*, Delhi: Motilal Banarsidass.

Nara, Tsuyoshi 1979 *Avahaṭṭha and Comparative Vocabulary of New Indo-Aryan Languages*, Tokyo: Institute for the Study of Languages and Cultures of Asia and Africa.

Orsini, Francesca 2012 "How to do multilingual literary history: Lessons from fifteenth and sixteenth century north India," *Indian Economic & Social History Review* 49: 2, 225-246. Academia.edu PDF

Pradhan, Kumar 1991 *The Gurkha Conquests*, Calcutta: Oxford University Press. [Re-published by Social Science Baha & Himal Books, Kathmandu in 2009]

Richards, Thomas 1993 *The Imperial Archive: Knowledge and the Fantasy of Empire*, New York: Verso.

Shāstrī, Haraprasād 1905 *A Catalogue of Palm-Leaf and Selected Paper Mss. Belonging to the Durbar Library, Nepal,* Vol. 1, Calcutta: Baptist Mission.

Shāstrī, Haraprasād 1911 *Report on the Search for Sanskrit Manuscripts (1906-1907 to 1910-1911),* Calcutta: Asiatic Society of Bengal.

Smith, William L. 1995 "Vrajāvali, Brajabuli, and Maithili," In: Juntunen, Mirja, William L. Smith and Carl Sumeson (eds. 1995) *Suhṛdyamaṅgalam: Studies in Honour of Siegfried Lienhard on His 70th Birthday*, Stickholm: The Association of Oriental Studies.

Smith, William L. (ed. 2003) *Maithili Studies: Papers Presented at the Stockholm Conference on Maithili Language and Literature,* Stockholm: Department of Indology, University of Stockholm, Sweden.

Stump, Gregory T. & Ramawatar Yadav 1988 "Maithili verb agreement and the Control Agreement Principle," In: *Chicago Linguistic Society Parasession on Agreement in Grammatical Theory* (USA) 24: 2, 304-321.

Yadav, Ramawatar & Ratneshwar Jha 1982 "Bhūpatīndramalla's *Parśurāmopākhyāna-nāṭaka* (1713 A. D.): A preliminary report," Paper presented to the Literary Association of Nepal, Kathmandu, April 18, 1982. [A Nepali version of the paper was published by Ramawatar Yadav (1990) in Kuber Ghimire (ed. 1990) *Siṁhāvalokana: Nepālīya Maithilī Viśesāṅka,* Janakpur, Nepal]

Yadav, Ramawatar 1984 *Maithili Phonetics and Phonology*, Mainz (Germany): Selden und Tamm.

Yadav, Ramawatar 1996 *A Reference Grammar of Maithili* (Trends in Linguistics, Documentation 11), Berlin & New York: Mouton de Gruyter. [An Indian edition was published in 1997 in New Delhi by Munshiram Manoharlal]

Yadav, Ramawatar 2003 "Maithili," In: Cardona, George & Dhanesh Jain (eds. 2003) *The Indo-Aryan Languages*, London & New York: Routledge, pp.470-490.

[Also to be re-printed in Vibha Chauhan (ed. 2020) *The Languages of Bihar*, Delhi: Orient BlackSwan]

Yadav, Ramawatar 2004 "On diachronic origins of converbs in Maithili," *Contributions to Nepalese Studies*, Vol. 31: No. 2, pp. 15-241.

Yadav, Ramawatar (ed. 2011) *A Facsimile Edition of a Maithili Play: Bhūpatīndra-malla's Parśurāmopākhyāna-nāṭaka*, Kathmandu: India-Nepal B. P. Koirala Foundation.

Yadav, Ramawatar 2017 "A letter to Pt. Govind Jha from Dr. Ramawatar Yadav on a[n] article published in *Mithilā-Bhāratī* Vol. 3, 2016," *Mithilā-Bhāratī*, Vol. 4: No. 1-4, pp. 189-191.

Yadav, Ramawatar (ed. 2018) *Elegy Written in a Royal Courtyard: A Facsimile Edition of Jagatprakāśamalla's Gītapañcaka*, New Delhi: Adroit Publishers.

Yadav, Ramawatar 2019 "A hitherto undiscovered and unstudied hand-copied Newari manuscript of a Maithili Bārahamāsā song by king Jagatprakāśamalla Bhaktapur," In: *Conference Proceedings 2015: The Annual Kathmandu Conference on Nepal and The Himalaya*, Kathmandu: Social Science Baha, 2019, 244-265.

Yadav, Ramawatar 2020 "The Structure of Middle Maithili," Keynote Speech delivered to the 40th Annual Conference of the Linguistic Society of Nepal on 26 November 2019. Forthcoming in *NepaleseLinguistics*: 35.

Yadav, Ramawatar (ed. 2020, Forthcoming) *Historiography of Maithili Lexicography & Francis Buchanan's Comparative Vocabularies: Facsimile Edition of the British Library, London Manuscript*, Darbhanga: Maharajadhiraja Kameshwar Singh Kalyani Foundation, Kameshwar Singh Bihar Heritage Series-23.

[पौष 6-7, 2076, तदनुसार दिसम्बर 22-23, 2019क' विराटनगर, नेपालमे आयोजित सतरहम अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलनमे प्रस्तुत आमन्त्रित अतिथि अभिभाषण]

मैथिली भाषाक वर्तमान अवस्थितिद' संक्षिप्त टिप्पणी*

> No Megasthenes or Fa-hian has left for us an account of ancient Mithila nor are we fortunate in having a Thucidydes or Herodotus. *No literature, geographical or historical, affords us any glimpse into the history of that land.* [Italics added]
>
> **Upendra Thakur, *Histoy of Mithilā (From the earliest times to 1556 A.D.)*, 1956**

०. सम्बोधन

अति आदरणीय अध्यक्ष महोदय, मञ्चस्थ महाजनलोकनि, आमन्त्रित अतिथिगण, एवम् सम्पूर्ण मैथिली-भाषी मैथिलजन !

१. प्राक्कथन

मैथिली एसोसिएशन नेपाल, विराटनगरक तत्त्वावधानमे आयोजित एहि सतरहम अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलनमे आमन्त्रण पाबि अत्यन्त प्रसन्नता भेल; आयोजकलोकनि धन्यवादार्ह थिकाह।

अपनेलोकनिकेँ ज्ञात अछिए जे मैथिली भाषा संसारक चालिसम सर्वाधिक बाजएजाएवाला, नेपालक दोसर सर्वाधिक बाजएजाएवाला, ई. 2003सँ गणतंत्र भारतक संविधानक अष्टम

*अनुप्रास 3-4, 2021, पृ. 3-8मे प्रकाशित।

सूचीमे बीसम प्रमुख भारतीय भाषारूपैं प्रतिष्ठापित, ई. 2018सँ उत्तर भारतक झारखण्ड प्रदेशक दोसर सरकारी कामकाजक भाषारूपैं अभिमण्डित, एवम् भारत ओ नेपालमे जोड़िकए कुल 4 करोड़सँ बेसी जनसंख्याद्वारा बाजएजाएवाला एकगोट प्रतिष्ठित भाषारूपैं स्थापित अछि। जँ साँचें कही त' वर्तमानमे मैथिली नेपालक कुल जनसंख्यासँ बेसी जनद्वारा बाजएजाएवाला भाषारूपैं सगौरव विराजमान अछि। परञ्च अत्यन्त खेदक गप जे प्रदेश नं 1हुमे मैथिली-भाषीक कुल संख्या **5 लाख 7 हजार 275** होइतहु ओ प्रदेश नं 2मे **24 लाख 47 हजार 978** अर्थात् कुल जनसंख्याक 45.30% जनसंख्याद्वारा बाजएजाएवाला मैथिली भाषा (भाषा आयोग 2075) आन कोनहु वैज्ञानिक विकल्पक अनुपलब्धता होइतहु अद्यतन आधिकारिक रूपैं प्रदेश नं 2क सरकारी कामकाजक भाषा घोषित भए राजकाजक भाषा रूपैं प्रतिष्ठापित नहि भ' सकल अछि। आ भारतक बिहार राज्यमे त' एहि मादे कोनहु चर्च पर्यन्त नहि अछि।

निस्सन्देह मैथिली एकगोट प्राचीन एवम् समृद्धिशाली भाषा अछि। अपनेलोकनिकेँ इहो ज्ञात अछि जे मैथिली भाषाक प्राचीनतम कृतिरूपैं सिद्ध सन्तलोकनि-विरचित रहस्यवादी तान्त्रिक पद्य-ग्रन्थ *चर्यागीति* (ई. 800-1100)क पाण्डुलिपि नेपाल राष्ट्रिय अभिलेखालय काठमाण्डूमे अद्यतन अनुरक्षित अछि। मुदा खेदक गप जे जँ कि आइधरि कोनहु मैथिली-भाषी विद्वान एहि कृतिक पाण्डुलिपिक प्रतिकृतिसङ्गहि एकर समुचित ओ वैज्ञानिक मैथिली संस्करणक सम्पादन-प्रकाशन कार्य सम्पन्न करबाक प्रयत्न पर्यन्त नहि कएल, तँ महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्रीद्वारा ई. 1907मे नेपालमे अन्वेषित/आविष्कृत ओ सुनीति कुमार चटर्जीक सङ्गहि आन बङ्गाली विद्वानसभसँ समर्थित/अनुमोदित भेलाक कारणेँ एकरा बाङ्गला भाषाक कृति घोषितकए एकर अनेकहु बाङ्गला संस्करण प्रकाशित भ' चुकल अछि — ततबहि नहि, नौर्वेक एकगोट अनुसन्धानकर्ता त' आँखि मुनि एकरा बाङ्गला मानि एकर अङरेजी संस्करण पर्यन्त प्रकाशित कए चुकल छथि, देखू (Per Kværne 1977)। ओना हिनकासँ चारि वर्ष पूर्वहि बाङला भाषाक प्रसिद्ध विद्वान Nilratan Sen (1973: 'Preface', xiii) कहि गेल छथि जे:

> Caryagitikosa is the earliest manuscript in all the NIA languages. Naturally, with Bengali, the major sister languages like Oriya-Assamese and Maithili have also put their claim on this rare book...in that respect, their claim cannot be rejected outright.

चारि वर्ष पश्चात् पुनश्च Nilratan Sen (ed. 1977: 'Introduction', xviii) कहलैन्हि जे:

> During my recent visit to the National Archives of Nepal I had an opportunity to consult some traditional pundits working there as professional readers and scribes of old manuscripts. They identified its script as Old Newari. In their opinion the language of the songs is Maithili, and that of commentary is Sanskrit.

अपनेलोकनिकेँ इहो ज्ञात अछिए जे सिमरौनगढ़क अन्तिम राजा हरिसिंहदेवक राजपण्डित कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वरकृत *वर्णरत्नाकर*(Circa 1324) उत्तर भारत ओ नेपालक आर्यभाषाक प्राचीनतम गद्य-ग्रन्थरत्न रूपैं सर्वप्रतिष्ठित अछि। ओना ओइपारमे जाहि प्रवेग ओ सुनियोजित रूपैं मैथिलीक प्राचीन अमूल्य निधिरूपी हस्तलिखित पाण्डुलिपिसभक लोप भ' रहल अछि ताहिमादेँ शशिनाथ झाक (सं. 1981: iii) मार्मिक कथन अत्यन्त मननीय अछि:

> मैथिली साहित्यक ई दुर्भाग्य रहल अछि जे एकर प्राचीन-पोथी सभक मूल भोतिआयल जाय रहलैक अछि। *वर्णरत्नाकर*क मूल अप्राप्त, *तरौनी पदावली* बाबू नगेन्द्र गुप्त हेरओलनि, *रामभद्रपुर पदावली* सेहो नष्ट भेल ओ ई *रागतरङ्गिणी* लुप्त भ' गेल। **केवल नेपाल-पदावली एखनहु नेपाल अभिलेखालयमे सुरक्षित अछि, सेहो ओ नेपालमे अछि तेँ बँचल अछि।**

आ तहिना गोविन्द झा (2015: 51) अपन खेदपूर्ण क्षोभ व्यङ्गोक्तिसँ निम्नानुसार प्रगट कएलैन्हि अछि:

> दोसर दिस संस्कृतज्ञ यूरोपीय विद्वान सभ भारत पहुँचलाह तँ एतए अमूल्य ग्रन्थ सभक अपार भंडार असुरक्षित अवस्था मे यत्र-तत्र छिड़िआएल देखि कैं सहसा लोभाए गेलाह आ जेना हो तेना बटोरि-बटोरि अपन ग्रन्थागार भरैत गेलाह। **मिथिलाक म.म. पँचकौड़ी झा पाँच कौड़ी मे आ बंगालक सतकौड़ी मुखोपाध्याय सात कौड़ी मे अपन धरोहर बेचैत गेलाह।**

अत्यन्त खेदक विषय इहो जे पुरान अभिलेख/पाण्डुलिपिक अवलोकन पश्चात् देखना जाइत अछि जे प्रारम्भहिसँ मैथिली भाषाक नामहु स्थिर नहि भ' सकल-सन अवस्था विद्यमान अछि। ईष्ट इण्डिया कम्पनीक राज्यकालहिमे रोमन लिपिमे लिखल

अङरेजी भाषाक माध्यमें प्रकाशित प्राचीनतम आलेखमे Henry Thomas Colebrooke (1801: 225) एहि भाषाकेँ **"मैथिल/तिरहुतीय"** कहि सम्बोधित कएने छथि:

> MAIT'HILA, or *Tirhutīya*, is the language used in *Mithīlà*, that is, in the Sircár of *Tirhūt*, and in some adjoining districts, limited however by the rivers *Cusī* (*Causicī*) and *Gandhac* (*Ghandhacī,*) and by the mountains of *Nepál*...

पुनश्च Henry Thomas Colebrooke (1807) अमरसिंह-विरचित विश्वप्रसिद्ध कृति *अमरकोश*मे उपलब्ध भारतक अन्यान्य बारहगोट भाषासहित **मिथिला** अर्थात् **मैथिली**अहुक कुल 370 शब्दसभक संकलन कएलैन्हि — जकर देवनागरी लिपिमे हस्तलिखित पाण्डुलिपि ब्रिटिश लाइब्रेरी, लन्दनमे अनुरक्षित तथा अद्यतन अप्रकाशित अछि — सौभाग्यवश एकर आधिकारिक प्रतिलिपि हमरालग सेहो अछि एवम् एहिमादे हमर अनुसन्धान गतिमान अछि। तत्पश्चात् ईष्ट इण्डिया कम्पनीक एकगोट वफादार नोकर एवम् अनन्य मैथिली-सेवक Francis Buchanan (1810) द्वारा विरचित एवम् ब्रिटिश लाइब्रेरी, लन्दनमे अनुरक्षित तथा अद्यतन अप्रकाशित एकगोट तुलनात्मक शब्दसङ्ग्रहक पाण्डुलिपिमे एहि भाषाक नाम देवनागरी लिपिमे तीनि तरहेँ अर्थात् **मिथिला** ***Mithilā***, **मैथिल** ***Maïthila***, and **मीथीला** ***Mīthīlā*** कहि, गाँव-गाँवमे ब्राह्मण जातिक मैथिली-भाषी ज्ञापक पठाए, क्षेत्रानुसन्धान कए, कुल 1759 मूल प्रविष्टिसङ्ग (गवेषणा पश्चात् कुल प्रविष्टि 1566 मात्र सिद्ध होइत अछि) अन्यान्य आठ भाषासहित मैथिली भाषाक पहिल शब्द-सङ्ग्रह प्रस्तुत कएल गेल अछि। सौभाग्यवश एहू पाण्डुलिपिक आधिकारिक प्रतिलिपि हमरालग अछि एवम् एहिमादे हमर अनुसन्धान कृति शीघ्र प्रकाश्य अछि,: विस्तृत विवरणहेतु देखू (यादव 2020, Yadav 2020 Forthcoming)। सत्तैरि वर्ष पछाति, S. W. Fallon (1879) अपन हिन्दुस्तानी-अङरेजी शब्दकोशमे एहि भाषाकेँ **तिरहुती** कहि अनेकहु मैथिली शब्द ओ प्रचलित मुहावरा/लोकोक्तिक उद्धरण सोदाहरण प्रस्तुत कएने छथि। मोन पड़ैत अछि एहि शब्दकोशमे उद्धृत एकगोट अति प्रचलित लोकोक्ति: ***नान्हिटा टुइयाँ पटकि देल भुइयाँ, टूटे न फाटे बाह बाह रे टुइयाँ।*** ई त' भेल फिरिङ्गीसभक कथा: स्मरणीय जे आखिर ओलोकनि कोनहु ब्राह्मण पण्डित-ज्ञापकक सूचनाक आधारेँ एहि नामसभक चयन कएने होएताह। आब सुनू मैथिली-भाषी संस्कृतज्ञ ब्राह्मण विद्वानसभक कथा। चन्दा झा (जन्म 1831) अपन अमर ग्रन्थक शीर्षक रखलैन्हि ***मिथिला-भाषा रामायण***। तहिना, ईष्ट इण्डिया कम्पनीक राज्यकालहिमे मैथिलीक पहिल मैथिली-भाषी तुलनात्मक शब्दसंग्रहकार भव नाथ मिश्र (1914) **मिथिलाभाषा**, हिन्दी, संस्कृत भाषाक त्रैभाषिक शब्दसङ्ग्रह, ***मिथिला शब्द***

प्रकाश:, राखि काशीसँ प्रकाशित कएलैन्हि। तकर 10 वर्ष पश्चात् मैथिली-भाषी संस्कृतज्ञ मुकुन्द झा (1924) तँ आओरो एक डेग आगाँ बढ़ि अमरसिंहकृत *अमरकोश*क विलक्षण **मैथिलभाषा** विवरण-वयाख्या *अमरमैथिलभाषाविवृति* शीर्षक अन्तर्गत कएलैन्हि, आ तकर बाइस वर्ष पछाति मैथिलीक पाणिनि दीनबन्धु झा (1946) अपन अप्रतिम मैथिली व्याकरणक शीर्षक रखलैन्हि ***मिथिला-भाषा विद्योतन*** आ मैथिलीक पहिल मैथिली-भाषी पूर्ण शब्दकोशकार दीनबन्धु झा (1950)क मैथिली-मैथिली शब्दकोश ग्रन्थ-रत्नहुक नाम पर्यन्त पड़ल **मिथिलाभाषाकोष**। ओना ईष्ट इण्डिया कम्पनीक फिरिङ्गी निजामती कर्मचारी George Abraham Grierson (1881b) पहिल एहन भाषाविद् भेलाह जनिक विश्वविख्यात मैथिली व्याकरणक प्रकाशनक पश्चातहि बुझू जे एहि भाषाक नाम **मैथिली** रूपेँ स्थिर भेल, सुदृढ़ भेल — ओना प्रारम्भमे ग्रिअर्सनहु हुमि गेल छलाह एहि भाषाक अनौचित्यपूर्ण नाम **बिहारी** राखि।

ताहि हेतुएँ, हमर विनम्र आग्रह जे प्रशस्त विलम्ब आ अनन्त हानि पर्यन्त भ' चुकल अछि, आबहु मैथिलीक हितार्थ एकर एकहिगोट आ स्थिर नाम **मैथिली** रहओ, आन कोनहु नहि — जाहिसँ वैश्विक स्तरपर भाषाशास्त्री ओ अन्वेषकलोकनिकेँ असौकर्य नहि होइन्हि।

एकगोट आओरो खेदक गप। एखनहु यत्र तत्र सर्वत्र, आ एहुठाम, अनेकहु अति उत्साही मैथिली-अभियानीलोकनि 'मैथिली' शब्दक उच्चारण हिन्दी भाषाक *ऐ* मे प्रयुक्त स्वर/सन्ध्यक्षरसँ प्रभावित वा कहू जे कुप्रभावित भए ***मएथिली *Maethili** रूपेँ कए गौरवान्वित होइत छथि, **मैथिली Maithili** रूपेँ नहि। ओना आब एकर वर्तनी **मैथिली** रूपेँ स्थिर भ' चुकल अछि। तेँ हमर विनम्र निवेदन जे मैथिली भाषाक निजत्वक रक्षार्थ अपनेलोकनि एकर नामक उच्चारण सगौरव **मैथिली** रूपेँ करी, अन्यथा नहि, अर्थात् ***मएथिली** रूपेँ कथमपि नहि।

जेना एतबा कहब मात्र प्रशस्त नहि होअए विराटनगर प्रस्थान करबाँसँ किछुए दिन पूर्व नेपालक एकगोट गैरसरकारी टेलिभिजनपर मैथिली भाषामे समाचार वाचन करएवाला उत्साही युवक जिज्ञासा करैत पुछलैन्हि: "सर, हमर गैरमैथिली-भाषी अधिकारीगण ओ मैथिली भाषाक प्रजातान्त्रीकरण करबाक अभियानीलोकनि पर्यन्त हमरा ***मएथली** भाषामे समाचार सुनू कहबाकलेल बाध्य कए रहल छथि, हम की करू।" हम हुनका की कहने होएबैन्हि से अहाँ बुझू, हम अपना मुहेँ किछु नहि कहब। ततबहि नहि, आश्चर्यक गप जे एम्हर आबि नेपालक अधिकांश राई-किराती जनजाति-भाषावैज्ञानिकलोकनि हमरा ईमेलमे अङरेजीमे लिखल अपन अनेकहु आलेखक PDF पठाबि रहल छथि जाहिमे **मैथिली** भाषाकेँ बेहिचक ***मैथली *Maithali** लिखि वर्णित/चर्चित कएल गेल पाओल जाइत अछि। भगवान हिनकासभकेँ सद्बुद्धि देइन्हि।

२. मैथिलीक सङ्कट

किछु साल पूर्वधरि जनकपुरक अनेकहु प्रबुद्धलोकनि हमरा फोनसँ बरोबरि प्रदेश 2मे कुल 8 हजार 625 अर्थात् 0.16% बाजएजाएवाला भाषा **हिन्दी** (विशेषक' अवस्तरीय बिहारी हिन्दी) ओ **हिन्दी साम्राज्यवाद** ताहि प्रदेशमे सर्वाधिक बाजएजाएवाला मैथिलीकेँ दबोचि देतैक कहि गम्भीर चिन्ता व्यक्त करैत छलाह। हम जनकपुर जाए एहने एकगोट सम्मेलनमे आ ताहि ठामक एकगोट टेलिभिजन-अन्तर्वातामे पर्यन्त दुहु भाषाक निजत्व ओ भिन्न-भिन्न प्रयोजनद' अपन स्वस्थ विचारक निरूपण पर्यन्त कएल। आब एकाएक एहन प्रश्न नहि आबि रहल अछि। ओना सुना दी जे हालहि पटना शहरमे 11-11-2019क' भेल अत्यन्त हार्दिक व्यक्तिगत वार्तालापमे मैथिली भाषाविज्ञानक शिखर पुरुष 98 वर्षक पं गोविन्द झा अत्यन्त दुखित मनेँ क्षोभ प्रगट कएलैन्हि जे जाहि भाषाक सेवामे जनम अवधि गवाँओल से भाषा (अर्थात् हिन्दी) स्वयं भाषा-क्षयक एवम् **English Imperialism**क प्रबल शिकार भ' चुकल अछि। पटनासँ काठमाण्डू लौटि अएला पश्चात् ज्ञात भेल जे ताही दिन गोविन्द झासँ हस्तगत भेल अनेकहु मूल्यवान पुस्तकमध्य *सात रेखा सात रंग* नामक पुस्तकमे सन्निहित 'भारतभारतीक खोजपुछारी' शीर्षकक आलेखमे चारि वर्ष पूर्वहि गोविन्द झा (2015: 54) एहि आशयक अपन निराशाजनक मन्तव्य व्यक्त कए चुकल छलाह — जे अपनेलोकनिक अवगतार्थ निचाँ उद्धृत अछि :

> ...जाहि हिन्दी कें हम आ हमर लाख-लाख बन्धु अपन माथक रस आ हाथक बल सँ पोसि-पालि कें समर्थ बनाओल से आइ हमर आँखिक समक्ष अङरेजीक सुनाम कि कुनाम मे तिल-तिल कए गलल जाए रहल अछि।

तैँ '*हिन्दवी*'सँ अवतरित '*हिन्दी*' भारत देशक राष्ट्रभाषा होइतहुँ एहि भाषाक जँ ई गति अछि तँ '*मिथिलाभाषा*'सँ नव अवतारमे प्रतिस्थापित होएबाक क्रममे रहल आ बिहार प्रदेशक सरकारी कामकाजक भाषा पर्यन्त नहि भ' सकल '*मैथिली*' भाषाक त' कथे कोन।

मैथिली भाषाक स्वतंत्र सत्ता ओ निजत्वमादे तथा हिन्दी ओ मैथिलीक विषम भाषिक पार्थक्यद' नभेम्बर 28, 1999क' प्रस्तुत Maharajadhiraja Kameshwar Singh Memorial Lecture अन्तर्गत वाचित अभिभाषणमे हम (Yadav 2000) सविस्तर विवेचन करैत आइसँ एक सय अड़तीस वर्ष पूर्वहि आधिकारिकताकसङ्ग प्रगट कएल गेल George Abraham Grierson महोदयक वैदुष्यपूर्ण सम्मतिदिसि विद्वज्जनक ध्यानाकर्षण कएल छल जे निचाँ उद्धृत कएल गेल अछि:

> The native language of every Bihārī...is as different from Hindī as French is from Italian...but it [Hindi] is not, never was, and never can be the vernacular of Bihār. History and the laws of philology alike decide against it, and experience has shown how Norman French never became the vernacular of England. (Grierson 1881a, 'Preface', v-vi)

आ तहिना मैथिलीक पृथक व्याकरणगत पद्धति ओ स्वतंत्र सत्तामादेँ हालहि गोविन्द झाकृत *वेद सँ लोक धरि* (2016b: 86) नामक कृशकाय परञ्च अति गम्भीर ग्रन्थमे हुनक कहब निम्नानुसार छैन्हि:

> क्रियापदक रूप भूत काल तीनू पुरुष, तीनू वचन आ लिङ्ग मे अङरेजी मे केवल एक होइछ — *वेन्ट*। हिन्दी मे चारि — *गया, गयी, गये* और *गयीं*। आ मैथिली मे? केवल मानक रूप बीस गोट।

एहि मादे एखन एतबहि। ओना जाइत-जाइत एतबाधरि कहि दी जे मैथिली भाषाक जटिल क्रियापदक ऐतिहासिक, समाजभाषावैज्ञानिक, ओ वस्तुगत वर्णन-विश्लेषण कार्यमे दीनबन्धु झा आ सुभद्र झासन उद्भट्ट विद्वानसभक गत भ' गेलाक पश्चातहु गोविन्द झा, रामावतार यादव, योगेन्द्र यादव प्रभृति अनुसन्धातालोकनि एहिमादेँ अद्यतन क्रियाशील छथिए।

तत्पश्चात्, पुनश्च जनकपुरक अनेकहु साकांक्ष प्रबुद्धजन फोनपर मैथिली ओ **मगही** भाषाक — जे एकगोट विकसित भाषा भए उत्तर भारतक झारखण्ड प्रदेशक सरकारी कामकाजक प्रमुख भाषा होइतहु प्रदेश 2मे कुल **31 हजार 049** व्यक्तिद्वारा मात्र बाजल जाइत अछि — निकट वा कहू जे विकट सम्बन्धद' हमरा अपन सुदृढ़ विचार प्रस्तुत करबाक आग्रह कएलैन्हि। हुनकालोकनिकेँ अनुगृहित करैत हम जनकपुर जाए एकगोट सम्मेलनमे जे बाजल ओ एकगोट स्थानीय F. M. Radio अन्तर्वार्तामे जे कहल तकर सार-सारांश एतए संक्षेपमे प्रस्तुत अछि। मूलभूत रूपेँ वा कहू जे सूत्रवत् दूगोट तथ्य दृष्टिपथपर आएल: **एक,** मगही दक्षिण बिहारक नवादा, गया, शेखपुर, नालन्दा, पटना, जहानाबाद, औरंगाबाद, जमुई आदि जिलाक सङ्गहि पश्चिम बंगाल क्षेत्र, ओ झारखण्डक त' प्रमुख सरकारी भाषा रूपेँ अनुमानत: 1 करोड़ 40 लाख जनसमुदायद्वारा बाजलजाएवाला एकगोट समृद्ध भाषा अछि — परञ्च प्रदेश नं 2मे बाजलजाएवाला तथाकथित मगही परस्पर भाषिक बोधगम्यता भेलासन्ताँ निस्सन्देह मैथिलीएक एकगोट औपभाषिक स्वरूप अछि: **दुइ,** किछु अति संकीर्ण वा कहू जे संकुचित विचारधारावाला मैथिली-भाषी जनद्वारा जातिगत अहंकार वा भ्रमवशात् अपना मैथिलीकेँ उच्चस्तरीय वा

मानक बूझि आन जनद्वारा बाजलजाएवाला मैथिलीकेँ अवस्तरीय/निम्नस्तरीय वा ठेँठ घोषित करबाक आम परिपाटीक कारणहि ताहि अपमानसँ विमुख होएबाक प्रयोजनेँ एवम् अपन निजत्वक रक्षार्थ किछु जन अपना भाषाकेँ मगही कहि सम्बोधित करबाकहेतु बाध्य पर्यन्त भ' रहल छथि। एहि कुसंस्कारक निवारण पश्चातहि मैथिलीक दुरवस्थामे सुधार आओत एवम् मैथिली भाषा पुन: सगौरव सुसंस्कृत होएत — से हमर विश्वस्त धारणा अछि।

ताहि हेतुएँ, हमरा मतेँ, मैथिलीकेँ ने हिन्दीक प्रकोपसँ आ ने त' मगहीक पार्थक्क्य-भावसँ पीड़ित होएबाक अवस्था विद्यमान अछि। मैथिली अपना घरहिमे दू फाँक अछि। एकरा समग्र होमहि पड़तैक। समस्त मैथिली-भाषी मैथिल बीच जन-जुड़ावक सङ्गहि गहन सहिष्णुता, असीम सौहार्द, घनीभूत सद्भाव, ओ हार्दिक सामञ्जस्यक प्रशस्त खगता अछि। तहिना, मैथिली-भाषीक दैनन्दिन जन-जीवनमे मैथिली भाषाक प्रयोगमे तीव्र ह्रास वा कहू जे प्रयोगशून्यताक जे विकराल अवस्थिति देखना जाइत अछि से एकगोट घोर सङ्कटक परिलक्षण अछि। एकटा आनहि परिवेशमे मुदा एहीसँ जुड़ल विषयद' आइसँ 27 वर्ष पूर्वहि नेपालक मैथिली-भाषीक निरीहता वा कहू जे दुरवस्था देखि हम (Yadav 1992: 198) कहल छल जे एकगोट मैथिली-भाषी युवा

> …makes love in Maithili, discusses politics and resents discrimination in Hindi, makes an application for a job in Nepali and does research on laser beam in English.

आब तँ लगैत अछि जे सम्भवत: ओ युवा अपन प्रेयसीसँ प्रेमालाप पर्यन्त अङरेजीएमे "Darling, I love you so" कहि करैत हेताह। शेष भगवाने जानथु।

३. उपसंहार

अन्तत:, दू मास पूर्वहि विराटनगर सम्मेलनक आयोजकलोकनि हमरा ब्राह्मणेतर-भाषिकाक विविध पक्षदिसि केन्द्रितभए अपन आलेख प्रस्तुत करबाक आग्रह कएलैन्हि। प्रयोजन ओलोकनि स्वयं बुझताह। अपनेलोकनिकेँ संभवत: ज्ञात होएत जे हम मैथिलीक भाषिक वैविध्य, विशेषत: ब्राह्मण-भाषिका ओ ब्राह्मणेतर-भाषिकाक रूपिमगत विलक्षणताद' सविस्तर 20 वर्ष पूर्वहि लिखि चुकल छी (देखू यादव 1998/1999)। आजुक कार्यक्रममे हम एहि विषयमादेँ आन विद्वज्जनक प्रस्तुति/सम्मति जानबाकहेतु उद्यत छी, आतुर छी। ताहि हेतुएँ एखन हम विद्यापतिकालीन साहित्य पश्चात् मानक ब्राह्मण-भाषिकाक क्रियापदमे कर्त्ता ओ कर्म कारक, काल, पुरुष ओ कक्ष, तथा क्रियामे पदसंगतिक सङ्गहि बहुलरूपेँ अकस्मात् आएल आदरार्थीसूचक अवयवसभक ऐतिहासिक तथा समाजभाषावैज्ञानिक

व्युत्पत्तिमादे संक्षेपमे अपनेलोकनिक ध्यानाकर्षण करए चाहब (ओना देखू गोविन्द झा 2016a) — जे विषय वर्तमानमे संसारभरिक आर्यभाषा-भाषावैज्ञानिकसभकलेल एकगोट शोधपूर्ण गवेषणाक विषय बनि गेल अछि। एहि मादे नभेम्बर 26, 2019क' कीर्तिपुर, काठमाण्डूमे आयोजित Linguistic Society of Nepalक 40म वार्षिक सम्मेलनमे प्रस्तुत Keynote भाषणमे हम जे अपन पूर्व-प्रकाशित अध्यर्थन/सिद्धान्त प्रगट कएल तकर उद्धरण अपनेलोकनिक अवगतार्थ निचाँ प्रस्तुत अछि:

> The question is: how is it that in works produced by kings and their priest-scholars in the Nepal Valley a codification of a complex verbal morphology occurred? The answer to the question may be had in the sociology of language use. During 16th to 18th centuries, Maithili was a court language, a language of royal communication, a language of prestige and high esteem, and at the same time it was a robust and potent means of literary expression in the Nepālamaṇḍala. Maithili was being used in the royal courts of the Malla kings of Nepal under highly formal and even formulaic circumstances by elites and courtiers of varying cadre and status. No wonder an element of highly codified form of deference and courtesy and honor was superimposed on the verbal bases in order to distinctly stratify the status of members of the royal court vis-à-vis other users/consumers of this language. Maithili was after all a language of kings and queens, of princes and princesses, of elites and courtiers, and of high priests and scholarly pundits. This perforce led to emergence of an immaculate form of language 'fit' to suit the royal purposes, while, at the same time, probably less dignified varieties, i.e. colloquial varieties of Maithili coexisted elsewhere in Nepal and India.
>
> (Yadav ed. 2011: 66-67)

चोट्टहि, ताहि सम्मेलनक एक आन सत्रमे, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्लीसँ आएल एकगोट बङ्गाली विद्वान भाषाशास्त्री मित्र, प्रो. डा. तन्मय भट्टाचार्य, अपन पत्र-वाचन कालमे नेपालमे कएल गेल हमर अनुसन्धानक निष्कर्षसँ निसृत अध्यर्थन वा सिद्धान्तक सन्दर्भ अनेकहु बेरि प्रस्तुत करैत तथा पूर्वमे बेर्लिन-न्यूयोर्कसँ प्रकाशित

हमर मैथिली व्याकरणसँ (Yadav 1996) अनेकहु दृष्टान्त-वाक्य उद्धृत करैत एकगोट आन संभाव्य तथ्यदिसि सेहो संकेत कएलैन्हि: ओ ई जे संभवत: उत्तर-पूर्वी भारतक मुण्डा परिवारक भाषा, यथा खड़िया ओ सन्थाली आदि भाषासँ भूतकालमे मैथिली भाषाक सम्पर्क ओ सान्निध्यक कारणेँ ई आदरार्थीकसङ्गहि आन-आन अवयवसभक आगमन भेल होअए। एहि मादेँ हम भारतीय मैथिली-भाषावैज्ञानिक विद्वानसभकेँ खोजपूर्ण गवेषणा करबाक आग्रह करबैन्हि। तत:पर गपसपक क्रमेँ इहो घमर्थन भेल जे युरोपिअन, विशेषत: जर्मन, आर्यभाषा-भाषावैज्ञानिकलोकनिक मतेँ मैथिलीक क्रियापदमे जटिल आदरार्थी आदि अवयवसभक आगमन संभवत: नेपालक तिब्बती-बर्मेली भाषा परिवारक, विशेषत: राई-किराती भाषासभक, सम्पर्क ओ सान्निध्यक कारणेँ भेल होअए। निष्कर्ष ई जे वर्तमानमे एहि सतरहम अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलनमे अपनेलोकनिक अभीप्सित इष्ट भलहि मैथिली भाषाक तथाकथित मानक अर्थात् ब्राह्मण-भाषिकाक जटिलता ओ ब्राह्मणेतर-भाषिकाक रूपिमगत विलक्षणतादिसि केन्द्रित होअओ, परञ्च विशुद्ध भाषावैज्ञानिकलोकनिक चिन्ताक/अनुसन्धानक मूल विषय थिक: विद्यापति काल पश्चात् एकाएक ब्राह्मण-भाषिकाक क्रियापदमे जुटल प्रचुर एवम् बहुल आदरार्थी ओ सार्वनामिक अवयवसभक ऐतिहासिक व्युत्पत्तिक समाजभाषावैज्ञानिक कारण/व्याख्या ओ तकर संभावित सम्पर्क-काल ओ आगमन-काल निर्धारण।

आगमन-काल निर्धारणसँ मोन पड़ैत अछि जे आइसँ 15 वर्ष पूर्वहि मैथिली भाषा-साहित्यक कुल 1100 वर्षक प्रकाशित/अप्रकाशित अभिलेखसभक सूक्ष्म गवेषणा पश्चात् हम ई निष्कर्ष निसृत करबामे समर्थ भेल छलहुँ जे आधुनिक मैथिलीक पूर्वकालिक क्रिया **-क'** (यथा *-उठिक'*, *-हँसिक'*, आदि) प्रथम बेरि मैथिलीक लिखित साहित्यमे विद्यापतिक अवहट्ठ अपभ्रंशमे लिखित कृति *कीर्त्तिलता*मे *-कहुँ* वा *-कहु* पूर्वरूपेँ ई. 1406मे प्रवेश कएलक — जँ रमानाथ झाक (Ramanath Jha 1972: 26) *कीर्त्तिलता*क रचना-कालनिर्धारण विश्वसनीय छैन्हि (देखू Yadav 2004, यादव 2005)।

आइ एतबहि। शेष सुधीजन बुझताह।

धन्यवाद।

सन्दर्भ सूची

झा, गोविन्द 2015 *सात रेखा सात रंग,* सरिसब-पाही-मधुबनी: साहित्यिकी।

झा, गोविन्द 2016a "मैथिली क्रियापद-रूपावलीक मूलान्वेषण," *मिथिला-भारती* (पटना) 3: 1-4, 109-112.

झा, गोविन्द 2016b *वेद सँ लोक धरि,* झंझारपुर-मधुबनी: ब्राह्मी प्रकाशन।

झा, दीनबन्धु 1946 *मिथिला-भाषा विद्योतन,* दड़िभङ्गा: मैथिली साहित्य परिषद।

झा, दीनबन्धु 1950 *मिथिलाभाषाकोष,* इसहपुर: दीनबन्धु झा।

झा, शशिनाथ (सं. 1981) *लोचनकृता रागतरङ्गिणी,* पटना: मैथिली अकादमी।

मुकुन्द झा 1924 *अमरमैथिलभाषाविवृति,* मधुबनी: मैथिली यन्त्रालय।

भाषा आयोग 2075 *प्रदेश तथा स्थानीय तहको भाषिक तथ्याङ्क, 2075*, काठमाडौं।

मिश्र, भव नाथ 1914 *मिथिला शब्द प्रकाश:,* काशी: श्री भूपालचन्द्र वन्दोपाध्याय।

यादव, रामावतार 1998 "मैथिलीक भाषिक वैविध्य: औपभाषिक ओ मानक स्वरूप," *सयपत्री* (नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान): 4, 34-50 ।
जिज्ञासा (राँटी, मधुबनी) 4: 6, 1999, पृ. 73-89मे सेहो प्रकाशित।

यादव, रामावतार 2005 "मैथिलीक पूर्वकालिक क्रिया: ऐतिहासिक-भाषावैज्ञानिक वर्णन-विश्लेषण," *आङन* (नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान): 1, 11-26।
यादव (2016), पृ. 109-139मे सेहो प्रकाशित।

यादव, रामावतार 2016 *मैथिली आलेख सञ्चयन (1989-2015)*, जनकपुरधाम: मैथिली विकास कोष।

यादव, रामावतार 2020 "कखनहु आठ-आठटा कहारवाला पालकीमे बैसल त' कखनहु हौदा-कसल हाथीपर सवार एकगोट फिरिङ्गी मैथिली-सेवक: संक्षिप्त जीवनवृत्त," *अनुप्रास* (मधुबनी, बिहार, भारत): 2: 2, 3-6।

Buchanan, Francis 1810 *Comparative Vocabularies* (of Maithili and 8 other Languages). MSS EU G 16, India Office Records, British Library, London.

Colebrooke, Henry Thomas 1801 'On the Sanscrit and Pracrit languages,' *Asiatick Researches:* 7, 199-231.

Colebrooke, Henry Thomas 1807 *APAC MSS IO/San.156-157*, Asian, Pacific and African Collections, British Library, London. MS

Fallon, S. W. 1879 *A New Hindustani-English Dictionary with Illustrations from Hindustani Literature and Folklore*, Banaras & London: E. J. Lazarus & Truebner.

Grierson, George Abraham 1881a *A Handbook to the Kaithi Character*, Calcutta: Thacker, Spink & Co.

Grierson, George Abraham 1881b *An Introduction to the Maithilī Language of North Bihar, Part I, 'Grammar'*, Calcutta: Asiatic Society of Bengal.

Jha, Hetukar (ed. 2007) *India: Some Crucial Questions*, Darbhanga: Maharajadhiraja Kameshwar Singh Memorial Lecture Series-2.

Jha, Ramanath 1972 *Vidyapati*, New Delhi: Sahitya Akademi.

Kværne, Per 1977 *An Anthology of Buddhist Tantric Songs: A Study of the Caryāgīti*, Oslo-Bergen-TromsØ: Der Norske Videnskaps-Akademi. [Re-published by Orchid Press in Bangkok, Thailand in 2010]

Sen, Nilratan 1973 *Early Eastern New Indo-Aryan Versification: A Prosodical Study of Caryāgītikoṣa*, Simla: Indian Institute of Advanced Study.
Sen, Nilratan (ed. 1977) *Caryāgītikoṣa: Facsimile Edition*, Simla: Indian Institute of Advanced Study.
Stump, Gregory T. & Ramawatar Yadav 1988 "Maithili Verb agreement and the Control Agreement Principle," In: *Chicago Linguistic Society Parasession on Agreement in Grammatical Theory* (USA) 24: 2, 304-321.
Yadav, Ramawatar 1992 "The use of the mother tongue in primary education: The Nepalese context," *Contributions to Nepalese Studies* 19: 2, 177-190.
Yadav, Ramawatar 1996 *A Reference Grammar of Maithili* (Trends in Linguistics: Documentation 11), Berlin & New York: Mouton de Gruyter. [An Indian edition was published by Munshiram Manoharlal in New Delhi In 1997]
Yadav, Ramawatar 2000 "Maithili linguistic research: State-of-the-art," *Contributions to Nepalese Studies* 27: 1, 71-87.
[Also published in Hetukar Jha (ed. 2007), pp. 179-200]
Yadav, Ramawatar 2003 "Maithili," In: Cardona, George & Dhanesh Jain (eds. 2003) *The Indo-Aryan Languages*, London & New York: Routledge, pp. 470-490.
[Also to be re-printed in Vibha Chauhan (ed. 2020) *The Languages of Bihar,* Delhi: Orient BlackSwan]
Yadav, Ramawatar 2004 "On diachronic origins of converbs in Maithili," *Contributions to Nepalese Studies*, Vol. 31: No. 2, pp. 215-241.
Yadav, Ramawatar (ed. 2011) *A Facsimile Edition of a Maithili Play: Bhūpatīndramalla's Parśurāmopākhyāna-nāṭaka*, Kathmandu: India-Nepal B. P. Koirala Foundation.
Yadav, Ramawatar 2017 ''A letter to pt. Govind Jha from Dr. Ramawatar Yadav on a[n] article published in *Mithilā-Bhāratī*, Vol. 3,'' *Mithilā-Bhāratī* (Patna) Vol. 4, No. 1-4, pp. 189-191.
Yadav, Ramawatar (ed. 2018) *Elegy Written in a Royal Courtyard: A Facsimile Edition of Jagatprakāśamalla's Gītapañcaka*, New Delhi: Adroit Publishers.
Yadav, Ramawatar (ed. 2021, **Forthcoming**) *Historiography of Maithili Lexicography & Francis Buchanan's* ***Comparative Vocabularies****: Facsimile Edition of the British Library, London Manuscript*, Darbhanga: Maharajadhiraja Kameshwar Singh Kalyani Foundation, Kameshwar Singh Bihar Heritage Series-23.

ब्रिटिश लाइब्रेरी, लन्दनक Asia, Pacific and African Collectionsमे अनुरक्षित ओ भारतविद्याशास्त्रज्ञ हेनरी टोमस कोलब्रुककृत *Comparative Vocabulary* शीर्षकक अद्यतन अपठित, अशोधित, एवम् अप्रकाशित हस्तलिखित पाण्डुलिपिमे उपलब्ध अमरसिंह-विरचित संस्कृतक प्रख्यात कोश-ग्रन्थ *अमरकोषः*क 370 शब्दक मैथिली पर्याय – विहङ्गम दृष्टि

1. पृष्ठभूमि

इतिहास साक्षी अछि: प्राचीन संस्कृत/प्राकृत ग्रन्थसबहुमे नव्य भारतीय-आर्यभाषा मैथिलीक लुप्तप्राय, अप्रयुक्त, एवम् दुर्लभ शब्दसभक उपलब्धताद' गहन गवेषणाकए मैथिली भाषाक प्राचीनता ओ भाषावैज्ञानिक ऐतिहासिकताक संस्थापनार्थ/प्रतिपादनार्थ कतेकहु मैथिली-भाषी ब्राह्मण संस्कृतज्ञ विद्वज्जन अदौ कालसँ भगीरथ प्रयत्न कए रहल छथि। ताहूमे जाहि कालसँ उमेश मिश्र पटना कौलेज, पटनामे 1938 ई.मे आयोजित मैथिली साहित्य परिषदक अपन अध्यक्षीय भाषणमे *वेदान्तसूत्र*क नवम् शताब्दीक *शंकरभाष्य*क वाचस्पति मिश्रकृत *भामती* टीकामे विशुद्ध मैथिलीक आधुनिक अर्थवाला एकगोट अति प्रचलित शब्द '*हड़ि*'[1] उपलब्ध होएबाक सन्दर्भक सगौरव घोषनाद कएलैन्हि (देखू: Subhadra Jhā 1958: 31-32) ताहि दिनसँ एहि विषयमादे अन्वेषण आओरो बेसी घनीभूत भेल-सन बुझना जाइत अछि। एहन प्रबुद्ध अन्वेषकलोकनिमे अति लब्धप्रतिष्ठ ओ अग्रगण्य छथि Subhadra Jha (1939-40), शशिनाथ झा (1984, 2009), तथा योगानन्द झा (1988)। प्रसङ्गवशात्, वरेण्य बङ्गाली विद्वान Sukumar Sen (1944) क उल्लेख सेहो अपरिहार्य बुझना जाइत अछि। परञ्च, ध्यातव्य जे उपर्युक्त विद्वानलोकनि प्राचीन/वैदिक संस्कृत एवम् प्राकृत ग्रन्थसभक लौकिक संस्कृत भाष्य/टीका वा कहू जे टीकाक टीकामे उपलब्ध मैथिली पर्यायी शब्दसभक मात्र चयन-सङ्कलन कएल अछि, मूल ग्रन्थपाठसँ नहि।

*अनुप्रास 5-6, 2022, पृ. 3-8मे प्रकाशित।

प्रस्तुत आलेखक अभीप्सित इष्ट अछि ईष्ट इण्डिया कम्पनीक एकगोट अत्युच्च फिरिङ्गी पदाधिकारी, पाश्चात्य भारतविद्याशास्त्र (Western Indology) विधाक संस्थापक-प्रख्यापक, एवम् प्रकाण्ड संस्कृतज्ञ Henry Thomas Colebrooke (1765-1837[2])क मैथिली शब्दकोशशास्त्रमे प्रदत्त अतुल्य अवदानद' संक्षेपमे चर्च करब। ज्ञातव्य जे कठोर साधना एवम् कष्टसाध्य परिश्रमकए हेनरी कोलब्रुक **प्रथमत:** अमरसिंह-विरचित संस्कृतक प्रख्यात कोश-कला ग्रन्थ *अमरकोष:*क 370 संस्कृत शब्दक **मिथिलाभाषा** (अर्थात् **मैथिली**) पर्यायक सङ्गहि भारतभरिक अन्यान्य कुल 12गोट स्थानीय/देशी भाषाक (Vernacular[3]) पर्यायवाची शब्दसभक तुलनात्मक शब्दसंग्रह *Comparative Vocabulary* (1807)क एकगोट सुगठित, सुपठनीय, एवम् विलक्षण हस्तलिखित पाण्डुलिपि देवनागरी लिपिमे तैयार कएने छलाह। ई भाषासभ अछि: मराठी, गुजराती, कन्नडा, तेलुगु, तामिल, कश्मीरी, पंजाबी, हिन्दी, नेपाली, **मिथिलाभाषा** (अर्थात् **मैथिली**), बङ्गाली, तथा ओड़िया। ज्ञातव्य जे ई पाण्डुलिपि अद्यतन अपठित, अशोधित, एवम् अप्रकाशित रूपैँ British Library, Londonक Asia, Pacific and African Collectionsमे अनुरक्षित अछि ओ संयोगवशात् एहि गौरवशाली कृतिक आधिकारिक डिजिटल प्रतिलिपि हमरालग सेहो अछि एवम् एहिमादे हमर अनुसन्धान गतिमान अछि (देखू: यादव 2020b, Yadav Forthcoming)।

ताही कालखण्डमे, अर्थात् उनैसम शताब्दीक पहिल दशकक उत्तरार्द्धमे, बेङ्गाल प्रसिडेन्सीक आन-आन जिलाक सङ्गहि मैथिली-भाषी क्षेत्र पूर्णिया जिला ओ भागलपुर जिलाक तथ्याङ्कगत सर्वेक्षण ('Statistical Survey') कएनिहार ईष्ट इण्डिया कम्पनीक एकगोट आओरो महती फिरिङ्गी मेडिकल अधिकृत Dr. Francis Buchanan MD (Circa 1810)क मैथिली शब्दकोशशास्त्रमे प्रदत्त पुरोगामी ओ मौलिक अवदानक विस्तृत विवेचनहेतु देखू हमर अनुसन्धानात्मक अवदान (यादव 2020a तथा Yadav ed. 2021)।

आ, तहिना, उनैसम शताब्दीक सातम दशकक उत्तरार्द्धमे प्रकाशित S. W. Fallon (1879)क हिन्दुस्तानी-अङरेजी शब्दकोशमे उपलब्ध **तिरहुती**क (अर्थात् **मैथिली**क) किछु हेराएल परञ्च अति मनोहारी शब्द/लोकोक्तिसभक रोचक वर्णन-विवेचनहेतु द्रष्टव्य अछि गोविन्द झाक (2010) वैदुष्यपूर्ण आलेख।

ओना आब एतबाधरि कहिए दी जे मिथिलाक्षरसँ संस्कृतमे अनुवाद करबामे परम प्रवीण ओ निष्णात संस्कृतज्ञ Henry Thomas Colebrooke पहिल एहन विद्वान छथि जे रोमन लिपिक अङरेजी भाषाक माध्यमेँ "On the Sanscrit and Prācrit languages" शीर्षकक एकगोट अति गम्भीर प्रकृतिक आलेख कलकत्ताक *Asiatick Researches* नामक प्रसिद्ध जर्नलमे प्रकाशित कए **प्रथमत:** मैथिली भाषाक उल्लेख **मैथिल** वा **तिरहुतीय** '*MAIT'HILA*, or *Tirhutīya*'कहि एकर विस्तृत सन्दर्भ पर्यन्त प्रस्तुत कएने छलाह:

MAIT'HILA, or *Tirhutīya*, is the language used in *Mithila*, that is, in the *Sircár* of *Tirhūt*, and in some adjoining districts, limited however by the rivers *Cusī* (*Causicī*) and *Gandhac* (*Ghandhacī*,) and by the mountains of *Nepál*; it has great affinity with *Bengálī*; and the character in which it is written differs little from that which is employed throughout Bengal. In *Tirhūt*, too, the learned write *Sanscrit* in the *Tirhutīya* character, and pronounce it after their own inelegant manner. (Colebrooke 1801: 225)

2. मैथिली-भाषी विद्वज्जन-सङ्कलित/प्रकाशित शब्दसूची: संक्षिप्त वर्णन-विश्लेषण

आब ई बात सार्वजनीन भ' गेल अछि जे दशम-एगारहम शताब्दीधरि अबैत-अबैत मैथिली भाषा अपन आद्यभाषा (*Ursprache*) केन्द्रीय मागधी प्राकृत वा कहू जे मागधी अपभ्रंशसँ पूर्णरूपेण विलगभए एकगोट स्वतंत्र भाषिका वा पूर्ण भाषारूपैँ विकसित/प्रष्फुटित भ' चुकल छल। एही भाषिक-ऐतिहासिकता सिद्ध करबाक प्रयोजनहेतु मैथिली भाषाविज्ञानक वरिष्ठ राजनयिक Subhadra Jha (1939-40) बड़ौदासँ प्रकाशित *Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute* नामक प्रसिद्ध जर्नलमे "Maithili equivalents to vernacular words found in Sarvanand's commentary on Amarakośa" शीर्षकक गम्भीर प्रकृतिक अनुसन्धानपरक आलेख प्रकाशित कए वन्द्यघाटीय सर्वानन्द-विरचित *अमरकोष:*क टीका *टीकासर्वस्व*मे (1159 CE) उपलब्ध कुल 300 मैथिली-पर्यायवाची शब्दसभक मनोयोगपूर्वक आकलन, सङ्कलन, ओ तकर विशद् वर्णन-विश्लेषण पर्यन्त प्रस्तुत कएलैन्हि। सुभद्र झाक प्रस्तुति निम्न शीर्षक अन्तर्गत कएल गेल अछि जे निचाँ उद्धृत अछि:

(i) Sarvānanda's Words
(ii) Early and Modern Maithili Equivalents
(iii) Sources of the Maithili Equivalents
(iv) Sanskrit Equivalents
(v) English Translation, and
(vi) Sarvānanda's *Kāṇḍa*, *Varga*, and *Śloka*. (p. 107)

वस्तुत:, पढ़लासँ इहो अभिज्ञात होइत अछि जे सुभद्र झाक आलेख हुनकहुसँ पूर्वक तीनिगोट बंगाली विद्वानसभक, यथा, बसन्त रंजन राय, जोगेश चन्द्र राय, तथा एन. पी. चक्रवर्तीक, बङ्गाली (ओ हिन्दी) भाषिक अवदानसभक संपूरक रूपैँ प्रस्तुत भेल अछि — एहि कारणेँ जे ओलोकनि अमैथिलीभाषी भेलासन्ताँ सम्भवत: सही मैथिली-पर्याय चयन/आकलन कार्यमे अक्षम-सन सिद्ध भेल छल होएताह (देखू Jha 1939-40: 106)।

ततःपर, चारि वर्ष पश्चात् Sukumar Sen (1944)सर्वानन्दक *टीकासर्वस्व*मे उपलब्ध बंगाली भाषाक सङ्गहि आनहु नव्य भारतीय-आर्यभाषासभक कुल 449 शब्दक बृहत सूची पूनासँ प्रकाशित भारत भाषाविज्ञान समाजक (Linguistic Society of India) प्रसिद्ध जर्नल *Indian Linguistics*मे प्रकाशित कएलैन्हि। देवनागरी लिपिक वर्णानुक्रम रूपेँ प्रस्तुत एहि शब्दसूचीमे बंगाली भाषाक अतिरिक्त प्राचीन एवम् मध्ययुगीन अपभ्रंश वा कहू जे मैथिलीक सिद्ध कविलोकनिकृत *चर्यापद*, चण्डेश्वरकृत *गृहस्थ-रत्नाकर*, ज्योतिरीश्वरकृत *वर्ण-रत्नाकर* आदि अपभ्रंश ग्रन्थरत्नसबहुसँ सेहो शब्द-चयन कएल गेल अछि — जाहिसँ नव्य भारतीय-आर्यभाषासभक ऐतिहासिक-तुलनात्मक-भाषावैज्ञानिक अध्ययन-अनुशीलन एवम् वर्णन-विश्लेषण कार्यमे प्रशस्त साहाय्य होएतैक। ध्यातव्य जे, संभवतः प्रजाति-केन्द्रिक भावसँ अभिभूतभए, पूर्वमे उल्लिखित तीनिगोट बंगाली विद्वानक अवदानप्रति प्रचुर आभारोक्ति व्यक्त करैतकाल सुकुमार सेन-सन सुप्रसिद्ध विद्वान सुभद्र झाक अप्रतिम अवदानक कतहु उल्लेखहु नहि कएल — जे हुनकसँ पाँच वर्ष पूर्वहि भारतक एकगोट प्रतिष्ठित जर्नलमे प्रकाशित भए प्रसिद्धि पर्यन्त प्राप्त कए चुकल छल।

सुकुमार सेनक चालीस वर्ष पश्चात्, शशिनाथ झा (1984) "अमरकोशक टीकामे उपलब्ध मैथिली शब्द" शीर्षकक पूर्ण-शोधित ओ अति वैदुष्यपूर्ण आलेख पटनासँ प्रकाशित एकगोट अप्रत्यायक ओ कृशकाय जर्नल *मैथिली अकादमी पत्रिका*मे प्रकाशित कए सर्वानन्दक *टीकासर्वस्व*मे उपलब्ध एवम् सत्तामीमांसात्मक क्षेत्रसबहुसँ (Ontological domains) सम्बद्ध 'वनौषधि', 'सिंहादि', 'मनुष्य', 'क्षत्रिय', 'वैश्य', 'शूद्र', आदि शीर्षक अन्तर्गत अनेकहु मैथिली शब्दसभक सूची अति मनोयोगपूर्वक प्रस्तुत कएलैन्हि। सङ्गहि ओ श्रीकरोपाध्यायकृत *व्याख्यामृत*, अच्युतोपाध्यायकृत *व्याख्याप्रदीप*, चतुर्भुज शर्माकृत *नामलिङ्गानुशासनवृत्ति*, मुकुन्द झाकृत *अमरमैथिलभाषाविवृति*, तथा चन्द्रधारी सिंहकृत *चन्द्रिका टीका* (1957) एवम् *नामलिङ्गानुशासनं नाम अमरकोषः* (2001)सन प्रसिद्ध मैथिल विद्वानलोकनिक बनाओल अमरकोशक बहुमूल्य टीकासभक गहन अध्ययन/गवेषणा सेहो कएलैन्हि। मैथिली भाषाविज्ञान ओ विशेषतः मैथिली शब्दकोशशास्त्रक उद्भव ओ विकासक इतिहासमे एहि आलेखक महत्त्व स्वतःसिद्ध अछि। ओना पढ़लासँ अभिज्ञात होइत अछि जे शशिनाथ झा सुभद्र झाक वैदुष्यपूर्ण कृतिसँ कि त' पूर्णतः अनभिज्ञ छथि आ कि हुनक सन्दर्भ देबाक काजदिसि अनिच्छुक/विमुख। पच्चीस वर्ष पश्चात् उपर्युक्त आलेखक परिमार्जित-परिशोधित पुनर्प्रकाशित प्रारूप शशिनाथ झा (2009)मे पर्यन्त Subhadra Jha (1939-40)क कतहु उल्लेख नहि कएल गेल अछि, तखन Sukumar Sen (1944) तथा योगानन्द झा (1988)क त' कथे कोन।

शशिनाथ झा (1984)क चारि वर्ष पश्चात, एगारहम-बारहम शताव्दीक प्रसिद्ध जैन वैयाकरण हेमचन्द्र सूरि (1089-1172)कृत प्राकृत व्याकरणक परिशिष्ट *देशीनाम-माला*मे उपलब्ध गोट 'शताधिक' मैथिली शब्दगुच्छ ओ मैथिली ऐतिहासिक-भाषाविज्ञानमे तकर महती योगदानद' योगानन्द झा (1988) "देशीनाममाला आ मैथिली"

शीर्षकक एकगोट अति तर्कपूर्ण ओ शोधपूर्ण आलेख पटनासँ प्रकाशित *भाखा* (आब प्रकाशनातीत) नामक जर्नलमे प्रकाशित कएलैन्हि। 'देशी' अर्थात् स्थानीय/प्रादेशिक शब्दसभक एहि गवेषणात्मक अध्ययनसँ मैथिली भाषा-साहित्यक उद्भव ओ विकास तथा मैथिली शब्दकोशशास्त्रक उत्पत्ति-विमर्शमे प्रशस्त संबल प्राप्त होएत से विश्वास कएल जा सकैत अछि। ओना योगानन्द झाक (1988) एहि गरिमामय कृतिअहुमे शशिनाथ झाक (1984) सङ्गहि अन्य पूर्ववर्ती अग्रज शोधकर्तालोकनिक, यथा Subhadra Jha (1939-40), Sukumar Sen (1944) आदि विद्वान-शोधकर्ताक, अप्रतिम अवदानक सन्दर्भोल्लेख पर्यन्त सर्वथा अप्राप्य अछि।

एम्हर आबि, राम चैतन्य धीरज (2013: 24-25) वैदिक संस्कृतमे लिखित ऋग्वेदमे नव्य भारतीय-आर्यभाषा मैथिलीक 50गोट शब्दक उपलब्धताक दावा करैत एकगोट अति विवादास्पद/कलहपूर्ण ओ अविश्वसनीय अध्यर्थन प्रस्तुत कएलैन्हि — ओना एहि कृतिमे पर्यन्त अग्रज अध्येता-अनुसंधातालोकनि, यथा, सुभद्र झा, सुकुमार सेन, शशिनाथ झा, ओ योगानन्द झाक अप्रतिम अवदानसभक कोनहु चर्च उपलब्ध नहि अछि। धीरज (2013)मे उदाहरणार्थ प्रस्तुत शब्दमध्य ऋग्वेदक किछु शब्द — जकर रूपिमगत भाष्य 'gloss' ओ अङ्गरेजी अनुवाद व्याख्यासहित निचाँ प्रस्तुत कएल गेल अछि —

काटब <kāṭ=a-ba> cut=LINK-FUT-1/2HON 'I/You (HON) will cut'
काटब <kāṭ=a-ba> cut=LINK-INF/GERUND 'The act of cutting'
सुनू <sun-ū > hear-IMP-2HON +1 'You (HON) listen to me'

स्पष्टतः काल, पुरुष, कक्ष, आदरार्थी आदि व्याकरणिक प्रत्ययसभसँ (affixes) अन्वित आधुनिक मैथिली भाषाक समापिका क्रियारूप-सन प्रतीत होइत अछि। धीरजक अध्यर्थनसँ आभासित होइत अछि जे कालान्तरमे बहुत पाछाँ जन्मल ओ केन्द्रीय मागधी प्राकृत/अपभ्रंशसँ निःसृत (देखू गंगानन्द सिंह 1950, गोविन्द झा 1968, Tsuyoshi Nara 1979, Tanmoy Bhattacharya 2016) मैथिली भाषाक व्याकरण — जाहि भाषाक नामहुक एकगोट रूप ओ तकर उच्चारण पर्यन्त अद्यतन स्थिर नहि भ' सकल अछि (देखू यादव 2020a, b) — अपन जन्महुसँ पूर्वक प्राचीन वैदिक छान्दस/संस्कृतमे लिखित ऋग्वेदक व्याकरणकेँ गम्भीर रूपेँ प्रभावित कएने अछि। जेना एतबा कहब मात्र प्रशस्त नहि होअए, 6 वर्ष पश्चात, पुनः राम चैतन्य धीरज (2019) बेहिचक इहो कहि गेलाह अछि जे प्राचीन वैदिक संस्कृत आ नव्य भारतीय-आर्यभाषा मैथिलीक जन्मकाल सँगहि अछि। स्पष्टतः एहन भ्रमपूर्ण, अपुष्ट, एवम् तथ्यहीन कथनसभक पुष्टिहेतु बहुतराश ऐतिहासिक-तुलनात्मक भाषाविज्ञान एवम् ध्वनि-परिवर्तनगत अध्ययन-अनुसन्धानक अपरिहार्यता अछि — से मैथिली भाषा-साहित्यक अनुसन्धित्सु सुधी पाठकजन बुझताह। अलमति विस्तरेण।

3. कोलब्रुक-सङ्कलित *तुलनात्मक शब्दसङ्ग्रह*: संक्षिप्त विवरण

3. 1. पाण्डुलिपि

जेना कि पूर्वमे कहल गेल छल, एहि मूल्यवान सुपठनीय एवम् सुगठित अक्षरसँ हस्तलिखित पाण्डुलिपिमे ईष्ट इण्डिया कम्पनी कालक भारत (आ नेपालक) कुल 12गोट नव्य आर्य ओ द्रविड़ भाषाक पर्यायवाची शब्दसभ समाविष्ट भेल अछि।

कोलब्रुक महोदयक हस्तलिखित पाण्डुलिपिक भाषिक, वर्तनीगत, शब्दगत, ओ शब्दकोशजन्य विशिष्टतासभक वर्णन-विश्लेषणहेतु द्रष्टब्य अछि हमर प्रकाशनोन्मुख आलेख Yadav (***Forthcoming***)। एहि ठाम ई समीचीन होएत जे एहि पाण्डुलिपिमादेँ ब्रिटिश लाइब्रेरी, लन्दनद्वारा हमरा प्रदत्त जानकारी समग्रत: पाठकक अवगतार्थ/सुविधार्थ निचाँ प्रस्तुत कएल जाए।

Number: **8W330478P**
Shelfmark: APAC: Mss IO San 156, 157
Title: *A Polyglot Vocabulary, Prepared for Colebrooke* (Italics added)
Author: H. T. Colebrooke

Vol. 1 महाराष्ट्रभाषा (अर्थात् मराठी), गुज्जरभाषा (अर्थात् गुजराती), कर्नाटकभाषा (अर्थात् कन्नडा), तैलंगभाषा (अर्थात् तेलुगु), द्रबिड़भाषा (अर्थात् तामिल)।

Vol. 2 काश्मीरभाषा (अर्थात् कश्मीरी),पंजाबअन्तरगतजालंधर-भाषा (अर्थात् पंजाबी), मध्यदेशभाषा (अर्थात् हिन्दी), पर्वतीभाषा (अर्थात् नेपाली), **मिथिलाभाषा** अर्थात् **मैथिली**), बंगलाभाषा (अर्थात् बंगाली/बांगला), उत्कलभाषा (अर्थात् उड़िया)।

Vol. 1 ओ Vol. 2क संकेत Pencilसँ देल गेल अछि।
स्पष्टत: Vol. 2क शब्दसङ्ग्रहमे कुल ७गोट नव्य आर्य भाषाकसङ्ग मैथिली भाषासेहो समाविष्ट भेल अछि।
अर्थात् Vol. 1 ओ Vol. 2मे मिलाकए समग्रमे आर्य भाषा परिवारक भाषाक संख्या कुल ९ तथा द्रबिड़ भाषा परिवारक भाषाक संख्या कुल 3 - 9 + 3 = 12गोट भाषा समाविष्ट अछि।

ध्यातब्य जे अन्यत्र कोलब्रुकसँ सम्बद्ध सन्दर्भ-साहित्यमे एहि हस्तलिखित पाण्डुलिपिक शीर्षक *Comparative Vocabulary* रूपैँ प्रस्तुत भेल अछि।

द्रष्टब्य इहो जे एहि शब्दसङ्ग्रहक मूल प्रविष्टिक भाषा **संस्कृत** ध्वनितात्त्विक रूपैँ शुद्ध आ कहु जे अतिशुद्ध देवनागरी वर्तनीमे अन्तिम वर्ण (grapheme)मे हलन्तक प्रयोग कए **संस्कृत्** रूपैँ प्रस्तुत भेल अछि।

एहि गौरवशाली कृतिक आरम्भ *श्रीगणेशायनम:* सँ होइत अछि। तहिना एकर अन्त *इतिअसुरतृतीयकाण्डअव्ययवर्ग:* सँ होइत अछि।

3. 2. मूल प्रविष्टि

ई बात आब सर्वविदित अछि जे एहि *शब्दसङ्ग्रहक* मूल प्रविष्टि *अमरकोष:*मे समाविष्ट संस्कृत भाषाक चयनित शब्दसभ अछि। एकर पहिल मूल प्रविष्टि अछि *स्वर्ग:* जकर मैथिली पर्याय *स्वर्ग* देल गेल अछि आ एकर अन्तिम मूल प्रविष्टि अछि *अर्वाक्* जकर मैथिली पर्याय अछि *दक्षिण दिशा १ दक्षिरा दिशा २*।

3. 3. वर्तनी

मूल प्रश्न अछि: केहन अछि त' मैथिली शब्दसंग्रहक एहि पुरानतम हस्तलिखित पाण्डुलिपिमे प्रयुक्त देवनागरी वर्तनीक स्वरूप? प्रथमहि दृष्टिमे ई निष्कर्ष नि:सृत होइत अछि जे उनैसम शताब्दीक प्रथम दशकहिमे मैथिलीकहेतु प्रयुक्त देवनागरी वर्तनी वर्तमानमे तथाकथित मानक मैथिलीमे प्रयुक्त वर्तनी सदृश परिपक्व, सुदृढ, ओ अद्वयार्थक रूपैँ स्थिर भ' गेल छल। जे परम संतोषक गप।

3. 4. मैथिली पर्यायवाची शब्दसभ

मैथिली पर्याय सङ्कलन विधिमादे पूर्ण सूचना अज्ञात अछि: अर्थात् ई विषय अद्यतन अनुसन्धानक विषय अछि। विज्ञप्तत: कोलब्रुक स्वयम् निष्णात संस्कृतज्ञ छलाह, तिरहुता लिपिसँ संस्कृतक नागरी लिपिमे लिप्यन्तरण कार्यमे परम प्रवीण छलाह, परञ्च ओ तिरहुत सरकारक कोन गामक कोन संस्कृतज्ञ मैथिली-भाषी पण्डित/ब्राह्मणकेँ अनुसन्धान सहायक/शब्द सङ्कलक रूपैँ नियुक्तकए *अमरकोष:*क मूल प्रविष्टिसभक मैथिली पर्यायवाची शब्दसूची निर्माण करबाक अभिभारा देलैन्हि से सूचना अद्यतन अज्ञात अछि।

ओना ईष्ट इण्डिया कम्पनी कालक पूर्वक हमर अनुसन्धान कार्य ई इंगित करैत अछि जे फ्रान्सिस ब्युकाननहिजकाँ हेनरी टोमस कोलब्रुक सेहो James Mackintosh (1806)क 'Plan of a Comparative Vocabulary' शीर्षकक कार्यपत्रकेँ प्रतिमान मानि तकरहि साहाय्यसँ ई गरिमामय शब्दसूची तैयार कएने होएताह: उक्त कार्यपत्रक विस्तृत विवरणहेतु देखू Yadav (ed. 2021: 36)।

निचाँ पाठकगणक अवलोकनार्थ/अवगतार्थ कोलब्रुकक गौरवशाली कृतिक हस्तलिखित पाण्डुलिपिसँ प्रतिदर्श **स्वरूप** आदि ओ अन्तिम पृष्ठक स्क्यान-प्रतिकृति प्रस्तुत अछि।

4. उपसंहार

निष्कर्षवत् ई कहल जा सकैत अछि जे विश्वभरिमे अद्यतन उपलब्ध प्रकाशित/अप्रकाशित अभिलेखीय सामग्रीसभक सूक्ष्म गवेषणासँ ई ज्ञान नि:सृत होइत अछि जे **वरेण्य शब्द-सन्धानी हेनरी टोमस कोलब्रुक मैथिली शब्दकोशशास्त्रक पहिल अध्येता/अनुसन्धाता एवम् पहिल शब्दसंग्रहकर्ता छलाह।** कनेक आओरो बेकछाक' कही त' ई जे मैथिलीभाषी संस्कृतज्ञ भवनाथ मिश्रहुक (1914) बहुमूल्य अवदानसँ 107 वर्ष पूर्वहि एवम् महान फिरिङ्गीद्वय A. F. R. Hoernle & George A. Grierson (1885,

1889)क मैथिलीक पहिल प्रकाशित (परञ्च अपूर्ण) शब्दकोशसँ 80 वर्ष पूर्वहि, आ तहिना अपन समकालीन फिरिङ्गी Francis Buchanan (1810)क मौलिक कृतिअहुसँ 3 वर्ष पूर्वहि 1807 ई.मे निर्मित अपन पुरोगामी एवम् अप्रतिम अवदानकहेतु हेनरी **टोमस कोलब्रुक एहि तुलनात्मक शब्दसंग्रहकलेल मैथिली शब्दकोश-निर्माण जगतमे सदैव स्मरणीय रहताह, स्तुत्य रहताह, अतुल्य रहताह, अमर रहताह।**

अन्त्यटिप्पणी

1. harī 'a circular wooden box used for stopping a madman or a thief from running away' Subhadra Jhā (1958: 32)
   हड़ि (प्रा.) — [सं.] 'काठक बेड़ी' गोविन्द झा (1993: 360)
   हड़ी 'काठक बेड़ी जे बताह/अपराधीक पाएरमे लगाओल जाइत अछि।
   wooden log-fetter' Govind Jha (1999: 666)
   हड़ि — सं., 'काठक बनल बेड़ी' मतिनाथ मिश्र 'मतंग' (1998: 437)

2. Henry Thomas Colebrookeक बृहत् जीवनवृत्तद' देखू Rocher and Rocher (2012)।

3. ईष्ट इण्डिया कम्पनी कालक प्रसिद्ध भारतविद्याशास्त्रज्ञलोकनिक (Orientalists/Indologists) देववाणी संस्कृतप्रतिक तीव्र व्यामोहक अछैतो कतेकहु नवतुरक परञ्च तीक्षण बुद्धिवाला शोधार्थीलोकनि ("Young Turks") भारतक देशी/स्थानीय भाषासभक (Vernacular languages) अध्ययन-अनुशीलन ओ वर्णन-विश्लेषण कार्यमे दत्तचित्तभए प्रवृत्त भेल छलाह — जकरा Sheldon Pollock "Vernacular Millennium" कहि अपन मूल्यवान कृतिमे वर्णित-विश्लेषित कएने छथि। एहि "Vernacular Millennium" विषयक विशद् विवेचनहेतु देखू Sheldon Pollock (2006)।

पुष्पिका

हेनरी टोमस कोलब्रुककृत हस्तलिखित पाण्डुलिपिक आधिकारिक फोटोकौपी ब्रिटिश लाइब्रेरी, लन्दनक सौजन्यसँ लेखककेँ तखन प्राप्त भेलैन्हि जखन ओ ई. 2018मे आलेक्साण्डर-फौन-हुम्बोल्ट फाउण्डेशनक सीनियर भिजिटिङ्ग रिसर्च फेलो रूपैँ क्रिष्टिआन-आलब्रेख्ट्स विश्वविद्यालय, कील, जर्मनीमे फ्रान्सिस ब्युकाननक *तुलनात्मक शब्दसङ्ग्रहक* हस्तलिखित पाण्डुलिपि एवम् मैथिली शब्दकोशशास्त्रक उत्पत्ति, विकास, ओ इतिहासमादेँ अनुसन्धानरत छलाह। आलेक्साण्डर-फौन-हुम्बोल्ट फाउण्डेशन, बौन, जर्मनी; ब्रिटिश लाइब्रेरी, लन्दन; ओ जर्मनीक कील विश्वविद्यालयक भाषाविज्ञान-ध्वनिविज्ञान विभागक विभागाध्यक्ष प्रो. डा. जौन माइकेल पीटर्सनप्रति लेखक हार्दिक आभार व्यक्त करैत छथि।

सन्दर्भ सूची

झा, गोविन्द 1968 *मैथिलीक उद्गम ओ विकास*, कलकत्ता: मैथिली प्रकाशन समिति।

झा, गोविन्द (संयोजक/सम्पादक 1993) *मैथिली शब्दकोश द्वितीय खण्ड*, पटना: मैथिली अकादमी।

झा, गोविन्द 2010 "अन्हारमें ठाढ़ एकटा यूरोपिअन मैथिली भक्त," **मे:** गोविन्द झा (2010) *अनुचिन्तन*, पटना: नवारम्भ, 7-11।

झा, मुकुन्द 1924 *अमरमैथिलभाषाविवृति [अमरसिंहकृत नामलिङ्गानुशासनं नाम अमरकोषःक* मैथिली टीका/अनुवाद], मधुबनी: मैथिली यन्त्रालय।

झा, योगानन्द 1988 "*देशीनाममाला* आ मैथिली," *भाखा* 2: 10, 48-52।

झा, शशिनाथ 1984 "*अमरकोशक* टीकामे उपलब्ध मैथिली शब्द," *मैथिली अकादमी पत्रिका* 4: 3, 66-84।

झा, शशिनाथ 2009 *निबन्धमन्दारमञ्जरी*, दीप-मधुबनी: तीर्थनाथ पुस्तकालय।

झा, शशिनाथ (सम्पादक 2010) *अमर सिंह-विरचितः अमरकोषः [मैथिलीविवृति सहित हिन्दीशब्दार्थयुक्त शब्दसूचि संवलितः, विवृतिकारः वैयाकरण पं. मुकुन्द झा]*, दरभङ्गा: मिथिला संस्कृत शोधसंस्थानम्।

धीरज, राम चैतन्य 2013 *भाषा विचार आ मैथिलीक प्राचीन साहित्य*, पटना: शेखर प्रकाशन।

धीरज, राम चैतन्य 2019 *मैथिली भाषाक वैचारिक अस्मिता*, पटना: नवारम्भ।

मिश्र, भव नाथ 1914 *मिथिला शब्द प्रकाशः*, काशी: श्री भूपालचन्द्र वन्दोपाध्याय।

मिश्र 'मतंग', मतिनाथ 1998 *मैथिली शब्द कल्पद्रुम*, जमुथरि-झंझारपुर-मधुबनी: मिश्र बन्धु प्रकाशन।

यादव, रामावतार 2019 "मैथिली भाषा-साहित्यक संरक्षण: चुनौती आ निदान," *आँजुर 25*: 88, 3-11।

यादव, रामावतार 2020a "कखनहु आठ–आठटा कहारवाला पालकीमे बैसल त' कखनहु हौदा-कसल हाथीपर सवार एकगोट फिरिङ्गी मैथिली-सेवक: संक्षिप्त जीवनवृत्त," *अनुप्रास* 2: 2, 3-6।

यादव, रामावतार 2020b "हेनरी टोमस कोलब्रुककृत *Comparative Vocabulary* (1807 CE)शीर्षकक हस्तलिखित पाण्डुलिपिमे उपलब्ध *अमरकोषःक* 370 शब्दक मैथिली पर्याय: संक्षिप्त परिचय," *घर-बाहर* 20: 73, 14-15।

यादव, रामावतार 2021 "मैथिलीक वर्तमान अवस्थितिद' संक्षिप्त टिप्पणी," *अनुप्रास* 2: 3-4, 3-8।

सिंह, गंगानन्द 1950 "अखिल भारतीय प्राच्यविद्यासम्मेलनक चौदहम अधिवेशनक मैथिली शाखाक अध्यक्ष कुमार गंगानन्द सिंहक अभिभाषण 1950," **मे:** देवेन्द्र झा (सङ्कलयिता, 1983) *भाषणत्रयी*, पटना: मैथिली अकादमी, पृष्ठ 37-73।

सिंह, चन्द्रधारी 1957 *अमरसिंहचन्द्रिका*, मधुबनी: राँटी ड्योढ़ी।

सिंह, चन्द्रधारी 2001 *नामलिङ्गानुशासनं नाम अमरकोषः [श्री चन्द्रधारीसिंहशर्मणा विरचितया चन्द्रिकाख्यव्याख्यया समलंकृतः]*, आमुखलेखक: काशीनाथ मिश्रः, कामेश्वरनगरम्, दरभङ्गा: कामेश्वर सिंह दरभङ्गा संस्कृत विश्वविद्यालयः।

Bhattacharya, Tanmoy 2016 "Inner/outer politeness in Central MagadhanPrākrit languages: Agree as labeling," *Linguistic Analysis* 40: 3-4, 297-336.

Buchanan, Francis C. 1810 *Comparative Vocabularies*, MSS EUR G 16, India Office Records, British Library, London.

Colebrooke, Henry Thomas 1801 "On the Sanscrit and Prācrit languages," *Asiatick Researches*: 7, 199-231.

Colebrooke, Henry Thomas 1807 *APAC MSS IO/San.* 156-157, Asian, Pacific and African Collections, British Library, London.

Cowell, Edward Byles (ed. 1873) *Miscellaneous Essays By H. T. Colebrooke, Vol. II*, London: Truebner & Co., 57 and 59, Ludgate Hill.

Fallon, S. W. 1879 A *New Hindustani-English Dictionary with Illustrations from Hindustani Literature and Folklore*, Banaras & London: E. J. Lazarus & Trübner. [Second Edition 1884 Bharati Bhandar, Allahabad]

Hoernle, A. F. R. & George A. Grierson 1885 *A Comparative Dictionary of the Bihārī Language, Part 1*, Calcutta: Bengal Secretariat Press.

Hoernle, A. F. R. & George A. Grierson 1889 *A Comparative Dictionary of the Bihārī Language, Part 2*, Calcutta: Bengal Secretariat Press.

Jha, Govind (ed. 1999) *Kalyani Kosh A Maithili-English Dictionary*, Darbhanga: Maharajadhiraja Kameshwar Singh Kalyani Foundation, Kameshwar Singh Bihar Heritage Series-4.

Jha, Subhadra 1939-40 "Maithili equivalents to vernacular words found in Sarvanand's commentary on *Amarakośa*," *Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute* 21: 1-2, 106-114.

Jhā, Subhadra 1958 *The Formation of the Maithilī Language*, London: Luzac.

Mackintosh, James 1806 *Plan of a Comparative Vocabulary of Indian Languaes*, Bombay: Damotharjee.

Nara, Tsuyoshi 1979 *Avahaṭṭha and Comparative Vocabulary of New Indo-Aryan Languages*, Tokyo: Institute for the Study of Languages and Cultures of Asia and Africa.

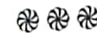
Pollock, Sheldon 2006 *The Language of the Gods in the World of Men: Sanskrit, Culture, and Power in Premodern India*, Berkeley, Los Angeles: University of California Press.

Rocher, Rosane and Ludo Rocher 2012 *The Making of Western Indology: Henry Thomas Colebrooke and the East India Company*, London and New York: Routledge.

Sen, Sukumar 1944 "New Indo-Aryan vocables in Sarvānanda's *Ṭīkāsarvasva*," *Indian Linguistics*: 8: 4, 184-209. [Reprint Edition, 1965, pp. 554-572]

Yadav, Ramawatar (ed. 2021) *Historiography of Maithili Lexicography & Francis Buchanan's Comparative Vocabularies: Facsimile Edition of the British Library, London Manuscript*, Darbhanga (Bihar, India): Maharajadhiraja Kameshwar Singh Kalyani Foundation, Kameshwar Singh Bihar Heritage Series-23.

Yadav, Ramawatar **Forthcoming** "Toward a historiography of lexicogenesis in Maithili - With special reference to the hitherto unstudied and unpublished hand-written British Library, London MS. of Henry Thomas Colebrooke's *Comparative Vocabulary* (1807 CE)."





अनुप्रास प्रकाशन

मधुबनी, मिथिला (बिहार) 847 211

+91 94305 83847

anuprasprakashan@gmail.com

मैथिली आलेख सञ्चयन

₹ 500/-



9 789391 371173

www.anuprasprakashan.com



